"भूगोल"

का

अफ़ग़ानिस्तान-अंक

सम्पादक

रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

"भूगोल"-कार्यालय, प्रयाग

वार्षिक मूल्य ३) इस प्रति का १)

Yearly Subscription :

Indian Rs. 3 [*Re. 1*

Foreign Rs. 5 *For this copy only*

अफ़ग़ानिस्तान

(क्षेत्रफल—२४५,००० वर्ग मील, जन संख्या—६० लाख)

अफ़ग़ानिस्तान उत्तर में रूसी तुर्किस्तान, पश्चिम में फ़ारस, पूर्व और दक्षिण में काशमीर, सीमा-प्रान्त और बलोचिस्तान से घिरा हुआ है। हरीरूद नदी के किनारे अफ़ग़ानिस्तान की उत्तरी सीमा कृत्रिम है। यह सीमा जुलफ़िकार नगर से आरम्भ होती है और कुश्क पास्ट, मारू चाक (मुरग़ाब नदी के पास) होती हुई ख़ामियाब नगर के पास आक्सस या आमू दरिया को छूती है। यहाँ से आगे विक्टोरिया झील तक आमू दरिया की प्रधान धारा ही उत्तरी अफ़ग़ानिस्तान की सीमा बनाती है। इसके आगे पामीर प्रदेश में अफ़ग़ानी सीमा चीनी सीमा से मिलती है। सारीकोल हिमागार (ग्लेशियर) से अफ़ग़ानी सीमा फिर पश्चिम की ओर मुड़ती है। हिन्दू कुश के इस प्रदेश में अफ़ग़ानिस्तान की चौड़ाई प्रायः १० ही मील है। इस प्रकार अफ़ग़ानिस्तान के आयताकार प्रदेश में यह भाग चोंच के समान निकला हुआ है। इस भाग में बर्फ़ीले दर्रों की ऊंचाई १६००० फुट है। चोटियां प्रायः २४००० फुट ऊँची हैं। पूर्वी सीमा और भी कठिन है और काश्मीर से लगी हुई कई छोटी छोटी रियासतों को छूती है। इसके आगे सीमा प्रान्त आजाता है। अन्त में बलो-चिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान एक दूसरे की सीमा बनाते हैं। नुश्की के आगे सीमा प्रायः ठीक पश्चिम की ओर हलमन्द रेगिस्तान को पार करके फ़ारस से मिल जाती है। फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान की सीमा हलमन्द के मुहाने से शुरू होती है और उत्तर की ओर२ हश्तदान होती हुई जुलफ़िकार से मिल जाती है।

अफ़ग़ानिस्तान चार बड़े बड़े सूबों में बंटा है। उत्तरी अफ़ग़ानिस्तान या काबुल प्रान्त सर्व प्रधान है। दक्षिणी अफ़ग़ानिस्तान या क़न्धार कुछ कम ऊंचा है। यह दुर्रानी लोगों का अड्डा है। हिरात में अधिकतर फ़ारसी और अफ़ग़ानी तुर्किस्तान में उज़बेग लोग बसे हुए हैं। ये दोनों प्रान्त अफ़ग़ानिस्तान के राजा से कोई विशेष सहानुभूति नहीं रखते हैं। इनके अतिरिक्त ग़िलज़ई, हज़ारा, ग़ज़नी, जलालाबाद और काफ़िरिस्तान के प्रदेश भी अफ़ग़ानिस्तान में ही शामिल हैं। अफ़ग़ानिस्तान अधिकतर पहाड़ी और रेगिस्तानी देश है। पर यहाँ ऐसे प्रदेशों की भी कमी नहीं है जो सिंचाई हो जाने के कारण बड़े उपजाऊ हैं। अफ़ग़ानी लोग सिंचाई में बड़ी चतुरता दिखलाते हैं।

प्राकृतिक विभाग

अफ़ग़ानिस्तान का विशाल पर्वत हिन्दूकुश है। काबुल के उत्तर-पश्चिम में यह कोहबाबा के नाम से प्रसिद्ध है। अधिक पश्चिम में यह बहुत कम ऊँचा रह गया है। हरीरूद नदी के पश्चिम में पेरोपेमिसस पर्वत इसी की शाखा है। हरीरूद, हलमन्द, कुन्दूज़ और काबुल नदियों के निकास के निकट कोहबाबा प्रायः १७००० फुट ऊँचा है। दक्षिण-पश्चिम में प्रायः ११००० फुट ऊँची एक पर्वत-श्रेणी हरीरूद घाटी को फरा नदी की घाटी से अलग करती है। क़न्धार के पास केवल छोटी छोटी पहाड़ियाँ रह गई हैं। उत्तर-पूर्व में तुर्किस्तान के पहाड़ हैं। सफ़ेद कोह जलालाबाद की घाटी को कुर्रम घाटी से अलग करता है। सफ़ेद कोह की सब से ऊँची चोटी (सीताराम) १५००० फुट ऊँची है।

इस चोटी के पश्चिम की ओर पहाड़ नीचा होता गया है। काबुल के पास इसी की एक पहाड़ी ग़ज़नी के मार्ग में बाधा डालती है। दक्षिण में शुतुरगर्दन दर्रे के पास की एक शाखा कुर्रम घाटी को लोगार घाटी

से अलग करती है। इसका सम्बन्ध उस बड़े जलविभाजक से भी है जो सिन्ध के जल-प्रवाह को हलमन्द के जल-प्रवाह से अलग करता है।

खनिज—अफ़ग़ानिस्तान में खनिज पदार्थों का प्रायः अभाव है। लग़मान और आस पास के ज़िले में नदियों के रेत को साफ़ करके सोना अलग कर लिया जाता है। पहले हिन्दूकुश में पंजशोर की घाटी से चाँदी निकाली जाती थी। ऊपरी कुर्रम और गोमल के बीच में फ़रमूली ज़िले से काबुल को लोहा मिलता है। बामियान दर्रे के पास भी लोहा बहुत है। तांबा अफ़ग़ानिस्तान के बहुत से स्थानों में देखा गया है पर निकाला कहीं से नहीं जाता है। सीसा और सुरमा ग़ज़नी के उत्तर-पश्चिम अरग़न्दाब और काबुल के उत्तर गोरबन्द घाटी में मिलता है। आजकल हज़ारा प्रदेश से बहुत सा सीसा आता है। वहाँ यह धरा-तल पर ही मिल जाता है। गोरबन्द के पास फिरंगल में भी सीसे की एक पुरानी खान है। कन्धार से ३० मील उत्तर शाह मकसूद में सुरमा बहुत मिलता है। हिरात के पास थोड़ी थोड़ी गन्धक ज़मीन से खोदी जाती है। पर हज़ारा और सीस्तान से अधिकतर गन्धक मिलती है। सीस्तान के पास ज्वालामुखी पर्वत के चिन्ह मिले हैं। ऊपरी कुर्रम और गोमल के बीच में जुरमत और ग़ज़नी के पास मामूली कोयला मिलता है। अफ़ग़ानिस्तान के दक्षिण-पश्चिम की धरती में शोरा बहुत है।

———

जल-वायु

अफ़ग़ानिस्तान में जल-वायु कई प्रकार की है। उच्च भागों का औसत तापक्रम निचले हिमालय के तापक्रम से अधिक भिन्न नहीं है। अफ़ग़ानिस्तान में तापक्रम भेद बहुत ही अधिक हो जाता है। शीत-काल में दैनिक तापक्रम बहुत ही कम हो जाता है। कभी कभी शीत की लहर कई दिन तक चलती है। उस समय तापक्रम १२ अंश फ़ारेन हाइट तक देखा गया है। ऐसे समय में परम तापक्रम भी १७ अंश से अधिक ऊपर नहीं उठता है। गरमी की ऋतु में अफ़ग़ानिस्तान के बहुत से भाग आग की भट्टी बन जाते हैं। आमू (आक्सस) नदी के प्रदेश में गरमी के दिनों में छाँह का तापक्रम ११० से १२० अंश तक रहता है। काबुल और दूसरे उत्तरी भागों में गंडुमक तक ठंड बड़ी विकराल होती है। काबुल में दो तीन महीनों तक बरफ़ पड़ी रहती है। लोग बहुत ही कम घरों से बाहर निकलते हैं और अंगीठियों के पास सोते हैं। ग़ज़नी में होली तक बरफ़ रहती है। तापक्रम १० या १५ अंश हो जाता है। यहाँ के लोगों का कहना है कि पुराने ज़माने में दो तीन बार सारी आबादी बरफ़ीली आँधियों में नष्ट हो गई। जलालाबाद की सरदी और साधारण जलवायु हिन्दुस्तान से मिलती है। यों तो अफ़ग़ानिस्तान में सभी जगह ग्रीष्म में विकराल गरमी पड़ती है पर निचली हलमन्द और सीस्तान में विशेष रूप से अधिक गरमी पड़ती है। समस्त कन्धार प्रान्त में गरमी ख़ूब होती है और लू (सिमून) भी चला करती है। यहाँ की धूल भरी हुई गरम आँधियाँ बड़ी भयानक होती हैं। काबुल में धूप तो बहुत तेज़ पड़ती है पर कभी कभी हिन्दुकुश

की ओर से आने वाली शीतल हवाएँ इस गरमी को मन्द कर देती हैं। रात में प्रायः सदा ठंडक रहती है। कन्धार के निचले मैदान में बरफ़ शायद ही पड़ती है। जब बरफ़ गिरती भी है तो गिरते ही पिघल जाती है। हिरात का तापक्रम कन्धार से भी कम रहता है। जलवायु प्रायः अच्छी है। मई से सितम्बर तक उत्तर-पश्चिम से तेज़ हवाएँ चलती हैं। शीतकाल की ठंड मध्यम होती है और बरफ़ गिरते ही पिघल जाती है। हिरात के पहाड़ों पर भी अरसे तक बरफ नहीं ठहरती है। पर हर चौथे साल बरफ़ जमा होकर काफ़ी कड़ी हो जाती है। कहा जाता है कि फ़ारस से लौटते समय एक ही रात में यहाँ १७४० ई० में अहमदशाह के १८००० सिपाही ठण्ड से मर गर गये। हरीरूद नदी का पूर्वी भाग बरफ़ से जम कर ठोस हो जाता है। तब लोग इस पर ऐसी आज़ादी से चलते हैं मानों वे पक्की सड़क पर चल रहे हों। जब हिन्दुस्तान में दक्षिणी पश्चिमी मानसून चलती है तब वह काबुल घाटी में भी लग़मान तक पहुँचती है। हिन्दूकुश के नीचे, बाजौर और सफ़ेद कोह के पूर्वी भाग में इसका अधिक ज़ोर होता है। इस ऋतु में कुर्रम के निकास के निकट भी कुछ वर्षा हो जाती है। अफ़ग़ानिस्तान के शेष भागों में ग्रीष्म ऋतु की वर्षा का अभाव रहता है। शीतकाल में काफ़ी पानी बरस जाता है। लेकिन जहाँ कहीं बसन्त ऋतु में वर्षा होती है वह वर्षा खेती के लिये बड़ी लाभदायक होती है। पर अफ़ग़ानिस्तान वास्तव में एक ख़ुश्क प्रदेश है। सालभर में ६ महीने आकाश निर्मल रहता है। यहाँ की रातें दिन से भी अधिक साफ़ रहती है। पर दिन और रात के तापक्रम में तथा सरदी और गरमी के तापक्रम में भारी अन्तर रहता है। बाबर ने एक बार कहा था कि "अगर काबुल से एक तरफ़ एक मंज़िल सफ़र करो तो ऐसी जगह मिलती है जहाँ बरफ़ कभी नहीं पड़ती है। लेकिन अगर दूसरी तरफ़ चौथाई मंज़िल चलो तो ऐसी जगह मिलेगी जहाँ बरफ़ शायद कभी नहीं पिघलती है।"

ऐसी जलवायु होने पर भी यहाँ बीमारी का अभाव नहीं है। बुख़ार और बदहज़मी यहाँ की आम बीमारियाँ हैं। गरमियों में खुली छत पर सोने से लोगों को गठिया की भी बड़ी शिकायत रहती है।

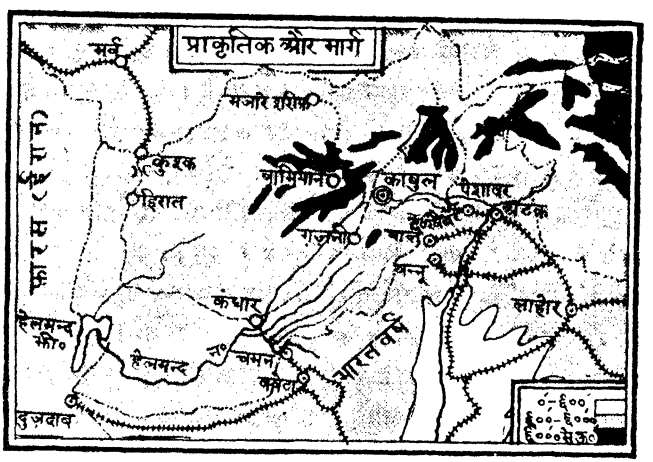

वनस्पति

अफ़ग़ानिस्तान की घाटियाँ अत्यन्त उपजाऊ हैं। इनकी ज़मीन खेती के लिये बड़ी अच्छी है। गाजर, मूली, लहसन, प्याज, और गोभी आदि तरकारियाँ खूब होती हैं। पूर्वी ज़िलों में अदरख, हल्दी और ईख भी बहुत होती है। अंडी का पौधा सब कहीं सर्वसाधारण है। तम्बाकू भी बहुत उगाई जाती है।

हिन्दुस्तान की तरह अफ़ग़ानिस्तान में दो फ़सलें होती हैं। वहा- एक (या बसन्त ऋतु की फसल जो अपने यहाँ की रबी फसल से मिलती है) सरदी के आरम्भ में बोई जाती है और गरमियों में काटी जाती है। इस फ़सल में गेहूँ, जौ चना और तरह तरह की दालें उगाई जाती हैं।

दूसरी फ़सल में लोग चावल, मकई, बाजरा और तम्बाकू आदि पदार्थ उगाते हैं। अधिक ऊँचाई के प्रदेशों में केवल एक ही फ़सल होती है।

तरबूज़, ख़रबूज़ा और ककड़ी की उपज भी बहुत है। शहरों में इन की बड़ी बिक्री होती है। ईख उपजाऊ मैदानों में ही उगाई जाती है। गरम भागों में कपास भी उगाते हैं। पर बहुत सा सूती कपड़ा यहाँ बाहर से ही आता है।

फल—अफ़ग़ानिस्तान के फल बहुत मशहूर हैं। यहाँ के लोग फल खूब उगाते हैं। ताज़े फलों की देश में ही बड़ी खपत है। सूखे हुए फल कुछ अफ़ग़ानिस्तान में ख़र्च होते हैं। बहुत से सूखे फल बाहर

भी भेजे जाते हैं। काबुल की घाटियों में शहतूत के फलों को सुखा कर और खाल में भर कर लोग सरदी के दिनों के लिये रख लेते हैं। शहतूत की इन टिकियों को कूट कर मैदा बना लेत हैं जिससे रोटी बनती है। कई घाटियों में लोगों का यही प्रधान भोजन है। सेब, नाशपाती, अंगूर, बादाम, अखरोट, पिश्ता, अनार और अंजीर भी बहुत होते हैं।

बड़े पेड़ों में दक्षिणी अफ़ग़ानिस्तान में चिनार और शहतूत मुख्य हैं। रेतीले भागों में केबल घास और कटीली झाड़ियाँ मिलती हैं। उत्तर के पहाड़ी भागों में कई तरह के बड़े बड़े जङ्गली पेड़ हैं। इन में देवदारु और जैतून मुख्य हैं। बड़े पेड़ों की छाया में भी बहुत से छोटे छोटे पौधे उगते हैं। इन पौधों में गुलाब और नींबू मुख्य हैं।

हींग—अफ़ग़ानिस्तान के उत्तर-पश्चिम में रेतीली और कंकड़ीली ज़मीन में हींग के बहुत से जंगली पौदे उगते हैं। ये पौधे कंधार शहर के बाहर उत्तर-पूर्व की ओर मैदान में भी दिखाई देते हैं। ये पौधे कभी लगाये नहीं जाते हैं। रेगिस्तान में कहीं कहीं ये जंगली पौधे उगते हैं। वहाँ उनका विचित्र गोंद इकट्ठा कर लिया जाता है। यही हींग है। हींग अधिकतर हिन्दुस्तान को भेज दी जाती है।

पश्चिमी अफ़ग़ानिस्तान के हींग का व्यापार काकड़ अफ़ग़ानियों के हाथ में है। वे लोग बोरी घाटी और बोलन के पास वाले पहाड़ों में रहते हैं। फाल्गुन (मार्च) मास में सदा हरी भरी रहने वाली जड़ से पत्तियाँ निकलती हैं। चैत्र और बैशाख के महीने में हींग बहुत अधिक मिलती है। तभी सैकड़ों काकड़ लोग हींग को इकट्ठा करने के लिये कन्धार और हिरात के मैदान में निकल पड़ते हैं। हरमन्द ज़िले के अनार दर्रा में यह पौधा सब से अधिक होता है। वैसे पश्चिमी अफ़ग़ानिस्तान और उत्तरी फ़ारस और तुर्किस्तान में भी पाया जाता है।

हींग निकालने के लिये पिछले वर्ष के ठूँठ या नये पौधे की जड़ में कई इञ्च गहरे घाव (खोद) कर दिये जाते हैं। तीन चार दिन के बाद घाव फिर दुहरा दिये जाते हैं। बूँद बूँद करके जड़ के सिरे पर रस इकट्ठा हो जाता है, अधिक रस निकलने पर कभी कभी यह जड़ के पास गढ़े में जमा हो जाता है। जड़ को कड़ी धूप से बचाने के लिये आस पास तिनके या कंकड़ पत्थर रख दिये जाते हैं। ऐसा न करने से जड़ें सूख जाती हैं। जड़ें प्रायः गाजर के समान मोटी होती हैं। सर्वोत्तम हींग बिलकुल ख़ालिस होती है। घटिया में गेहूँ का आटा मिला रहता है। कन्धार में बढ़िया हींग प्रायः ४ रुपया सेर बिकती है। घटिया हींग १ रुपये सेर भी मिल जाती है। हींग की सब से अधिक खपत हिन्दुस्तान में होती है जहाँ वह दाल या तरकारी का छौंक देने के काम में आती है। अफ़ग़ानिस्तान में हींग सिर्फ़ दवा के ही काम आती है। कहीं कहीं हरी पत्तियों को तरकारी भी बनती है। वास्तव में पत्तियों में भी वही गन्ध और गुण मिलता है। हींग के पौधे के सफ़ेद गूदे को घी में भून कर और नमक मिला कर अफ़गानो लोग बड़े चाव से खाते हैं।

पशु—कन्धार के आस पास तेंदुआ अक्सर मिलता है। वैसे तेंदुआ प्रायः अफ़ग़ानिस्तान के सभी भागों में मिलता है। चीता अफ़ग़ानी तुर्किस्तान में पाया जाता है। हलमन्द और अरग़न्दाब के आस पास गीदड़ बहुत ही ज़्यादा हैं। अफ़ग़ानिस्तान के दूसरे भागों में भी इनकी कमी नहीं है। जंगली हिस्सों में भेड़िया बहुत रहते हैं। वे टोलियाँ बना कर बरफ़ पर भी घूमते हैं। पालतू जानवरों पर अक्सर उनके हमले होते हैं। लेकिन एक आध घुड़सवार को भी वे नहीं छोड़ते हैं। नेवला, भालू, लोमड़ी और गुलबघा भी बहुत हैं। जंगली सुअर हलमन्द नदी के निचले भाग में मिलता है। जंगली गधे दक्षिण-

पश्चिम के रेतीले भागों में बहुत हैं। पहाड़ी भेड़ और हिरण काफ़िरिस्तान में बहुत पाये जाते हैं।

पालतू जानवरों में वहाँ ऊँट बड़ा मज़बूत और फ़ायदेमन्द होता हैं। अफ़ग़ानीं लोग ऊँट को बड़ी। सावधानी से पालते हैं। आमू (आक्सस) नदी के प्रदेश में दो कूबड़ का ऊँट बहुत होता है।

काबुली घोड़े हिन्दुस्तान में बहुत बिकते हैं। सब से अच्छे घोड़े अफ़ग़ानी रिसाले के लिये चुन लिये जाते हैं। अफ़ग़ानी याबू (टट्ट) भी बड़ा मज़बूत होता है। यह प्रायः बोझा ढोने के काम आता है। कन्धार और सीस्तान की गायें बहुत ही अधिक दूध देती हैं। उनके कूबड़ भी होता है। अफ़ग़ानी लोग दूध बहुत पसन्द करते हैं। यहाँ भेड़ें दो क़िस्म की होती हैं। दोनों ही दुम्बा या मोटी पूँछ वाली होती हैं। एक की ऊन सफ़ेद और दूसरी की काली होती है। पहिले सफ़ेद ऊन फ़ारस जाती थी। अब इसका बड़ा भाग कराची और बम्बई के रास्ते जाने लगा है। ये भेड़ें बद्दू पठानों की ख़ास दौलत हैं। बकरियाँ काली या चितकबरी होती हैं। उनके बाल शाल के लिये अच्छे नहीं होते हैं।

व्यापार

अफ़ग़ानिस्तान का व्यापार अधिकतर पोबिन्दा लोगों के हाथ में है। ये लोग सौदागर होते हुए भी सिपाहियों का सा जीवन बिताते हैं। पोबिन्दा लोग किसी एक फ़िरके के नहीं हैं। वे कई फ़िरकों से मिल कर बने हैं। पर अधिकतर ये लोग गिल्ज़ई या दोगले हैं, कुछ असली हैं और ख़ुरासानी सरदार लोदी की सन्तान हैं। सुलेमान पहाड़ के पश्चिमी ढालों पर इनके घर जगह जगह बिखरे हुए हैं। अपने माल को लुटेरों से बचाने के लिये ये लोग हथियारबन्द रहा करते हैं और बड़े बड़े काफ़िलों में सफ़र करते हैं।

पोबिन्दा लोग हिन्दुस्तान में निम्न चीज़ें लाते हैं:—

बुख़ारा और समरक़न्द से—रेशम, घोड़े, सन, ऊन, सोना, नमदा, सोने-चाँदी का तार और डोरा।

हिरात से—फ़ारसी कालीनें, मुनक्का, क़ीमती पत्थर, बकरों के बाल, केसर, जावित्री, सुरमा और रेशम।

काबुल से—पिश्ता, किशमिश, बादाम, अनार, तरबूज़, अंगूर, नाशपाती, सेब, हींग, दारचीनी, जावित्री, बकरे के बाल (शाल के लिये), भेड़ की खाल, चोग़ा और रंग।

ग़ज़नी और कन्धार से—दाना, ऊन, चावल, घी, गोंद और फल।

हिन्दुस्तान से ये लोग अफ़ग़ानिस्तान के लिये बिलायती कपड़ा, मशीनें, पक्का माल और शक्कर आदि चीज़ें ले जाते हैं।

इस प्रकार ये लोग क़रीब दो करोड़ रुपये का सामान अपने देश से लाते हैं और लगभग इतना ही माल अपने देश को ले जाते हैं।

सिंचाई

अफ़ग़ानिस्तान में खुली नहरें केवल काबुल के आस पास हैं, अफ़ग़ानिस्तान के दूसरे भागों में सिंचाई का एक अजीब ढङ्ग है. गज़नी से कन्धार तक का प्रान्त सिंचाई के लिये 'कारेज़ों' पर निर्भर हैं, क्योंकि इस प्रान्त में और कोई जलाशय हैं ही नहीं। कारेज़, एक प्रकार की नहर हैं जो ज़मीन के नीचे नीचे बहती रहती हैं और जिनमें थोड़ी थोड़ी दूरी पर बने हुए कुओं से बराबर पानी आता रहता है, इससे नहरों का सारा पानी भाप बनकर नहीं उड़ जाता है। अधिकतर इन 'कारेज़ों' का उद्गम-स्थान किसी समीपवर्ती पहाड़ी या ऊँचे मैदान के किसी कुएँ से होता है, और इस कुएँ की जलशक्ति बढ़ाने के लिये दस-पाँच और कूए पास पास खोदकर नालियों द्वारा एक दूसरे से जोड़ दिये जाते हैं। कारेज़ों की लम्बाई इन्हीं कूओं की जल-शक्ति पर निर्भर है। खेतों को सींचने के लिए इन 'कारेज़ों' से पतली पतली नालियाँ कटी रहती हैं जो खेतों में इधर उधर घूमती हुई बहुत दूर तक फैली रहती हैं। कुओं को दूर से बतलाने के लिए उनके आस पास गोलाई में मिट्टी का ऊँचा ढेर जमा कर दिया जाता है और उनके ऊपर छप्पर रख दिये जाते हैं। ये छप्पर कम से कम दो बरस चलते हैं, इसके बाद वे निकाल दिये जाते हैं और कुओं की सफ़ाई करने के बाद दूसरे छप्पर रख दिये जाते हैं। कुएँ कच्चे होते हैं। इसी से हर तीसरे साल उनकी मरम्मत करनी होती है।

कुछ कारेज़ तो थोड़े ही दिन काम आने पर ख़राब हो जाते हैं। कुछ बहुत दिन तक चलते रहते हैं। सबसे पुराना कारेज़ गज़नी में है

और सुल्तान महमूद ग़ज़नवी के नाम से उसी के समय का बना हुआ है। अतः यह लगभग ८०० वर्ष का पुराना है। इसकी लम्बाई २० मील है। महमूद ग़ज़नवी की क़ब्र का उद्यान इसी कारेज़ द्वारा सींचा जाता है।

'कारेज़' अधिकतर चन्दे से बनते हैं। कभी कभी सरकारी ख़र्च से और कभी कभी दानी लोगों द्वारा भी बनवा दिये जाते हैं। जो कारेज़ चन्दे से बनते हैं उनका जल चन्दे की रक़म के हिसाब से बाँटा जाता है। इस बटवारे में कभी कभी लड़ाई झगड़े भी हो जाते हैं।

भोजन :—अफ़ग़ानी लोग भोजन अच्छा करते हैं। निर्धन मनुष्यों का भोजन अधिकतर गेहूँ, बाजरा, मकई इत्यादि के ख़मीरे की रोटी और सब तरह की तरकारियाँ हैं। तरकारियों को सालन (गाढ़े रसे) के रूप में बनाते हैं और उनमें सूखी दाल तथा किशमिश भी मिला देते हैं। कभी कभी भेड़, ऊँट, बकरा, भैंसा और चिड़ियों का गोश्त भी पकता है और चर्बी या घी की बाढ़ सी रहती है। दूध, दही, पनीर और ताज़े तथा सूखे फल बहुतायत से काम में लाये जाते हैं।

अमीर लोग तरह तरह का भोजन करते हैं और उनकी भोजन-प्रणाली फ़ारस वालों की प्रणाली से बहुत मिलती जुलती है। उनका मुख्य भोजन पोलाव है जो चावल, भेड़ या चिड़ियों के गोश्त और भेड़ की दुम की चर्बी या घी, हल्दी, (या केसर) चीनी, बादाम, किशमिश और बेर इत्यादि मिलाकर तैयार किया जाता है। कभी कभी भेड़ या बकरी के बच्चे को खड़ा भून डालते हैं। भूनने से पहले उसमें मीठा चावल, बादाम, किशमिश, पिस्ता, अखरोट या बेर इत्यादि ख़ूब ठूँस ठूँस कर भर देते हैं। इसे 'मटजन पोलाव' कहते हैं। इसे अफ़ग़ानी लोग बहुत पसन्द करते हैं। एक चीज़ वे लोग और पसन्द करते हैं

जिसे 'कूट' कहते हैं। कूट असल में पनीर के सूखे सत को कहते हैं। इसे लोग घी या चर्बी में डालकर रोटी, भाजी या गोश्त के साथ खाते हैं। इसका स्वाद, गंध और रंग अफ़ग़ानियों को छोड़ दुनिया में कोई दूसरा पसन्द नहीं कर सकता। इसी की वजह से फ़ारसी लोग उन्हें गँवार भी कहते हैं।

उत्तर-पूर्व में अनाज कम होता है इसलिये वहाँ वाले अधिकतर दूध, दही और जंगली फल खाकर रहते हैं।

अमीरों में चाय पीने की भी प्रथा है। तम्बाकू तो सभी पीते हैं, चरस और शराब (यद्यपि उनका धर्म इसकी आज्ञा नहीं देता) का भी छिप छिप कर प्रयोग किया जाता है।

पोशाक :—अफ़ग़ानियों की वेष-भूषा उनके पड़ोसियों की वेष-भूषा से कुछ भिन्न होती है। उनकी पोशाक है—ढीला कुर्त्ता, जिसके नीचे एक बहुत चौड़ा पायजामा होता है। ये दोनों कपड़े सूत ही के होते हैं और कभी कभी नीले रंग में रंग लिये जाते हैं। इन सब के ऊपर सिर पर एक अफ़ग़ानी पगड़ी होती है। गर्मी में ग़रीब लोग ये ही कपड़े पहनते हैं; किन्तु जाड़े में पोस्तीन यानी भेड़ के चमड़े का कोट या ऊँट के रोयें का बना हुआ लबादा अधिकतर पहिना जाता है। कन्धार प्रान्त में अधिकतर पोस्तीन या चोग़े की जगह एक गर्म, वाटरप्रूफ़ (जलास्पृश्य) मोटे तथा सफ़ेद फ़ेल्ट कपड़े की चोग़े की तरह एक पोशाक पहिनी जाती है जिसे 'खोजई' कहते हैं। कुरते और पायजामे बहुत ही ढीले होते हैं। कहीं कहीं पर लोग पायजामे के नीचे के भाग को पलेट डाल कर चुस्त कर लेते हैं और तब वे अँगरेज़ी पोशाक के निकरबाकर की तरह जान पड़ते हैं। जूते, जिन्हें वहाँ पैजर कहते हैं पंजे की ओर नुकीले और मुड़े हुए होते हैं और एँड़ी में नीचे बहुत सी कीलें गड़ी रहती हैं।

पहाड़ के लोग अधिकतर खड़ाऊँ या चपली पहनते हैं जो कि घास या ताड़ के पत्ते के बने होते हैं। दक्षिण-पूर्व के प्रान्तों में लेसदार (गोटेदार) हाफ़ बूट भी पहिना जाता है।

निर्धन स्त्रियों की वेष-भूषा पुरुषों की वेष-भूषा से ही मिलती-जुलती होती है। वे भी अधिकतर नीले रंग के सूती कपड़े पहिनती हैं। किन्तु स्त्रियाँ ऊपर से चादर ओढ़े रहती हैं जो नीले रंग की या बहुरंगी होती हैं या कभी कभी सफ़ेद भी होती हैं। यही चादर अपरिचित मनुष्यों से मुँह छिपाने का भी काम देती हैं, क्योंकि उच्च वंश की स्त्रियों की भाँति वे बुर्क़े नहीं ओढ़ती हैं।

अमीरों की पोशाक में विशेषता यह होती है कि उनके कपड़े अधिक ढीले होते हैं और बहुधा क़ीमती होते हैं। वे हर एक ऋतु में तथा हर समय चोग़ा पहने रहते हैं जो बहुमूल्य ऊँट या पहाड़ी बकरों के ऊन के बनते हैं। कभी कभी भेड़ का ऊन या विलायती कपड़े भी काम में लाये जाते हैं। चोग़ा ही अफ़ग़ानियों की राष्ट्रीय पोशाक है। अधिकतर कमर बन्द लगाकर चोग़े को कस लेते हैं किन्तु कभी कभी यह वैसे ही खुला लटकता रहता है। अमीर लोग अधिकतर शाल या कमरबन्द रखते हैं। इसकी तह में चारा (अफ़ग़ानी चाक़ू) और एक या अधिक पिस्तौल भी रक्खे रहते हैं। कभी कभी चारे के स्थान में 'पेश क़ब्ज' या फ़ारसी कटार भी पहिनी जाती है। पगडी के नीचे सोने के काम की टोपी रहती है जो सिर पर बिलकुल बैठ जाती है। पगड़ी के लिये या तो शाल काम में लाया जाता है या सुनहले काम की लुंगी। इनकी पोशाक की एक और विशेषता यह है कि लोग सूती या ऊनी मोज़े भी पहिनते हैं।

अमीर घराने की स्त्रियाँ रेशमी या टसरी कुरते पहिनती हैं जिनके नीचे कसा हुआ एक छोटा कुरता रहता है। ऊपर का कुरता ख़ूब

घेरदार होता है। सिर के ऊपर रेशमी रूमाल या शाल पहिनने की प्रथा है। रूमाल सिर के ऊपर से लाकर ठुड्डी के नीचे बांध दिया जाता है; और शाल कन्धों और पीठ पर पड़ी रहती है। घर से बाहर निकलते समय ये स्त्रियाँ बुर्क़ा ओढ़ लेती हैं जिससे उनका सारा बदन बिल्कुल ढक जाता है। पाँव में स्लीपर घर में तो पहिना ही जाता है, बाहर जाते समय उसके ऊपर एक मुलायम बूट भी होना आवश्यक है और स्लीपर के नीचे मोज़े हों तो अच्छा समझा जाता है।

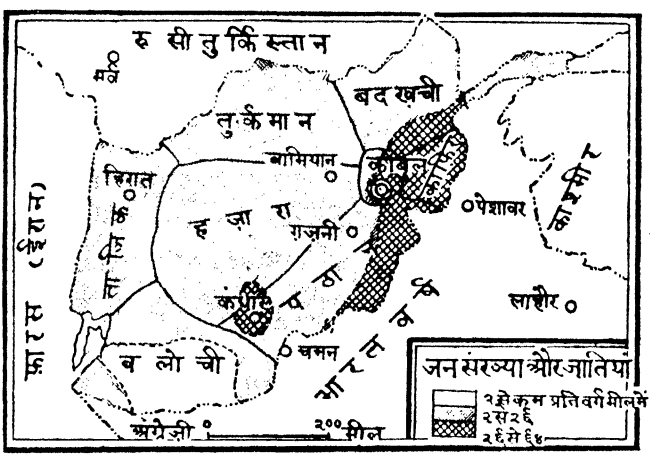

पुरुषों को लम्बी दाढ़ी और मोछ रखने का बड़ा शौक होता है। किन्तु उनके सिर के बालों में विभिन्नता पाई जाती है। कुछ लोग तो पूरी खोपड़ी साफ़ रखते हैं। कुछ लोग सिर के अगले भाग का निचला हिस्सा साफ करा देते हैं, किन्तु अधिकतर लोग तब तक बाल नहीं कटाते हैं जब तक कि वे भारू न हो जाँय। कुछ लोग केवल लम्बे बालों के सिरे कटा देते हैं जिससे वे गर्दन के ऊपर ही लटकते रहें। कभी पुरुष लोग अपने

हाथ, पाँव मेंहदी से रंग लेते हैं और आँखों में सुरमा लगाते हैं। किन्तु साधारण रीति से यह प्रथा स्त्रियों ही में पाई जाती है। स्त्रियाँ गुदना भी गुदाती हैं। अधिकतर ठुड्डी में और नाक के ऊपर मत्थे में गुदना गुदाया जाता है। यहाँ की स्त्रियों का रंग बहुत साफ़ होता है और उनकी बनावट मर्दों की भाँति यहूदियों से बहुत मिलती जुलती है। गुलाबी रंग के शरीर पर सुरमा लगी हुई आँखें एक विचित्र जादू का सा असर पैदा कर देती हैं। स्त्रियों के बाल लम्बे होते हैं। और सिर के अगले भाग में माँग काढ़ कर दो भागों में बाँट कर पीछे फिर मिला दिये जाते हैं। परदे की प्रथा होने से उनमें शिक्षा का अभाव है।

कारीगरी

पहले बतलाया जा चुका है कि अफ़ग़ानिस्तान की पोशाक में पोस्तीन और ख़ोजाई का विशेष स्थान है। यही कारण है कि वहाँ की कारीगरी विशेष कर शहरों और क़सबों में इन्हीं से सम्बन्ध रखती है। इन वस्त्रों की माँग अफ़ग़ानिस्तान ही में नहीं किन्तु भारतवर्ष के पंजाब इत्यादि प्रान्तों में भी है। कन्धार ग़ज़नी और काबुल के प्रत्येक बड़े क़सबे में इसके लिये चमड़ा तैयार किया जाता है। काबुल में जो चमड़े तैयार किये जाते हैं, वे सबसे अच्छे होते हैं और उनकी माँग भी सब से अधिक होती है।

पोस्तीन बनाने का तरीका यह है :—भेड़ के रोंयें सहित सूखे चमड़े नरम करने के लिये पहिले चमारों को दिये जाते हैं। चमार उन्हें बहते हुए पानी में ख़ूब धोते हैं और साबुन की मदद से उनकी सारी गन्दगी दूर कर देते हैं। इसके बाद कंघी से ऊन साफ़ किया जाता है और सूखने के लिये टाँग दिया जाता है। ऊन नीचे रहता है और खाली चमड़ा ऊपर। खाली चमड़े को नरम करने के लिये उस पर गेहूँ और चावल का बराबर बराबर महीन आटा और बारीक नमक मिला कर चार पाँच दिन तक प्रतिदिन लगाया जाता है। फिर चमड़ा धोकर सुखाया जाता है और उसमें लगे हुए चर्बी के ज़र्रे भी निकाल लिये जाते हैं। इसके बाद चमड़े को सिझाने के लिये अनार का सूखा छिलका (१८ पाउन्ड) पिसी हुई फिटकिरी (४ पाउन्ड) और पीली मिट्टी (८ पाउन्ड) पीस कर आधा गैलन तिल्ली का तेल मिला कर चमड़े में लगा कर उसे फिर सुखाते हैं। ऊपर दी हुई मिक़दार १०० चमड़ों के

लिये पर्याप्त होती है। पीली मिट्टी के कारण चमड़े में पीलापन भी आ जाता है। अन्त में एक लकड़ी के रोलर से चमड़ा दबाया जाता है और उसमें लगी हुई चीज़ें निकल जाने से बढ़िया तैयार हो जाता है।

इसके पश्चात् चमड़ा दर्ज़ी को दे दिया जाता है जो पहिले उन्हें २ फुट लम्बे और चार या पाँच इञ्च चौड़े टुकड़ों में काट लेता है और उनसे भिन्न भिन्न लम्बाई चौड़ाई के पोस्तीन तैयार करता है। पोस्तीन का दाम एक रुपये से पचास रुपये तक होता है। पोस्तीन यों तो बहुत अच्छी पोशाक है। लेकिन रोयें भीतर होने से उसमें चीलर (जुएँ) और पिस्सू बहुत पड़ते हैं। खोज़ाई अधिकतर कन्धार और पश्चिमी प्रान्तों में तैयार होता है। यह मोटे फेल्ट का बनता है और बहुत गर्म होता है। देखने में यह पोस्तीन से बहुत मिलता जुलता है पर होता है उससे बहुत हलका। इन दोनों के अतिरिक्त चोंगा भी अफ़ग़ानिस्तान की एक ख़ास पोशाक है। यह ऊँट के बाल, भेड़ की लाल ऊन या बकरी के बाल से बनता है। इन्हीं चीज़ों से इनके नाम भी अलग होते हैं जो क्रमशः ये हैं—१-शुतुरी चोंग़ा और २—कुर्की चोंग़ा। इनमें कुर्की चोंग़ा बहुत महँगा होता है। साँबर हिरन के रोयें के चोंग़े तो हज़ार बारह सौ रुपये तक के बिकते हैं।

पठान स्त्रियाँ

सीमा प्रान्त और अफ़ग़ानिस्तान के बहुत से पठान फ़िरक़ों में स्त्री बेचने की चाल है। पर यह चाल सर्वसाधारण नहीं है। कभी कभी पठान केवल लड़की के माता पिता को अपनी दौलतमन्दी दिखलाने के लिये बहुत सा धन दौलत ज़ेवर और भेंट देने में ख़र्च करता है। डेरा इस्मायल ख़ां के पास वाले शीरानी लोगों की तरह कुछ फ़िरक़े तो दहेज भी देते हैं। पर बहुतों में पशुओं के समान लड़की बेचने की चाल है। लड़की का दाम मोल लेने वाले की हालत और लड़की की सुन्दरता और अवस्था पर निर्भर है।

जब कोई वज़ीर नवयुवक ब्याह करना चाहता है तो वह अपने फ़िरक़े के किसी प्रतिष्ठित वृद्ध मनुष्य को लड़की के माता-पिता की राय लेने के लिये नियुक्त करता है। यदि माता-पिता सम्बन्ध करना चाहते हैं तो वे "हीरी" (प्रायः १०० रुपये की भेंट) लाने के लिये कहते हैं, तब ब्याह करने वाला अपने पिता और मित्रों के हाथ यह काम सौंपता है, वे अपने साथ दावत के लिये एक दो भेड़ भी लड़की के घर ले जाते हैं। पके हुए मांस के ऊपर ठहरौनी की सारी रक़म रख देते हैं। इसमें से एक आध रुपया सौभाग्य के लिये लौटा दिया जाता है। इसके बाद दोनों का विवाह ठहर जाता है। जब विवाह का दिन आता है तो दूल्हे के घर के लोग और उनके मित्र (पुरुष और स्त्रियाँ सभी) दुलहिन के घर जाते हैं। बारात संध्या समय पहुँचती है और उसी समय ऐसा दिखाया जाता है मानों दूल्हे की ओर लोग ईंटा और डंडा लेकर आक्रमण कर रहे हैं, रात्रि में नाच तमाशा होता है, सोने का

एक अफ़गानी स्त्री

अफ़ग़ानिस्तान की ऊँची नीची और पथरीली ज़मीन पर लकड़ी एकत्रित करना कोई सरल काम नहीं है। यह कठिन काम स्त्रियों को ही करना पड़ता है। कई मील का चक्कर लगाने के बाद यह स्त्री इतनी लकड़ी लाने में सफल हुई है।

किसी को ध्यान ही नहीं रहता। दूसरे दिन सवेरे ही दुलहिन बैल या गदहे पर चढ़ा कर बिदा कर दी जाती है और दूल्हा दो एक दिन लड़की के मां-बाप को आश्वासन देने के लिये वहीं रुक जाता है।

यूसुफ़ज़ई में इतना अन्तर है कि ठहरौनी करने के लिये घर के लोग नहीं बल्कि कोई अन्य व्यक्ति भेजा जाता है जिसका यही पेशा होता है। ठहरौनी हो जाने पर मर्द को अधिकार होता है कि वह भेंट लेकर जब चाहे तब औरत के घर जा सकता है किन्तु विवाह के पूर्व उसे वह देख नहीं सकता। एक और विशेषता यह है कि यहाँ विवाह हो जाने पर वज़ीरी प्रथा के अनुसार दुलहिन के बिदा हो जाने पर दूल्हे को उसके घर दो चार दिन ठहरना पड़ता है, यूसुफ़ज़ई में दूल्हा नहीं रोका जाता बल्कि दुलहिन की लौंडियाँ रोक ली जाती हैं। सस्ती से सस्ती शादी में इनके यहाँ सौ रुपये लग जाते हैं और अमीरों में कई हज़ार। यही कारण है कि इन में बहुत कम ऐसे लोग मिलते हैं जिनकी चार शादी हुई हों जैसा कि इनका मज़हब हुक्म देता है।

देश के अधिकतर भागों में और ख़ास कर देहातों में पर्दा बिलकुल नहीं है। इसलिये वहाँ वर और कन्या एक दूसरे को देखकर विवाह करते हैं। किसी किसी प्रान्त में किसी लड़की को भगा ले जाना बड़ा भारी दुष्कर्म समझा जाता है और प्राणदण्ड ही इसका यथोचित दण्ड समझा जाता है।

दावत देने की प्रथा प्रायः सब जगह एक सी है। दावत लड़के वाला ही देता है। निमंत्रित सज्जनों में कभी कभी केवल लड़की वाले लोग, कभी अपने फ़िरके के जिर्गा या काउन्सिल के लोग और कभी सारा गांव होता है। कहीं दावत में शरीक होने के बाद कुछ उपहार

भी देना पड़ता है। कोहाट के आसपास लड़की बेचने और ख़रीदने का व्यवसाय बड़ी भयंकर दशा में पहुँच गया है। कभी कभी तो घर वाले ही अपनी लड़कियों को बेचने के लिये लाते हैं। उनके दाम ३०) से १०००) तक हो सकते हैं। यही कारण है कि इस देश में स्त्रियों का आदर कम होता है; वे व्यापार की वस्तु समझी जाती हैं। पुरुष जब चाहे अपनी स्त्री को तलाक़ दे कर दूसरा व्याह कर ले। स्त्रियों को यह अधिकार नहीं है। पुरुष जब तक स्त्री से सन्तुष्ट रहता है, उसे अपने पास रखता है नहीं तो और चीज़ों के साथ उसे बेच डालता है। छिनाले की सजा मौत समझी जाती है, अच्छा यही है कि जो पुरुष व्यभिचार में पकड़ा जाता है वह मृत्यु का भागी होता है। कभी कभी पुरुष केवल जुर्माना देकर छुट्टी पा जाता है। किसी किसी प्रान्त में व्यभिचार यहाँ तक बढ़ गया है कि शायद ही कोई ऐसी स्त्री मिले जो जीवन में एक बार भी किसी अन्य पुरुष के संग भाग न निकली हो।

ऊपर जो चित्र खींचा गया है वह रोमाञ्चकारी है। किन्तु यहाँ यह बात भी स्मरण रखनी चाहिये कि यह चित्र केवल पतित समाज का है जो हर एक देश में पाया जाता है। अफ़ग़ानिस्तान में भी ऐसी स्त्रियाँ हैं जो उस देश की मर्यादा संभाले हुए हैं। वहाँ भी स्त्रियों की प्रतिष्ठा होती है किन्तु यह सब होते हुए भी इस देश की स्त्रियों की स्थिति शोचनीय कही जा सकती है।

———

रक्त का मूल्य

अफ़ग़ानी या पठान लोग यहूदियों से और बातों में चाहे मिलते हों या न मिलते हों किन्तु यह तो निश्चय है कि बदला लेने में वे यहूदियों से एक अंगुल पीछे नहीं हैं। उनका सिद्धान्त है 'प्राण के बदले प्राण, आँख के बदले आंख, दांत के बदले दांत और पांव के बदले पांव।' यूसुफ़ज़ई में तो इस नियम का अपवाद होता ही नहीं। यदि अ, ब की कोई वस्तु चुरा ले तो ब को पूरा अधिकार है कि वह अ के घराने में से किसी की वैसी ही वस्तु चुरा ले या ले ले। इसी तरह यदि अ, ब का घोड़ा मार डाले और अदालत इसका फ़ैसला करने में असमर्थ हो तो ब को अधिकार है कि वह अ का घोड़ा मार डाले। यहां तक कि यदि अ, ब, को मार डाले तो अदालत इस बात के करने के लिए बाध्य है कि वह अ को ब के वारिसों के हाथ बदला चुकाने के लिए सौंप दे। इतना कर देने पर झगड़ा चलता ही रहता है।

स्वात प्रान्त में एक अजीब ढङ्ग है। यदि किसी का माल खो जाय तो उसे पूर्ण अधिकार है कि वह चाहे जिस पर सन्देह का बहाना करके उसे फंसा दे और यह फंसा हुआ व्यक्ति जब तक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति (अफ० सैयद) से यह न कहलवा दे कि वह निर्दोष है, वह अपराधी मान लिया जाता है।

लेकिन यह देखा जाता है कि अब धीरे धीरे 'प्राण के बदले प्राण' वाला सिद्धान्त उठ सा रहा है। लोग समझने लगे हैं कि इससे कोई लाभ नहीं; इसलिए अब हर एक अपराध का दोष रुपये से मुक्त किया जाने लगा है। पश्चिमी अफ़ग़ानिस्तान में एक क़त्ल (हत्या) के

बदले १२ नौ जवान स्त्रियों के देने की प्रथा चल गयी है जिनमें से ६ तो बिना दहेज के दी जाती हैं और ६ दहेज के साथ। दहेज का अर्थ साधारण रीति से ६०) के हैं, जिसमें नक़दी और सामान दोनों शामिल हैं। इसी तरह यदि किसी के हाथ, कान, या नाक कट गयी हो तो ६ औरत और यदि दांत टूट गया हो तो ३ औरतें देनी पड़ती हैं। औरत देने की प्रथा भी धीरे धीरे कम होती जा रही है और उसके स्थान में रुपये का देना बढ़ रहा है।

बरज़ई लोगों में १ कत्ल के बदले बारह सौ रूपये देने पड़ते हैं किसी की औरत भगा ले जाने की भी वही सज़ा है, जिसमें से आठ सौ रूपये उस स्त्री के पति को मिलता है और शेष चार सौ गांव की पंचायत को। जुर्म के बड़े या छोटे होने के अनुसार ही रुपये की तादाद बढ़ती घटती रहती है।

वज़ीरियों की क़ानून की पुस्तकें देखने योग्य हैं। उन्होंने जुर्म (अपराध) को ३ भागों में बाँटा है, १—शरीर सम्बन्धी, २—माल सम्बन्धी और ३—स्त्री सम्बन्धी। क़त्ल जिस चीज़ से किया गया हो उसके अनुसार उसके कई प्रकार माने गये हैं, उदा०—(१) बन्दूक़ से हत्या (२) चाक़ू से हत्या (३) गला दबाकर या काट कर हत्या, यह सब एक प्रकार की हत्यायें हैं। तलवार से हत्या अधिक दुख देने वाली होती है अतः दूसरे प्रकार की मानी गयी है। इसके लिये रुपया भी अधिक देना पड़ता है। यदि गोली से मारे हुए मनुष्य की हत्या का बदला तलवार से लिया जाय तो सौ रूपया जुर्माना देना पड़ता है क्योंकि तलवार से मरने में गोली से मरने की अपेक्षा दुःख अधिक होता है।

संदिग्ध हत्या का निपटारा आसानी से हो जाता है। यदि वह मनुष्य जिस पर सन्देह है अपनी टोली के १०० मनुष्य गाँव के मुखिया

खैबर से जलालाबाद जानेवाली सड़क के
दो पहरेदार

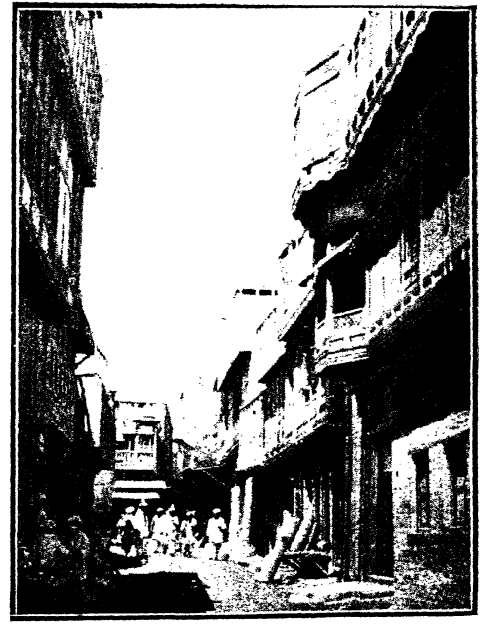

हिरात शहर बहुत पुराना है। तंग गलियों के दोनों ओर
कच्ची ईंटों के घर हैं। लकड़ी के सुन्दर छज्जे हैं।

के सामने लाकर, उनसे क़ुरान की क़सम खिलवा कर कहलवा दे कि वे जानते हैं कि वह मनुष्य निर्दोष है तो वह बरी कर दिया जाता है। यदि सौ मनुष्य न मिल सकें तो एक ही मनुष्य १०० क़समें खा सकता है। रुपयों में हत्या १२००), अर्द्ध हत्या ६००), किसी छोटे अंग में चोट २०) का मूल्य रखती है; किन्तु स्त्रियों के लिए इनका मूल्य आधा कर दिया जाता है। बिल्कुल साधारण चोट के लिए इतना ही पर्याप्त है कि चोट पहुँचाने वाले को स्वयं या मित्रों की सहायता से गिरा दे, या धमका दे, या गांव के सामने उसकी बेइज़्ज़ती कर दे, या इसके बदले में तीन रुपया नक़द ले।

ये नियम अच्छे तो नहीं कहे जा सकते पर बिल्कुल नियम न होने से तो अच्छे ही हैं।

पठानों के धार्मिक विचार

पठानों में अन्धविश्वास बहुत है। यों तो संसार में ऐसा कोई देश नहीं, ऐसी कोई जाति नहीं जहां अन्धविश्वास न हो किन्तु पठानों में अन्धविश्वास अपरिमित है। पुरुष और स्त्रियां दोनों भूत, प्रेत, जादू, जन्तर-मंतर इत्यादि में विश्वास रखते हैं। कोई भी बीमार हो उसके लिये दवा नहीं, झाड़-फूँक होती है। किसी किसी स्थान की मिट्टी जले हुए पर या सांप के काटे जाने पर मली जाती है और कुछ स्थान ऐसे पवित्र माने जाते हैं कि वहां जाने से पागल आदमी भला चंगा हो जाता है या बांझ स्त्रियां पुत्रवती हो जाती हैं।

कोई साधू या फ़कीर जितना ही प्रसिद्ध होता है मरने पर उसकी क़ब्र भी उतनी ही बड़ी बनायी जाती है। कालाबाग़ के पास हज़रत लूत की क़ब्र ३८० गज़ लम्बी है। ऐसे लोगों की क़ब्र ५० फुट से कम लम्बी तो बनायी ही नहीं जाती। शहीद और गाज़ी (बहादुर) लोगों की भी यही प्रतिष्ठा की जाती है। पंजाब में उन्हें नौ गज़ ज़मीन देते हैं और उन्हें "नव गज़ा" कहते हैं। ज्यों ज्यों उनकी प्रसिद्धि बढ़ती जाती है उसी तरह उनकी क़ब्र बढ़ती रहती है। एक बार पेशावर कन्टूनमेन्ट में ऐसे ही बढ़ते बढ़ते एक क़ब्र बिलकुल रास्ते से आ टकराई और गवर्नमेन्ट को दीवाल से उसे बांधना पड़ा।

साम्प्रदायिक क्षेत्र में निम्न पदाधिकारी होते हैं :—

१—सैयद (शाह):—अली के वंशज हैं और मन्दिर के प्रधान का पद इन्हें मिलता है। पठानों में इनकी बड़ी प्रतिष्ठा है।

२—पीर (बादशाह) :—ये मन्दिर के सब से बड़े हाकिम हैं। पूजा ख़ूब चढ़ने के कारण ये बड़े अमीर होते हैं।

३—मियाँ :—वे लोग कहलाते हैं जो संसार से विरक्त होकर मन्दिर में आ जाते हैं और इस्लाम की शिक्षा देते रहते हैं। ये लोग भी अमीर होते हैं।

४—साहिबज़ादा :—इनका चौथा दर्जा होता है। ये पवित्र पुरुषों के लड़के होते हैं।

५—मुल्ला :—मन्दिर का प्रधान संचालक होता है। कभी कभी उसे मौलवी भी कहते हैं। मस्जिद का सारा प्रबन्ध वही करता है।

६—इमाम :—निमाज़ का अगुआ।

७—फ़कीर, शेख़ और तालिबइल्म।

मन्दिर के अधिकारियों को यह विशेष स्वत्व प्राप्त है कि कोई कभी उन्हें मार नहीं सकता है, क्योंकि उन्हें मारने वाला दुनिया में सब से बड़ा पापी समझा जाता है। एक बार एक पठान ने भूल से एक 'मुल्ला' को मार डाला। बाद को उसे मालूम हुआ और वह अपना प्राण बचाने के लिये अपना प्राण छोड़ कर भागा। अफ़ग़ानिस्तान के कोने कोने में यह समाचार फैल गया और वह बेचारा जहाँ भाग कर जाता वहीं से दुतकारा जाता। अन्त में उसने यह सोचा कि शायद यह पाप किसी अंग्रेज़ को मारने से छूट जाय, इसलिये वह पेशावर कन्टूनमेन्ट में आया और किसी अंग्रेज़ की तलाश में घूमने लगा। बहुत देर तक उसे कोई शिकार न मिला। अन्त में उसे एक सार्जेन्ट दिखाई पड़ा, जिसका घोड़ा बड़ा बदमाश था और अपने मालिक को बहुत तंग कर रहा था। उसने उस सार्जेन्ट पर गोली चलाई। पकड़ लिये जाने पर उसे फाँसी की सज़ा दी गई। पर वह तिस पर भी ख़ुश था। उसका कहना था कि अब वह मुल्ला के मारने के अपराध से मुक्त हो गया। पठान ऐसे अन्ध-विश्वासी होते हैं!

नगर और मार्ग

काबुल* शहर समुद्र-तल से साढ़े छः हज़ार फ़ुट की उँचाई पर एक त्रिभुजाकार कन्दरा में बसा हुआ है। यह कन्दरा दो ऊँची और सपाट पहाड़ियों से बनी हुई है। पहाड़ियाँ उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम की दिशा में चल कर शहर के पश्चिम में प्रायः मिल जाती हैं। दो कोणों के बीच में एक तंग दरवाज़ा छूट गया है। जहाँ होकर काबुल नदी बहती है, यहीं ग़ज़नी से ऊँची सड़क आती है। इस प्रकार शहर तीन ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ है। दक्षिण की ओर शहर की दीवार और पहाड़ी की तलहटी के बीच में केवल एक तंग रास्ता है। ये पहाड़ियाँ सपाट, वीरान और पथरीली हैं। इन पहाड़ियों के ऊपर एक लम्बी दीवार है। इस दीवार पर थोड़ी थोड़ी दूर पर गोल बुर्जियाँ हैं। दीवार की क़तार पहाड़ियों की चोटियों, सपाट ढालों और बीच की कन्दराओं में है। अगर इस दीवार का मरम्मत होती रहे तो इससे पश्चिम की ओर का सारा रास्ता बिलकुल बन्द हो जावे।

काबुल शहर पूर्व से पश्चिम तक एक मील लम्बा है। इसी तरह उत्तर से दक्षिण तक इसकी चौड़ाई एक मील है। शहर एक ऊँची पर

* काबुल से १८ मील ठीक उत्तर की ओर कोहदामन में इस्तालीफ़ नगर है। इस्तालीफ़ से २० मील उत्तर में चारीकार नगर है। ११४०० फ़ुट ऊँचे उनाई दर्रे के पास बामियान नगर है। यहाँ से सब कहीं बनी हुई कोहे बाबा की अठारह-उन्नीस हज़ार फ़ुट ऊँची बर्फ़ीली चोटियाँ दिखलाई देती हैं।

कमज़ोर कच्ची दीवार से घिरा हुआ है। इसके चारों तरफ़ कोई खाई नहीं है। शहर के पूर्व में एक पहाड़ी टीले पर बालाहिसार है। बाला-हिसार और शहर के बीच में खाई है। बालाहिसार के ढाल पर महल, बाग़ीचा और भारी बाज़ार है। यह एक दीवार और खाई से घिरा हुआ है।

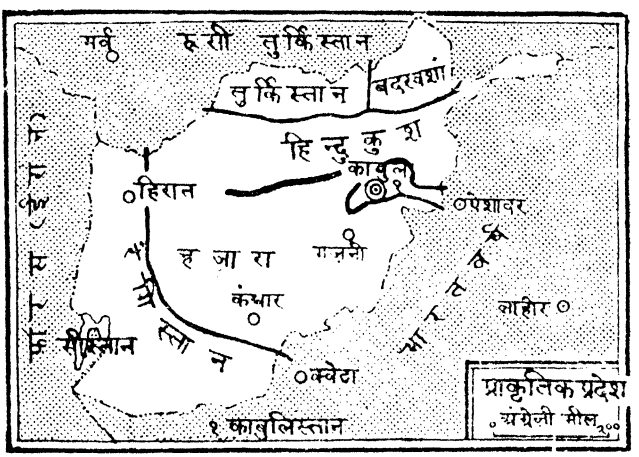

शहर के बड़े बड़े बाज़ार पूर्व से पश्चिम की ओर चले गये हैं। सबसे बड़ा बाज़ार शहर के प्रायः बीच में बना है। बाज़ार में चपटी छत वाले दो मंज़िले मकानों का एक चौड़ा रास्ता है। यह रास्ता तीन-चार वर्गाकार भागों में बटा हुआ है। यहाँ से दाहिनी ओर और बाईं ओर वाली सड़कें मिली हुई हैं। बाक़ी शहर में तंग, मैली और बेढंगी गलियाँ हैं। यहाँ के मकान अच्छी ईंट के बने हुए हैं। शहर की आबादी प्रायः ७० हज़ार है।

काबुल नदी कन्दरा के उत्तरी सिरे से पश्चिम की ओर से प्रवेश

करती है और पूर्व की ओर बहती है। नदी उत्तरी दीवार के बिल्कुल पास है। अगस्त से अक्टूबर तक पानी कम होने से यह एक नाले के समान जान पड़ती है। पर कभी कभी यह इतनी उमड़ आती है कि शहर की दीवार के गिर जाने का डर होने लगता है।

और दिशाओं के मुक़ाबिले में काबुल शहर पूर्व की ओर अधिक खुला हुआ प्रदेश है। उत्तर और दक्षिण की दो पहाड़ी श्रेणियों में काफ़ी फ़ासला हो गया है। उनके बीच में एक चौड़ी घाटी है। यहीं होकर ठीक पूर्व की ओर पेशावर को एक सड़क गई है। काबुल के पूर्व में यह घाटी प्रायः २५ मील तक फैली हुई है। इसके बाद विषम पहाड़ियों की श्रेणी मिलती है। इन के ऊपर लातालाताचन्द नाम का दर्रा है। इस दर्रे से आदमी और घोड़ों ही की गुज़र आसानी से हो सकती है। हाल में बड़ी मुश्किल से मोटर सड़क बन सकी है। घाटी लगभग दस मील चौड़ी है। शहर से कुछ ही दूर पर एक नीची, वीरान, पथरीली पहाड़ी पश्चिम से पूर्व को तीन मील तक चली गई है। इस पहाड़ी ने घाटी को प्रायः दो समान भागों में बांट दिया है। घाटी के उत्तरी सिरे पर काबुल नदी एक उपजाऊ प्रदेश में होकर बहती है। दक्षिण की ओर काबुल शहर के पूर्व में पाँच मील की दूरी पर लोगर नदी काबुल नदी में आ मिलती है। लोगर नदी के आसपास का प्रदेश निचला और दलदली है। अकसर वहाँ पानी रहता है। पर यह भाग बड़ा उपजाऊ है।

काबुल के पश्चिम में ८ मील चौड़ा और १२ मील लम्बा मैदान है। यह हिन्दूकुश की पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहाँ का दृश्य बड़ा मनोहर है। पहाड़ी धाराओं से सिंचाई हो जाने के कारण यहाँ हरे भरे खेत और फलों के बग़ीचे बहुत हैं। इसी से इस मैदान में थोड़ी थोड़ी

दूर पर गाँव बसे हुए हैं। यही कारण है कि काबुल में अनाज और फल प्रायः सस्ते बिकते हैं।

जलालाबाद नगर काबुल से १०५ मील और पेशावर से ६१ मील दूर है। काबुल से जलालाबाद आने वाली सड़क पहले १० मील में ठीक पूर्व की ओर काबुल नदी की घाटी में उतरती है। दूसरे दस मील में काबुल की घाटी छूट जाती है। ऊँची ढालू और वीरान पहाड़ियों में रास्ता बहुत ही तङ्ग हो गया है। इसी तङ्ग भाग में एक पहाड़ से वाली धारा बहती है जिसे कम से कम २० बार पार करना पड़ता है। यहीं खुद काबुल का दर्रा है जो समुद्र तल से साढ़े सात हज़ार फुट ऊँचा है। १० मील आगे इससे भी अधिक ऊँची (८२०० फुट) तङ्गीन पहाड़ियाँ हैं। इसके बाद तङ्गीन घाटी में १८०० फुट का उतार है। इस घाटी के २० मील आगे जगदलक का दुर्गम दर्रा है। जगदलक से गंडमक तक सड़क के दोनों तरफ़ उजाड़ प्रदेश है। रास्ता बहुत ही ऊँचा और पथरीला है। आबादी अत्यन्त कम है। गंडमक नगर समुद्र तल से ४६०० फुट की ऊँचाई पर बसा है। गंडमक से फ़तेहाबाद १८ मील दूर है। बीच में निमला नाम का एक छोटा सा मरु द्वीप है। फ़तेहाबाद से जलालाबाद सिर्फ़ १७ मील रह जाता है। आठ दस मील तक उतार है। इस प्रकार जलालाबाद के आस पास एक मैदान है। इस मैदान के प्रायः बीच में जलालाबाद नगर बसा है। यह मैदान पूर्व से पश्चिम को ३० मील लम्बा और प्रायः दस बारह मील चौड़ा है। पर खेती की ज़मीन बहुत थोड़ी है और काबुल नदी से बहुत दूर नहीं है। यहाँ पर काबुल नदी काफ़ी तेज़, गहरी और साफ़ है। इसके निचले किनारों के बीच में धारा की चौड़ाई प्रायः १०० गज़ है।

जलालाबाद एक मामूली क़स्बा है। इस में तीन-चार सौ घर हैं। यह नगर एक कच्ची दीवार से घिरा हुआ है। इसके आस पास फलों के बगीचे और खण्डरात बहुत हैं।

जलालाबाद से पेशावर ६१ मील दूर है। जलालाबाद से डक्का तक ४२ मील का रास्ता पहाड़ी है और पश्चिम से पूर्व की ओर चला गया है। यह दो पहाड़ियों से घिरा हुआ है। उत्तर-दक्षिण की ओर पहाड़ियाँ एक दूसरे से १० मील से अधिक दूर नहीं हैं। यह मैदान बड़ा पहाड़ी है। इसमें काबुल नदी उत्तर की ओर मुड़ी हुई है। जलालाबाद से ४४ मील की दूरी पर सफ़ेद कोह और हिमालय की ऊँची श्रेणियाँ इतनी पास आ जाती हैं कि रास्ता प्रायः घिर सा जाता है। नदी को तङ्ग कंदराओं में हो कर रास्ता काटना पड़ता है। सड़क लंडीखाना की कन्दरा में होकर जाती है। आजकल लंडी खाना नगर से पेशावर तक खैबर-रेलवे खुल गई है। पेशावर से लंडीखाना लगभग ३७ मील दूर है। पर इस मार्ग में प्रायः ३० सुरंग काटने पड़े।

जमरूद में पासपोर्ट की जांच होती है। इसलिये जमरूद से आगे जाने वाले यात्रियों को चाहिये कि वे पेशावर में पोलिटिकल एजेन्ट से पासपोर्ट ले लें। जमरूद एक उजाड़ स्टेशन है। पर यहाँ एक मज़बूत क़िला है। क़िले के भीतर सिक्ख-वीर-शिरोमणि हरीसिंह नलवा का चित्र है। यहाँ ख़ुफ़िया पुलिस और साधारण पुलिस की बड़ी कड़ी नज़र रहती है। १९२३ के मई महीने में मैं यहाँ एक फ़ौजी क्लर्क का अतिथि था। दूसरे दिन जब मैं काबुल जाने वाली मोटर पर सवार हुआ तो पुलिस वालों की मुझ पर कृपा दृष्टि हुई। मेरे फ़ौजी मित्र की भी सिफ़ारिश काम न आई। मैं रोक लिया गया। यहाँ का तहसीलदार अलीगढ़ का एक ग्रेजुएट था। उसने और वहाँ के रहनेवाले हिन्दू दूकानदारों ने मेरे साथ बड़ी सहानुभूति दिखलाई। पर बिना पोलिटिकल एजेन्ट की आज्ञा के मैं न आगे जा सकता था न हिन्दुस्तान को ही लौट सकता था। कई बार टेलीफ़ोन किया गया। लेकिन दुर्भाग्य से उस

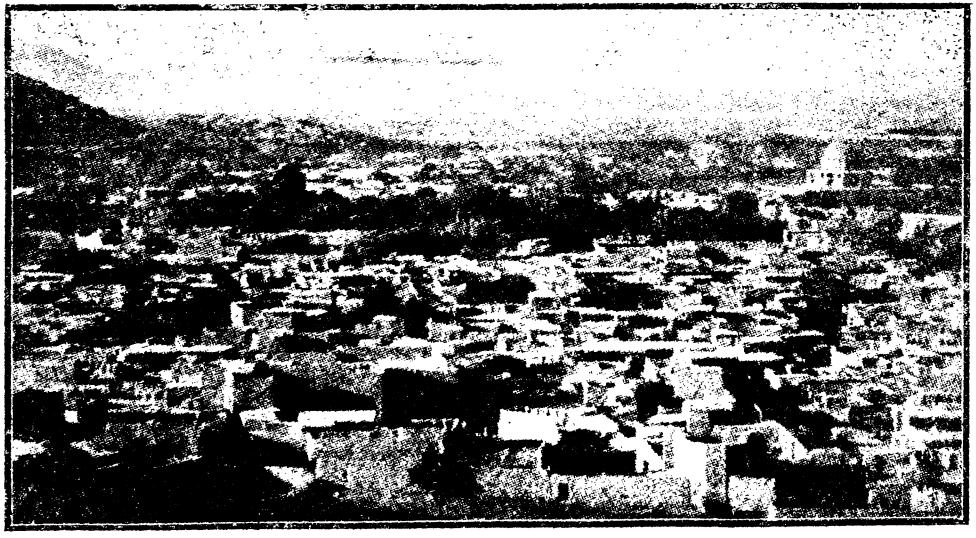

काबुल शहर का एक दृश्य

दिन पोलटिकल एजेन्ट एक जिरगाह* (पंचायत) के सभापति थे। इस लिये कोई जवाब न आया। शाम को हिन्दुस्तान लौटने के लिए मुझे आज्ञा मिली। पेशावर आने वाली दोनों गाड़ियाँ छूट चुकी थीं। मेरे मित्र ने एक इक्के का प्रबन्ध किया। बीच में इस्लामिया कालेज का दर्शन करता हुआ मैं पेशावर लौटा। यह कालेज प्रायः उसी स्थान पर है जहाँ पहले बौद्ध विश्वविद्यालय था।

गज़नी† शहर पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान के गज़नी प्रान्त की राजधानी है। तानक घाटी की चोटी पर यह नगर ७७८६ फुट की ऊँचाई पर

---

* जिरगाह शब्द शायद फ़ारसी भाषा से निकला है जिसका अर्थ चक्र या गोला है। जिरगाह में स्वाधीन क़बीले अपने झगड़े तय किया करते हैं। एक महाशय लिखते हैं कि "मैं ताक की जिरगाह में उपस्थित था। बहस इस बात पर था कि अगर गोमल दर्रा आम तिजारत के लिये खोल दिया जावे तो क़ाफ़िलों की रक्षा किस तरह हो। इस अवसर पर एक दूसरे के जानी दुश्मन लोग भी चुपचाप पास पास बैठे थे। हर एक बोलने वाला अपने मन के भाव संक्षेप में प्रगट करके बैठ जाता था, इसका जवाब भी इसी तरह दिया जाता था। किसी तरह की गड़बड़ी न थी। दुनिया की दूसरी राजसभायें पठानों की जिरगाह से शिक्षा ले सकती हैं कि सभा का काम अच्छे ढंग से किस प्रकार करना चाहिये।

† गज़नी:—के आस पास बहुत से फल के बग़ीचे और अनाज के खेत हैं जिनके बीच में बहुत से गाँव इधर उधर बसे हैं। यहाँ का क़िला जिसको १८४२ ई० में अंगरेज़ों के सेनानायक जेनरल नाट ने तोड़ डाला था अब बहुत मज़बूत बन गया है और उसमें लगभग तीन हज़ार पाँच सौ मकान हैं। क़िले के उत्तरी भाग में एक बहुत

बसा है। पूर्व से पश्चिम को जानेवाली पहाड़ियाँ यहीं पर मिल जाती हैं और इस घाटी को काबुल की घाटी से अलग करती हैं। काबुल शहर

उच्च अट्टालिका है। अहमद शाह अब्दाली के ही समय से इस नगर की आभा क्षीण होने लगी। आज कल यहाँ की प्रत्येक वस्तु कान्तिहीन दिखाई पड़ती है, यहाँ तक कि यहाँ के मनुष्यों का विशेष गुण निरक्षता और असभ्यता ही कहा जा सकता है। ग़ज़नी बीमारियों का भी केन्द्रस्थान सा हो रहा है।

यहाँ 'पोस्तीन' के काम के सिवाय दूसरा कोई व्यवसाय नहीं है। अनाज, फल और रंगीन जड़ी जो यहाँ पैदा होता है उसी का व्यापार यहाँ के लोग करते हैं। पास के हज़ारा प्रान्त से भेड़ की ऊन और उसके बाल यहाँ बिकने आते हैं और फिर बोलन दर्रे से कराची होता हुआ वह सामान विलायत भेज दिया जाता है जहाँ से उसके कपड़े बनाकर फिर यहीं भेज दिये जाते हैं।

ग़ज़नी के सेब और ख़रबूज़े बहुत अच्छे होते हैं काबुल के बाज़ार में उनकी बड़ी माँग रहती है। तम्बाकू, रेंडी और कपास भी थोड़ी थोड़ी पैदा होती है।

ग़ज़नी की जन-संख्या बहुत मिश्रित है। दुर्रानी, बरदुर्रानी, हज़ारिया, ताजीक क़ज़िलबाश और हिन्दू सभी यहाँ पाये जाते हैं। यहाँ का जो कुछ थोड़ा सा व्यवसाय और व्यापार है वह सब हिन्दुओं ही के हाथ में है। ग़ज़नी के व्यापारिक केन्द्र न होने के मुख्य कारण ये हैं—गवर्नमेन्ट की उदासीनता, शहर का व्यापार की दृष्टि से अच्छे स्थान पर बसा हुआ न होना और अत्यन्त जाड़ा। जाड़ा यहाँ इतना अधिक पड़ता है कि कई महीनों तक यहाँ से बाहर का आना जाना एक दम

से दक्षिण-पश्चिम में ग़ज़नी नगर १० मील है। काबुल और क़न्धार को जानेवाली सड़क यहाँ होकर जाती है। ग़ज़नी से क़न्धार सवा दो सौ मील दूर है। ग़ज़नी शहर एक ऊँचे टीले पर बसा है। इसका क़िला शहर के प्रायः बीच में है। इसकी बाहरी दीवार का घेरा प्रायः सवा मील है। नगर का आकार विषम वर्ग के समान है। यहाँ तीन चार हज़ार कच्चे घर बने हुए हैं। घरों की छतें चपटी हैं। खिड़कियाँ बहुत ही छोटी हैं और दुमंजिले पर बनी हुई हैं। दीवारों के बीच बीच में बन्दूक़ चलाने के लिये सूराख़ हैं। गलियाँ बहुत ही तंग हैं शहर की चार दीवारी के भीतर अस्तबल बहुत हैं। क़िले के भीतर अफ़सरों के रहने के लिये अच्छे घर हैं। शहर ऐसी ढालू पहाड़ी पर बसा है कि इस पर अचानक छापा नहीं मारा जा सकता है। पर यदि शहर के चारों

बन्द हो जाता है। कभी कभी इतनी अधिक बर्फ़ गिरती है कि सारा नगर नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

ग़ज़नी में सुलतान महमूद का रौज़ा बना है जिसके बेशक़ीमत चन्दन के दरवाज़े अंग्रेज़ लोग अफ़ग़ानिस्तान से लौटते समय उखाड़ कर हिन्दुस्तान में उठा लाये थे। इसी रौजे से थोड़ा हटकर प्रसिद्ध 'ग़ज़नी' की मीनारें हैं। यह मीनारें जो संख्या में दो हैं एक दूसरी से ३०० गज की दूरी पर लाल ईंटों से बनी हैं। ये दोनों मीनार बहुत मज़बूत हैं। एक के सिरे पर एक बड़ा छेद हो गया है जो शत्रु सेना की तोप के गोले लगने से हुआ है। साधारण मीनार ऐसे बड़े गोले से नष्ट भ्रष्ट होजाती किन्तु इसकी कारीगरी की यह विशेषता है कि गोला उसे हिला न सका। एक और प्रमाण उनकी मज़बूती का यह है कि इस देश में भूचाल की अधिकता होने पर भी वे ज़रा भी नहीं बिगड़ी हैं।

और बहुत दिनों तक घेरा डाल दिया जावे तो रसद की कमी के कारण यहाँ के रहनेवालों को आत्म-समर्पण करना पड़े।

ग़ज़नी के आस पास की घाटियाँ उपजाऊ हैं। फल और तरकारियाँ बहुत हैं। घी दूध भी खूब है।

ग़ज़नी और काबुल के बीच की सड़क बहुत से स्थानों पर हर साल कई महीनों तक बरफ़ से घिरी रहती है। ग़ज़नी शहर में भी अक्सर होली तक बरफ़ बनी रहती है।

ग़ज़नी से काबुल को चलने पर पूर्व में तीन चार मील तक दर्रे में होकर सड़क जाती है। यह दर्रा ग़ज़नी शहर से १२०० फुट ऊँचा है। इसके बाद काबुल नदी की घाटी में दो तीन सौ फुट का उतार है। इस प्रकार दर्रे की पहाड़ियां काबुल की घाटी को तानक की घाटी से अलग करती हैं। काबुल नदी की घाटी से उतरने पर फिर काबुल शहर तक क्रमशः ढाल है। इस घाटी का ऊपरी भाग पथरीला है। पर जहाँ तहां उपजाऊ ज़मीन भी मिलती है। मैदान नाम की घाटी बहुत ही सुन्दर और उपजाऊ है। यह घाटी काबुल शहर से लगभग तीस मील दूर है। इस निचले मैदान में कई धाराएं हैं। पर वैसे यह मैदान चारों तरफ़ से पहाड़ियों से घिरा है।

इसी ओर लोगर नदी काबुल की घाटी को पार करती है और काबुल शहर के पास काबुल नदी में मिलती है। काबुल और ग़ज़नी के बीच का यह निचला हिस्सा नदी के पानी से डुबाया जा सकता है और तंपखाने और दूसरे भारी फ़ौजी सामान के लिये दुर्गम बनाया जा सकता है।

काबुल से ग़ज़नी के मार्ग का संक्षिप्त क्रम इस प्रकार है :—

नगर का नाम	समुद्र तल से ऊँचाई फुटों में	दूरी मीलों में	वर्णन
काबुल.	६५०८	—	
अरगन्दी	७६२८	१२	छः सात मील तक सड़क हरे भरे खेतों और फलों के बग़ीचे में होकर जाती है। काबुल घाटी छोड़ने पर पथरीली चढ़ाई शुरू होती है। जब अरग़न्दी दो तीन मील रह जाता है तब फिर क्रमशः उतार है।
मैदान	७७४७	२०	पहले रास्ता कड़ा और पथरीला है। मैदान के नज़दीक पहुँचने पर अच्छा हो गया है।
शेख़ाबाद	७४७३	१८	रास्ता दुर्गम और पथरीला है। चार मील के बाद काबुल नदी को पार करना पड़ता है। सड़क कई मील तक सुन्दर घाटी के किनारे किनारे गई है।

नगर का नाम	समुद्रतल से ऊँचाई फ़ुटों में	दूरी मीलों में	वर्णन
हैदर खेल	७६३७	१०	सड़क लोगर नदी की घाटी में उतरती है। यहाँ पर नदी बड़ी तेज़ी से बहती है और ग़ज़नी की ओर से आने वाले शत्रु के रास्ते में बाधा डालती है। शेख़ाबाद से ६ मील की दूरी पर पहाड़ियों के बीच में घाटी तंग हो गई है। पहाड़ी के दर्रे से बाहर निकलने पर एक छोटी नदी पड़ती है जो हैदर खेल से २ मील है।
हल्फ़ असया	७७२४	१०	तंग घाटी में सड़क मोड़दार है। घाटी उपजाऊ है। यहाँ कई गाँव और क़िले हैं पर आस पास का देश वीरान है।
शाह गौ	८२००	६	रास्ता पथरीला है।
ग़ज़नी	७७२६	१४	शेर दहन (सिंहमुख) दर्रे तक तीन मील बराबर चढ़ाई है। दर्रा ६००० फुट ऊँचा है। इस

नगर का नाम	समुद्रतल से उँचाई फुटों में	दूरी मीलों में	वर्णन
			दर्रे के सिरे पर पहरे वालों का बुर्ज है। कुछ दूर तक प्रायः समतल पठार है फिर उतार है। सर्दी में यह दर्रा बर्फ़ से घिर जाता है और पैदल हरकारों का छोड़कर काबुल और ग़ज़नी के बीच आमद रफ़्त बन्द हो जाती है।

ग़ज़नी से कन्धार सवा दो सौ मील दूर है। सड़क का रुख़ उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम को है। ग़ज़नी से क़लाते ग़िलज़ई १३८ मील है। इस स्थान तक क्रमशः उतार है। तारनक नदी के दाहिने किनारे पर क़लाते ग़िलज़ई में मज़बूत क़िला बना हुआ है। यह क़स्बा समुद्रतल से ४७७० फ़ुट ऊँचा है। क़लाते ग़िलज़ई से कन्धार ठीक पश्चिम में ८७ मील दूर है। ग़ज़नी से चलने पर तारनक की तङ्ग घाटी का अनुसरण करना पड़ता है। कई स्थानों पर इस घाटी की चौड़ाई आध मील से अधिक नहीं है। पर कन्धार के पास इसी घाटी की चौड़ाई तैंतीस मील हो गई है। इसे घेरनेवाली पहाड़ियां में कोई कोई ४०० फ़ुट ऊँची हैं। ये पहाड़ियां नंगी और वीरान हैं। इन पर हरियाली का नाम नहीं है। पर घाटी के खुले हुए भागों में खेती होती है। नदी से नहर निकाल कर जगह जगह पर सिंचाई की गई है। गाँव किलेनुमा बने हैं।

ग़ज़नी से क्वेटा का मार्ग

नाम	ऊँचाई फुटों में	दूरी मीलोंमें	वर्णन
ग़ज़नी	७७२६		
यारघाटी	७५०१	१८	गालकोह श्रेणी के किनारे किनारे पहाड़ी रास्ता है। प्रदेश अच्छा है पर रास्ता रेतीला और पथरीला है। यारघाटी एक उजाड़ स्थान है। और अभ्यन्तर नालयों से यहाँ पानी मिलता है।
कर्रा बाग़	७३०७		
जामरात	७४२०		
ओबा	७३२५		
मूकलूर	७०६१	४४	यारघाटी से मूकलूर के ४२ मील के रास्ते में प्रायः ५०० फुट का उतार है। आखिरी मंज़िल में उतार और भी अधिक है। रास्ता गालकोह के ही किनारे चलता है।

नाम	उँचाई फुटों में	दूरी मीलों में	वर्णन
			नालियों द्वारा सिंचाई होती है। घास और अनाज प्रधान फसलें हैं। सेब, नाशपाती, बादाम, अनार आदि फल बहुत होते हैं। ख़ास मुकलूर में और भी अच्छी खेती है। जिन चश्मों से यहाँ सिंचाई होती है वे ही चश्मे तारनाक नदी के निकास बतलाये जाते हैं।
गोजान	७०६८	१४	मुकलूर से गोजान तक घास वाले मैदान में होकर रास्ता जाता है। आस पास का प्रदेश एक पठार है जहाँ नालियों से सिंचाई होती है।
चश्मे पज़क चश्मे शादी मोमिन क़िला	६८१० ६६६८	१६	गोजान से मोमिन क़िले का रास्ता एक उजाड़ प्रदेश में होकर गया है। तारनक नदी से चार पाँच मील की दूरी पर चार चश्मे

नाम	उँचाई फुटों में	दूरी मीलों में	वर्णन
			हैं जिनसे आस पास के गांवों में सिंचाई होती है।
ताज़ी	६३२१	—	
सारे अस्प	५६७३	—	
क़लाते ग़िलज़ई	५७७३	४८	मोमिन क़िले से ताज़ी तक तारनक के दाहिने किनारे से रास्ता गया है। यहां पर नदी मटीली और तेज़ है। इसकी चौड़ाई २० गज़ है। किनारे छः सात गज़ ऊँचे हैं।
			ताज़ी और क़लाते ग़िलज़ई के बीच में नदी छूट जाती है। उजाड़ प्रदेश में होकर रास्ता गया है। जगह जगह पर कई सूखे नाले पड़ते हैं। सवेरे को धूल भरी हुई ठंडी हवा चलती है।
जलदक	५३६६	१४	सड़क उजाड़ प्रदेश में होकर गई है जहां बहुत थोड़ी खेती होती है। जलदक रेतीले भाग में बसा

नाम	उँचाई फुटों में	दूरी मीलों में	वर्णन
			है। कहीं कहीं कुछ झाड़ियां हैं। क़लाते ग़िलज़ई और जलदक के मध्य में दुर्रानी और ग़िलज़ई प्रदेश की सीमा है। सीमा पर मामूली कच्ची मिट्टी की हदबन्दी बनी है। इधर गांव बहुत दूर दूर पर हैं।
तीरन्दाज़	४८२६	१८	
शहरे सफा	४६१८	१४	प्रदेश उजाड़ है।
खैले आखन	४०१८	१५	इस जगह पर तारनक नदी ख़त्म हो जाती है। बूंद बूंद करके पानी टपकता है। बुखार बहुत फैलता है।
महमंद किला	३६४५	१५	ख़ैल आख़न के बाद नदी छूट जाती है। पश्चिम की ओर ढाल वाला क़न्धार का मैदान आ जाता है। शोरा मिला रहने से अभ्यन्तर

नाम	उँचाई फुटों में	दूरी मीलों में	वर्णन
			नालियों का पानी खारी और ख़राब है।
क़न्धार	३२००	१०	रास्ता क़न्धारी मैदान में होकर गया है।
मूँद हिसार		१२	प्रदेश कुछ कुछ समतल और आबाद है। रस्ते में तारनक घाटी पार करनी पड़ती है।
माकू		१६	अधबीच में हलमन्द की सहायक अरगेसान नदी पार करनी पड़ती है।
मेख मांडा		१८	४१०० फुट ऊँचा बारघाना दर्रा पार करना पड़ता है। नीचे उतरने पर दोरी की घाटी मिलती है। यहां खेती ख़तम हो जाती है। नदी का पानी नमकीन है। घास भी नहीं है। तख़्ते पील के पास दोरी नदी छूट जाती है।

नाम	ऊँचाई फुटों में	दूरी मीलों में	वर्णन
गातई		१४	गातई पहाड़ियां भी वीरान हैं।
दुन्दे गुलाइ	४०००	६	प्रदेश उजाड़ है पर पानी मीठा मिलता है।
चाआ काह	५६००	११	दुन्दे गुलाइ से आगे सड़क ऊँचो होती जाती है। चमन के बाद जंगली पौदे और फल के पौदे भी बहुत हैं।

यहां से आगे खोजक कोतल तक १००० फुट की चढ़ाई है। लोरा नदी के उस पार पिशनि घाटी है। फिर बलोचिस्तान का पहला गांव कचलाक है। यहां से क्वेटा को सीधी १२ मील सड़क है।

क़न्धार

ऐसा कहा जाता है कि क़न्धार पहिले पहल सिकन्दर (महान्) द्वारा बसाया गया था। तब से आज तक अरब तातार, और फ़ारस वालों द्वारा यह कई बार बिध्वंस किया जा चुका है। नादिरशाह ने तो १७३८ ई० में इसे बिलकुल उजाड़ दिया और वहां से दक्षिण-पूर्व के कोने पर ४ मील की दूरी पर नादिराबाद नाम का एक दूसरा शहर बसाया, लेकिन वह बहुत दिन तक आबाद न रह सका। नादिरशाह के बाद उसके उत्तराधिकारी अहमदशाह अब्दाली ने उस शहर को एक दम चौपट कर दिया और १७४७ ई० में एक दूसरा शहर बसाया जिसको आज कल क़न्धार कहते हैं।

पुराने क़न्धार के खँडहर वर्त्तमान क़न्धार से ४ मील पश्चिम अब भी दिखाई पड़ते हैं। शहर पनाह की टूटी फूटी दीवारें इस घेरे के चारों ओर अब भी बनी हैं। उस पहाड़ी के सब से ऊंचे भाग पर जिस पर कि पुराना शहर बसा था एक गढ़ बना हुआ है और उस के इर्द गिर्द बहुत से गड्ढे हैं जिनमें फ़ौज के लिए पानी भरा रहता था। आस पास के रहने वाले अब भी खंडहरों को खोदते समय शोरा, गंधक और कभी कभी सोने के सिक्के तक पा जाते हैं। यहाँ की मिट्टी खोद कर खाद बनाने के लिए भी लोग ले जाते हैं। इस पहाड़ी के उत्तर-पूर्व के कोने तक कंकड़ की बनी हुई ४० सीढ़ियाँ हैं जो ऊपर एक फ़ुग्गा तक गई हैं जिसके प्रवेश द्वार के दोनों ओर एक एक बाँध बना है। कहा जाता है कि इन ४० सीढ़ियों, गुफ़ा तथा बांध के बनाने में ७० आदमी बराबर ९ वर्ष तक लगे रहे थे। गुफ़ा के भीतर फ़ारसी अक्षरों में लिखा है कि ९२८

सन् हिजरी के शव्वाल महीने में बाबर बादशाह ने कन्धार को जीत कर अपने लड़कों (अकबर और हुमायूं) को इस की रक्षा के लिए क्रमानुसार नियत किया। इस के बाद काबुल और बङ्गाल के बीच के बड़े बड़े शहरों के नाम हैं जिनको बाबर ने जीता था।

हिन्दूकुश और कोह बाबा (पहाड़) उत्तरी अफ़ग़ानिस्तान को प्रधान देश से अलग करते हैं। इसी लिये उत्तरी भाग की रक्षा करना भी कठिन है। पूर्वी हिन्दूकुश के ख़ास दर्रे ये हैं:—

(१) किलिक
(२) बेरोग़िल
(३) दोरा (चित्राल)
(४) नुकसान

सब मिल कर पूर्वी हिन्दूकुश में आठ-दस दर्रे हैं। दोरा दर्रे तक जितना प्रदेश है उस से लोग भली भांति परिचित हैं। बाखन और पंजा घाटी से गिलगिट और चित्राल की पहाड़ी घाटियों में पहुँचाने वाले रास्ते कुछ और अच्छे हैं। दक्षिण की ओर उतार एक दम ढालू है। दोरा दर्रे से दक्षिण-पश्चिम की ओर प्रायः अज्ञात प्रदेश है। ऊपरी कुन्दूज और बलख नदियों से दस बारह रास्ते ऊंचे (११५०० से १२८०० फुट) दर्रों के ऊपर होकर कोहिस्तान और काबुल को गये हैं। इस उजाड़ और पहाड़ी देश को पार करने के बाद उत्तर से आने वाले यात्री को हाजीगक (१२१०० फुट), उनाई (१०,६०० फुट) और इराक (६००० फुट) दर्रे पार करने पड़ते हैं। हाजीगक दर्रा पश्चिमी हिन्दूकुश को प्रधान श्रेणी में स्थित है। यहीं बामियान दर्रा है। इस प्रधान पर्वतश्रेणी के मुख्य मुख्य दर्रे ये हैं:—

१ खावक, २ तिलक, ३ बज़रक, ४ शिबार, ५ बामियान, ६ मलाकन्द।

हाजीगक दर्रे से बहुत ज्यादा आना जाना होता है क्योंकि यह बामियान से काबुल आने जाने वाले सीधे रास्ते पर पड़ता है। मध्य आमू दरिया से काबुल शहर और सिन्ध घाटी के लिये यही सब से अधिक सुगम मार्ग है। इस रास्ते में बामियान तक तोपें भी आ सकती हैं। सड़क बलख़ से मज़ारे शरीफ़ को आती है। वहां से ताशख़ुरगन हाजीगक और उनरई दर्रों से होती हुई काबुल को आती है। पहाड़ों के उत्तरी ढालों पर बहुत ही कम काम आने वाली छोटी छोटी पगडंडियां

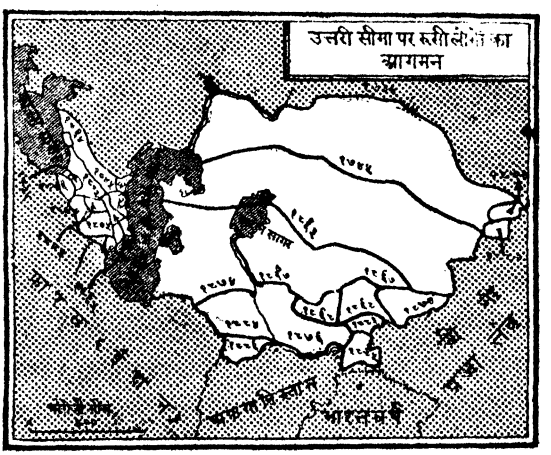

(इसका विवरण संक्षिप्त इतिहास में देखिये)

हैं। ये तेरह चौदह हज़ार फ़ुट ऊँचे दर्रों पर होकर गुज़रती हैं। इस ओर सब से अच्छा रास्ता कुन्दूज़ से शुरू होता है और कुन्दूज़ की घाटी के किनारे किनारे चल कर काश्म शान दर्रे पर पहुँचता है। वहां से आगे चलकर वह पंजशीर नदी पर बसे हुये चारीकार नगर को आता है वहां

पर सब मिल जाते हैं और काबुल की ओर जाते हैं। इधर खाने पीने की बड़ी कमी है।

बामियान के पास कोह-बाबा (हिन्दूकुश की शाखा) दक्षिण पश्चिम की ओर चला गया है। यह पर्वतश्रेणी हिन्दूकुश से नीची है, फिर भी बड़ी दुर्गम और चौड़ी है। केवल मर्व-कुरुक-हिरात और फरा नगरों को जोड़ने वाली सड़क इसे पार करती है। यहां पर पर्वतश्रेणी की चौड़ाई २४० मील है। इसके पश्चिम में श्रेणी और भी कम ऊँची रह गयी है फिर भी इसकी ऊँचाई पांच छः हज़ार फुट है।

सफेद कोह और सियाह कोह के दक्षिणी ढाल बिलकुल उजाड़ हैं। उन में खेती का नाम भी नहीं है।

उत्तरी ढालों से निकलने वाली नदियां पर्वत-श्रेणियों के साथ समकोण बनाती हैं। इनकी घाटियां बड़ी स्वास्थ्यकर और उपजाऊ हैं।

मुरगाब हरीरूद और हलमन्द की घाटियाँ दक्षिण-पश्चिम की ओर हैं। ये घाटियाँ कम उपजाऊ और आबाद हैं। पर इनकी मध्य घाटी काफ़ी उपजाऊ है। हिरात ज़िले में अनाज खूब पैदा होता है। जानवर भी बहुत हैं। हिरात को उत्तरी अफ़गानिस्तान की कुंजी समझना चाहिये।

हिन्दुस्तान से अफ़गानिस्तान में पहुँचने के लिये ५ दरवाज़े हैं। ख़ैबर, कुर्रम, गोमल, थालचोतियाली और बोलन के दरवाज़े उजाड़ पहाड़ी प्रदेश में पड़ते हैं। ख़ैबर और कुर्रम के रास्ते सीधे काबुल पहुँचते हैं। थालचोतियाली और बोलन दर्रे यात्री को कन्धार पहुँचाते हैं। गोमल का मार्ग ग़ज़नी अफ़गानिस्तान का मध्यवर्ती शहर है। यह शहर उस सड़क पर बसा है जो काबुल को कन्धार से जोड़ती है। सभी रास्ते विकराल हैं। ख़ैबर का रास्ता पेशावर से शुरू होता है और सबसे छोटा

है। यह रास्ता साल भर खुला रहता है। अब इस रास्ते में लंडीकोतल तक रेल चली गई है। जमरूद और लंडीकोतल तक फासला सिर्फ २७ मील का है, पर उसमें ३४ सड़कें पड़ती हैं। खैबर के बाद सेना और व्यापार के लिये दूसरा नम्बर बोलन दर्रे का है कन्धार और हिरात पहुँचने के लिये यही सबसे अधिक सुगम दर्रा है। हिन्दमहासागर भी पास ही है। पहाड़ी कटिबन्ध कुल १२० मील है। आधे मार्ग में एक छोटी नदी की तङ्ग घाटी है। बरफ़ पिघलने या वर्षा होने पर यह एकदम उमड़ आती है और किनारे पर डेरा डालने को भी जगह नहीं बचती है। चूंकि काफिला अक्सर आता जाता रहता है, इसलिये सफ़ाई भी कम रहती है। इसके हिन्दुस्तानी सिरे पर भयानक रेगिस्तान है। इसलिये यह मार्ग सरदी के ही दिनों में अच्छा रहता है। पर कुर्रम नदी के मार्ग में ११५०० फुट ऊँचा शुतर्गदन दर्रा पड़ता है जो सरदी में बरफ से घिर जाता है इसलिये उस रास्ते से सिर्फ़ गरमी में ही यात्रा हो सकती है।

अफ़ग़ानिस्तान का पठार कन्धार के पास सिर्फ़ २१०० फुट ऊँचा है। काबुल में ६५०० फुट पर गज़नी में ८००१ फुट, ऊँचा है।

भाषा

अफ़गानों को छोड़ कर दूसरे फ़िरकों की भाषा प्रायः फ़ारसी है। शिक्षित अफ़ग़ान भी फ़ारसी बोलते हैं। अफ़ग़ान तुर्किस्तान की भाषा तुर्की है। सर्वसाधारण लोग पश्तो बोलते हैं। पर हलमन्द नदी के पश्चिम में इस भाषा के बोलनेवालों का प्रायः अभाव है। यह भाषा बहुत पुरानी नहीं है और प्रायः संस्कृत और फ़ारसी के मिश्रण से बनी है। इसमें कुछ कविता की पुस्तकें हैं।

पश्तो भाषा के कुछ भौगोलिक शब्द, कहावतें और कहानियाँ अलग दी जाती हैं। पाठकों के मनोरंजन के लिये हर पश्तो कहावत के साथ साथ उसका हिन्दी अनुवाद भी दिया जाता है।

शब्द	अर्थ
अलगद	पहाड़ी नदी की तली
कमर	टीला
रवर	मटीले रङ्ग का
रबुला	नदी का मुहाना
लिता	ज़मीन
नरई	दर्रा
पुङ्गा	किसी पहाड़ी टीले पर खुला हुआ चरागाह
सर	चोटी
सपीन	सफ़ेद

शब्द	अर्थ
सुर(म) या सरा(फ)	लाल
तंगी	तंग रास्ता
तिज़ा	चट्टान
तोई	बहती नदी
वाम	खेत
ज़ियारत	पाक स्थान
ज़ोवा	सपाट ढाल
वरीद	सीमा, हद

स्थानीय कहावतें

(१)

दी द शिया क़ब्र दी जर गन्द सर्पी ऊ प् कुनवो तूर दी।

वह शिया के क़ब्र की तरह बाहर सुफेद भीतर काला है।

(२)

खतक के नग़ा सवार दोद पुवा वारदी।

गो कि कटक एक अच्छा सवार है लेकिन वह एक हमले से ज्यादा नहीं कर सकता।

(३)

यारी लह हरचा सरह न वा दी बी खत क पीत खतक।

सिवाय कटक के सब की दोस्ती अच्छी है ख़ुदा करे कटक शैतान के सुपर्द हो।

(४)

चे नःकरी ईसकीये या व खरह करी या व सपई।

जो कि इसकाई औरत से शादी नहीं करता वह गदही से निकाह कराने के लायक़ है।

(५)

द मुग़ल ज़ोर प देहक़ां प ज़मक़ा।

मुग़ल किसान पर जुल्म करता है और किसान ज़मीन पर।

(६)

तूर मार मः वज़ना ऊ तूर जत मर करह ।

काले साँप के बदले काले जात को मार डालना ज़्यादा अच्छा है ।

(७)

वज़र कह मन्द के खपला कोना बबर ?न्द कह ।

अगर वज़ीर हमला करेगा तो तुरन्त भाग जायगा ।

(८)

द शिया उदस पतेज़ न मा तेज़िये ।

शिया के बाज़ बहती हुई हवा की तरह व्यर्थ नहीं जाते हैं ।

(९)

द ग़ारा सिरी न सिरी ।

एक पहाड़ी आदमी, आदमी नहीं है ।

(१०)

लड़ ज़ुन्दी कुन्दों मर कुन्दी न बः दी ।

एक मुर्दा कुन्दी ज़िन्दा कुन्दी से कहीं अच्छा है ।

(११)

मतूज़ा लह वूज़ी सिरह वज़ा लड़ शीरक सिरह ।

घर के अन्दर पंखा चाहिये और बाहर कम्बल ।

(१२)

गर नंग व खुर दामान कुलंग ब खुर ।

डाह पहाड़ को खा डालता है और मैदान (खेत) को लगान ।

सहयोग

(१)

चे नस्वा न् ई गोनवी वी नेतव न् ई गोनवी वी ।

जो लोग खाना अलग खाते है अपने रीति रिवाज को अलग कर लेते हैं ।

(२)

ग़ोइये दो नबु प् ज़ोर चली ज़ो ऊ हल दमत प् ज़ोर ।

बैल घास के बल पर काम करता है और हल बैल के गर्दन पर ।

(३)

द युवा लास तक न खेज़ी ।

एक हाथ हथेली नहीं बजती ।

बुज़दिली

(१)

चे जंग सूर शह मरीई तवद शह ।

जब भगाड़ा ख़तम पर हुआ ग़ुलाम गर्म हुआ ।

(२)

तोरह प् जंग कुम्बी कोतक ग़वारी ।

बगल में तलवार के अलावा डंडा भी रखना चाहते हो ।

रीति रिवाज

(१)

लह कुली व तम तह लह नर खःई मः तमतः

गाँव भूल जाओ मगर वहां के रीति व रिवाज न भूलो ।

मृत्यु

(१)

मर्ग हक़ दी गोर कफ़न पू शक दी ।

मृत्यु अवश्य है मगर कफ़न के लिये शक है ।

(२)

जन्नत न बः जाय दी ख़ूवर तलल दज़रह पू चाव दिलदी ।

स्वर्ग अच्छा स्थान है मगर पहुँचना कठिन है, (बिना दुख, सुख नहीं) ।

दुश्मनी

(१)

कांरी ब पोस्त दुश्मन ब् दोस्त नशी ।

न पत्थर नरम होगा न दुश्मन दोस्त होगा ।

(२)

द पम्बता न् बदी दू सरी ऊर दी ।

पठानों की दुश्मनी बहुत दिन सुलगती है ।

क़िस्मत

(१)

कह तू लार शीतर काबुला बरख़ा ब् जीदर पसी ख़पला ।

चाहे पूरब जाओ चाहे दक्खिन (काबुल) वही करम के लच्छन ।

दोस्ती

(१)

बिनह क़िस्सा बल तह कोह विनह ख़्वारा ख़पल तह बर कोह ।

मधुर बचन सब से बोलो पर मित्र को अच्छा भोजन दो ।

(२)

बरबरी बरबरी हिसाब लहमि याना ।

भाता का प्रेम बहुत अच्छा है पर कुछ रह ही जाता है ।

ईश्वर

(१)

जोक चेह खुदाय शरमुई दावम्ब् द पासाई सपी व खुरी ।

ईश्वर के आगे कुछ नहीं चलती ।

(२)

क रू न द खुदाई प करह शो न् द् मुल्ला प् खोला ।

ईश्वर सब कार्य की पूर्ति करता है न कि मुल्ला का मुँह ।

(३)

चे न् वर कुये मौला जे ब वर कूये दौला ।

जब मौला ही न दे तो दौला क्या करे ।

दुर्भाग्य और सौभाग्य

(१)

बूब् प् ऊ् दौरी ।

पानी पानी पर गिरता है । रुपया रुपये को खींचता है ।

नेकी और बदी

(१)

ज़र चे बाक वी लेह ऊराई जे बाकवी ।

सांच सुवर्ण को आँच का क्या भय ।

(२)

चे दू ख़ाम कमाग्वारी कमा बू ई ख़पला शी ।
जो सब की (दूसरे) बुराई चेतता है उसकी ख़राबी होती है ।

जल्दबाज़ी

(१)

दमकको तग़ प सब्र लन्देज़ी ।
सब्र से मक्का की यात्रा हो सकती है ।

घर

(१)

हर सरी पू ख़पल वतन कुनवो बादशाह दी ।
हर एक जन्मभूमि में बादशाह है ।

इज़्ज़त

(१)

दरि याव पू लुम्बी नू वू चाज़ी ।
नदी एक प्याले से सूख नहीं जाती ।

(२)

फ़कीर कलह दू सपज़ी दू पाएकुनद प ऊर अचोई ।
फ़कीर चीलर से बचने के लिये अपनी गुदड़ी जला देता है ।

धन और तन्दुरुस्ती

(१)

लरा दे अवादा करा चू पाता बरा शवा ।
क्या सहल काम कर लिया जो कठिन काम रह गया ।

(२)

प हल खतमी न ब् न् पू रा शह ।

जोतने के दिनों में तय कर लो न कि फ़सल के काटने पर तय करोगे ।

(३)

पू परदीउ दर वजू बांदी गेयद बनौ करल सरा लांदी ।

फ़सल काटने वाले दूसरों के कटाई पर लड़ते हैं ।

(४)

के वदीही गुरुसत तू बू शी पू जा मू पत के न् देही गुरु सत तू बू गुरुजी लगर जत ।

अगर तुम फ़ड़ुवा से ज़मीन खोदोगे तो बचे रहोगे नहीं तो गर्दन और सर को पिछाड़ कर चले जावोगे ।

(५)

शल वरजी कन्दून कोह योह बरज ऊब लगोह ।

(६)

पोली तह देहोला करा हीला दह न् हीला करा ।

तुमने बन्दा पर विश्वास किया और उसने विश्वास घात किया ।

(७)

चे पू खपला कर्दन्द गुरजी शब्दी कू वी तोल गोरी शी ।

अगर कोई खुद अपने फ़सल की निगहवानी करता है तो दूध घी हो जाता है ।

(८)

ऊबू पन्दी करह बा जेरी गो वन्दी करा ।

अगर पानी भरोगे (सींचोगे) तो बाजरा काटोगे ।

(९)

चेप तल रूरह वी प् तानद ओ वह नेस्तो वी ।

जब कि तल में बहुतायत से है तो सींची हुई ज़मीन में कुछ न होगा ।

(१०)

तानद वा व् व् दे मोर के ओ चोब व् दे सपूर के ।

सींची हुई ज़मीन तुम्हारा पेट भर देगी मगर बिना सींची हुई सवार बना देगी ।

(११)

चे मस्का द का करी दक व् दे करी चे मस्का वज़ी करी वज़ी व दे करी ।

अगर ज़मीन का पेट भरोगे तो वह तुम्हारा पेट भरेगी ।

(१२)

चे कातिक क्यों ज़ीप् नौबला परियाज़ी ।

जब कातिक आरम्भ होता है तो ज़मीन की तरी दूर हो जाती है ।

(१३)

बस लेह नबकी सपरली ल प् सह ।

गर्मी दक्षिण और पूरब की, और बहार उत्तर की अच्छी होती है ।

(१४)

चेलह तल सरहई कार वी हेग़ा तल प् राम हसार थी ।

जिसकी ज़िन्दगी तख़ पर बसर हुई है उसे बहुत हिफ़ाज़त की ज़रूरत है ।

(१५)

चे प आस्मान ऊर शी मालगा ऊ ब शी ।

जब आसमान घिरा होता है तो निमक पानी बन जाता है ।

(१६)

सपीना दौर दिल कुये तूरा दार दिल कुये ।

सफ़ेद आसमान से वर्षा और काले से विघ्न पड़ता है ।

(१७)

चेप् दु गुल्ठ् नवी बारान् न चेबी वक्त बांरा दौरी जेई की ।

बे समय की वर्षा से क्या लाभ ।

(१८)

पगन्द्रई परजत्री चैत्रयी लतवी ।

फ़ल्गुन जानवरों को तबाह करता है और चैतार जानवरों को जिलाता है ।

(१९)

जनावेरौं जेली वो परज़ूल वू नवम् द पगन्न वदशह ।

तसला जानवरों को तबाह करता है और फागुन बदनाम होता है ।

(२०)

चे रा व् ख़ेजी गोपान वया मह करा मूंगां ।

जब गौधरिया की तरई निकलती है तो चना की बोआई बन्द हो जाती है ।

(२१)

चरा व ख़ेजी तली वया मह करा कंजली ।

जब मेख दिखलाई देता है तेलहन की बोआई बन्द हो जाती है ।

(२२)

शूली चे तरंगेजी तबी लंगेजी ।

जब धान बाली में होता है तो ज्वर फैलता है ।

(२३)

प वक्त नमू नजूना कोह बी वक्त लसना काह ।

मौक़ा पर दुआ कर और किसी वक्त खेत निरा ।

अज्ञान और मूर्खता

(१)

ख़तलई पतौत ज़दा नवी ऊ मला के कर तह ।

जब तक कीकर पर चढ़ने को न तैयार होगे शहतूत पर न चढ़ोगे ।

(२)

खकी तर मक्की लारशी च बीर तू रा शीहेगा खरदी ।

गदहा गदहा ही है चाहे मक्का ही हो आये ।

(३)

चे मेवी ई द काबुल खुर लो न वी द हेगा तर फहम बरे वी गोर गोरी ।

जिसने काबुल के फल नहीं चक्खे वह जंगली बेरों को बहुत अच्छा बताता है ।

(४)

लह जरूरा खरहम अवा ब लाशी ।

काम पड़ने पर गदहे को भी बाप कहते हैं ।

ख़ुशी और रंज

(१)

द अस मला जन्नत दी गेदाई दोजख़ दी ।

घोड़े की पीठ स्वर्ग है और पेट नर्क ।

(२)

ऊब ब तैरी शी कांरी ब पाता शी ।

पानी बह जायगा और पत्थर पड़ा रहेगा ।

ज्ञान

(१)

कार च वे उस्ताद वी बे बुनियाद वी।

बग़ैर उस्ताद के इल्म की नींव नहीं।

मेहनत

(१)

गुम्ता ई द मज़दूर गवन्दे .खुरा ई दू जीन वतने गवन्द।

मज़दूर की तरह कमा बादशाह की तरह खर्च कर।

(२)

चे काज़ा पतवेरी वरी हेरा उम्बानदी।

(३)

पू युवा लास लू कोह पू वल लल कोह हेच पर वा दे नशता जेरह कुल कोह।

एक हाथ से काटो दूसरे से जमा करो फिर बे परवाह होकर अपनी रोटी खाओ।

(४)

के मीलमह ई अस्त खू नई।

गो कि आप मेहमान है मगर मुर्दा आदमी तो नहीं हैं।

(५)

सेन्दूर च सूरदी जोर दू तनूर दी।

सेन्धुर जो लाल है भट्टी के ज़ोर से है।

झूठ

(१)

दरोग़ ई मीरा बक्स दी।

झूठ बोलना ईमानदारी का बाज़ू है।

(२)

मुद्दई सुस्त गवाहे ई चुस्त ।

मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त ।

(३)

सेरी मुरदार दो प लोज हलाल दी ।

एक आदमी खाने से नापाक होता है मगर वह बात का पक्का है तो पवित्र है ।

उदारता और कृपणता

(१)

अव्वला वर्ज बादशाह बला वर्ज वजीर बला वर्ज ल खावर वेा खमीर ।

पहिले दिन बादशाह दूसरे दिन वज़ीर और बाद को मिट्टी में (इज़्ज़त) मिल जाती है ।

(२)

शुनी गोरगोरो मीन खुरो प् पखूपशी गुरजीदम् पनरी मी वा एललो ।

मैंने पास की कच्ची बेरों को नहीं खाया और पक्की बेरों के ढूँढने में जूता खो दिया ।

(३)

अखवन्द अखवन्द मार दी द घनौ जवा नान् कार दी अखवन्द अखवन्द दिलवर दी योजा यम वल मी जोय वल मला अकबर दी ।

अरे अरे यहाँ नौजवान के वास्ते साँप है और मेरे और मेरे बच्चों और मुल्ला अकबर के खाने के लिये गोश्त की रकाबी है ।

यायन

(१)

नारां पू बारह व शह ऊ ख़रा ई द ख़ालसी यूवरल ।
बारह में वर्षा हुई और ख़ालसा के गदहों को बहाँ ले गई ।

(२)

मुल्क़ ख़राक़ वीरान् क ऊ नवम दू क़ार गानू वद शुद ।
चढ़ूल ने मुल्क को बर्बाद किया और कौआ बदनाम हुआ ।

बुढ़ापा

(१)

सपीना जेरा गावन्द कन्दास वा दे न ख़स्त द दुनिया ल चारू लास ।

गो डाढ़ी सुफ़ेद हो गई और दाँत गिर गये मगर दुनिया के काम से फ़ुरसत न मिली ।

(२)

ल सपीनो ज़ेरी .खुदाई हम हया कूई ।
.खुदा को बुड्ढे पर भी रहम आता है ।

ग़रीबी

(१)

द ख़ार अख़वन्द पू वाँग जोक कलीमा हम न वाई ।
ग़रीब महन्त के दावों पर कोई क़िके को नहीं छोड़ता ।

(२)

नेस्ती पाक अ बादशाही देह दौलतमन्दीये लह लज्जत ख़बर न दी ।

ग़रीब बादशाहत है अमीर इसकी ख़ुशी से वाक़िफ़ नहीं ।

(३)

द ख़ार चीर को तिल द जोरावर व सपीज ली।

अमीर आदमी का कुत्ता ग़रीबों के बकरी के बच्चों को फाड़ डालता है।

(४)

प मीरू-ख्वार प हदू ख्वार।

अगर ग़रीब है तो कमज़ोर है।

(५)

उम्बद .खू प पैसा दी चे पैसा न लरम जेत्रो करम।

चाहे ऊँट एक पैसे को मिले जब हमारे पास पैसा नहीं तो कैसे ख़रीदें।

(६)

ख्वारान् माल प पलू जेरी।

ग़रीब के ग़ल्ले सरहद पर चरते हैं।

(७)

युवा गी खरा युवा मीकता न ल पूर तू मी पुरुत्रासता न ल वकंता।

मेरे पास एक गदहा और एक ज़ीन है मुझे किसी तरह की तकलीफ़ नहीं।

घमंड और स्वार्थ

(१)

वज़ीक प मोज़ी पूरो खन्दल च दलूत कोना दे वर्क शह।

बकरी दुम्बा को कोसे कि तुम्हारे नंगे पुट्ठों को आग लगे।

(२)

हर जोक वाइये चे जमा द ग़ार की खन्द बेनह दी ।

हर एक कहता है कि दूध वाले चमड़े की महक मीठी होती है ।

(३)

के खुराग परदी वो बगीदा ,खू दे खगला वह ।

गो कि खाना दूसरे का था पेट तुम्हारा था ।

बल

(१)

हक़ विनद्दो बी जोरा हेच न दी ।

ठीक (आदमी) होना अच्छा है मगर बग़ैर ताक़त बे फ़ायदा है ।

(२)

सलनका द ज़र गर यू द आहंगर ।

सौ सोनार की न एक लोहार की ।

(३)

चे लूये दौलत ,ग्वारी लुये दे ,दानत ग्वारो चे लूये बेलायत ग्वारी रोग दे सूरत ग्वारी ।

जो दौलत चाहे उसे दयानतदार होने दो मगर सल्तनत चाहने वाले को ताक़तवर होना चाहिये ।

धन

(१)

दुनिया द हग़ा दह चे ,खुरी ई न चे साती ई ।

दौलत इस्तेमाल के लिये है न कि जोड़ने के लिये ।

(२)

जवानी दे वी गुरी दे न वी ।

जवानी होना चाहिये न कि घी ।

स्त्री

(१)

द पलार द कोर ल स्वारी बह खलासा शी ऊद सखर द कोर ल स्वारी ब खलासा न शी।

औरत ग़रीबी से बाप के यहाँ से भाग सकती है मगर ससुराल से नहीं।

(२)

मोरई कसा लोरई नसा

मां से लड़की मिला लो।

(३)

बनज़ अ या प कोर कम्बी बेना द या प गोर कम्बी।

औरत चाहे क़ब्र में रहे चाहे घर में अच्छी है।

(४)

ग़रुन्ना वी उबू न वी कोरो न वी मीरू नवी।

न पहाड़ियाँ बिला पानी के न गांव बिला शौहर के हैं।

(५)

द ,खुर लोर प लम्जो अबस वूये स्वारी।

लड़की को क़ालीन बुनने के लिये अधिक मेहनत करना फ़िजूल है।

सदाचार और नीति

(१)

जो चे उम्वां साती दर वाज़ी दस्तरी लरी।

जो ऊँट रक्खें उन्हें ऊँचे दरवाज़े रखने चाहिये।

(२)

प दूब्रिया नौ पूरी ख़पल नौ कोना उरशोल।

रंगरेज़ के लिये उसके नाख़ून आग हो जाते हैं।

(३)

के चर्ग बांग न वाई हम सबाय शो ।
कौआ चाहे बोले चाहे न बोले सुबह ज़रूर होगी ।

(४)

जो मरह चे दे पतोनी वी हुमरा पम्बी ग़जवा ।
चादर देख कर पांव फैलाना चाहिये ।

(५)

लका चे ग़रोजी हसी न दौरीजी ।
जो गरजता है बरसता नहीं ।

(६)

ग़वा क तूरा दह पीई स्पीनो दी ।
गाय चाहे काली हो दूध सफ़ेद होगा ।

(७)

शहर प शैवा ख़ुर शो न क तूरा ।
शहर को हिकमत से लेते हैं न कि तलवार से ।

(८)

जे रंग चे करो हसी व रेबा ।
जैसा बोवोगे वैसा काटोगे ।

(९)

द आस लता आस सिई ।
घोड़ा घोड़े के चाट को सह सकता है ।

(१०)

लवी नौ जूना लह लो युत गरूनो राजीऊ लोयो नास्ठू तजी ।
बड़े नदियाल बड़े पहाड़ से आते हैं और बड़े दरिया में गिरते हैं ।

(११)

चे ज रंग सायत दासी मस्लहत ।

जैसा मौक़ा वैसी बात ।

(१२)

चे न तीरी न ख़रजोई बाज़ार वले तन्गोई ।

जब ख़रीद फ़रोख़्त नहीं करते तो क्यों बाज़ार में जगह लिये हो ।

(१३)

पतुई उम्बां ऊ जी तेयत तेयत ।

ऊँट की चोरी निहुरे निहुरे ।

(१४)

ऊ बू वरी वती त ल.स अचूई ।

डूबते को तिनके का सहारा बहुत है ।

(१५)

जाजकी जाजको च तोले जी लूये दरियाय वरना जोरे जो ।

फुई फुई तालाब भरता है ।

(१६)

द वज़ी तर फ़हम रोता पोलाब दी ।

भूखा जौ की रोटी को पोलाव समझता है ।

(१७)

द युवा लास गोती हम प युवा शान न दी ।

पाँचों अँगुलियां बराबर नहीं होतीं ।

(१८)

या लूयो ग़रू तज या लूयो कोरो तज ।

या ऊँचे पहाड़ों पर जाओ या बड़े ख़ानदानों में रहो ।

(१९)

बलार प ख़तूलार ।

जो दलदल में चुप खड़ा रहा डूब गया ।

(२०)

मर ग़लरी प गोजल कुम्वी मग़ोर जव ।

गाय के चरनी में मोतियां मत फेंको ।

(२१)

वेशली द ग़ोरो लायक़ी दी ।

अच्छी रोटी के लिये घी चाहिये ।

(२२)

उम्बानी न ज़रल बोरियेा ज़रल ।

ऊँट नहीं रोते बल्कि बोरे रोते हैं ।

(२३)

जग़र तूर वह ज लरू तूर कह ।

पहाड़ तो पहिले ही से काला था कुहरे से और काला हो गया ।

(२४)

वद वैलद जान दी ।

किसी की बुराई करना अपनी बुराई करना है ।

(२५)

प रिन्दो कुम्वी द युवी सतर्गा जैन वतन बादशाह दी ।

अन्धों में काना राजा ।

(२६)

चेल र क्की लरी वद हज्जई व शह च मक्की त नज्ञ दी वद दल हज्ज न पाता शूल ।

जो मक्का से दूर था हाजी हो गया और जो नज़दीक था न हुआ ।

कहानियाँ

(१)—एक कंजूस अखूंद की कहानी

एक अखूंद मुल्ला दान करने की शिक्षा दिया करता था और लोगों को कहा करता था कि जो कोई ख़ुदा के नाम पर ख़ैरात करता है दस गुना पाता है। जब उसकी स्त्री ने यह उपदेश सुना तो उसने एक दिन एक बड़े थाल में मिठाई भर कर मसजिद में भेजी, जिसको देख कर उसका पति बड़ा प्रसन्न हुआ, परन्तु जब उसने थाल पहिचाना तो मालूम हुआ कि उसकी स्त्री ने ही भेजा है। अतः उस रोज़ उसने इतनी देर तक प्रार्थना की कि सब लोग अपने अपने घर चले गये। जब कोई न रह गया तो अखूंद ने मिठाई का थाल उठाकर घर का रास्ता लिया। घर पहुँच कर मुल्ला ने अपनी स्त्री से कहा कि मेरी शिक्षा दूसरों के लिये है न कि तुम्हारे लिये। लेकिन उसकी स्त्री के दिल पर बिलकुल असर न हुआ। आख़िरकार मुल्ला ने उसे धमकाया कि अगर आइन्दा ऐसा करेगी तो मैं मर जाऊँगा। दूसरे दिन जब उसकी औरत ने दान किया तो वह (मुल्ला) बीमारी का बहाना करके मुर्दा बन गया। उसकी स्त्री ने जो कि उसकी चालबाज़ी को ताड़ गई थी, लोगों से कहना शुरू किया कि उसका पति मरते समय कह गया था कि दो रात तक उसकी लाश क़ब्र में दफ़नाई न जावे। लाश को नहा धुला कर, जनाजे पर रख कर, वह क़ब्रगाह ले गई और ख़ुद थोड़ी दूर पर तमाशा देखने के लिये जा बैठी।

रात में चार चोर वहाँ पर आये, जिन में तीन एक गिरोह के थे और चौथा अकेला था। तीन चोरों ने वादा किया कि जो कुछ माल आज हाथ लगेगा उसका दश श मुल्ला की क़ब्र पर चढ़ावेंगे। चौथे ने भी यही वादा किया परन्तु इस शर्त पर कि यदि वह छूंछा हाथ लौटा तो मुर्दे की खोपड़ी तोड़ देगा।

बहुत देर बाद चारों चोर लौटे, उनमें तीन तो मालामाल थे, परन्तु चौथा ख़ाली हाथ था, इसलिये उसने अपनी प्रतिज्ञानुसार एक ढेला उठा कर लाश की तरफ़ फेंका।

अभागा मुल्ला जनाज़े से उठकर चिल्लाया कि "तुम मुझे मार डालोगे" चोरों ने भूत समझ कर सब धन छोड़ दिया और डर कर भाग गये।

उसकी औरत जो कि छिपी हुई थी, आई और कहने लगी कि देखो यह एक थाल मिठाई की बरकत है। उसके पति ने जवाब दिया कि यह (धन) उसे मुर्दा बनने की वजह से मिला है इसलिये प्रतिज्ञा करो कि तुम कभी दान न दोगी। परन्तु औरत ने इससे इन्कार किया। तिस पर मुल्ला ने कहा कि तुम मुझे यहीं मरने के लिये छोड़ जाओ। स्त्री ने सारा धन इकट्ठा किया और उठ कर घर ले गई।

दूसरे दिन उसकी स्त्री लोगों को क़ब्रगाह पर ले गई और अपने पति से ज़िन्दा हो जाने के लिये प्रार्थना की, लेकिन वह मुर्दा ही बना रहा। तब उसने लोगों को मुर्दा दफ़नाने के लिये कहा और एलान किया की आज वह अपने पति का सारी जायदाद ग़रीबों को बाँट देगी।

इस पर पाखण्डी मुल्ला जनाज़े से उठ कर चिल्लाया कि "एक पैसा भी नहीं।"

इस घटना को भोले भाले लोगों ने सच समझा और कहना शुरू किया कि ख़ुदा बड़ा है जिसने मुर्दे को भी ज़िन्दा कर दिया।

२—बादशाह और पहाड़ी लुटेरे

एक लुटेरी जाति पहाड़ी प्रदेश में रहती थी जो कि उस देश से गुज़रने वाले काफ़िलों को लूट लिया करती थी। उसके इन कुकर्मों को सुनकर बादशाह ने उस जाति के मुखियों को बुलाया और उससे सौदागरों के लूटने की बुराइयाँ बतलाईं और आइन्दा ईमानदारी से ज़िन्दगी बिताने की शिक्षा दी और उन लोगों को कुरान की शपथ खिला कर कहा कि वे अब कभी किसी को न लूटें। ज्योंही वे पहाड़ी प्रदेश में पहुँचे उन्हें सौगन्ध का ख्याल जाता रहा और उन्होंने लूटना शुरू किया। बादशाह ने उन्हें फिर बुलाया और उनसे प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर करवाया कि अब वे नेक ज़िन्दगी बितावेंगे फिर उन्हें इनाम देकर बिदा किया। तिस पर भी उस जाति ने बादशाह की प्रजा को लूटना य सताना न छोड़ा।

बादशाह "किं कर्तव्य विमूढ़" होकर वज़ीर से कहने लगा कि इन लोगों को तो न शपथ न प्रतिज्ञा और न इनाम कुकर्म करने से रोकता है।

वज़ीर ने हँस कर कहा जहाँपनाह, उन लोगों को कुछ ज़मीन देकर राज़ी करें। ऐसा करने पर उन लोगों ने जवाब दिया कि शपथ और प्रतिज्ञा बेवकूफ़ी को रोकती है, कमज़ोर ताक़तवर को इनाम दिया करता है और जब तक हम लोग पहाड़ी प्रदेश में रहेंगे लूट कर ही ज़िन्दगी बितावेंगे जैसा कि हमारे पुरखा लोग करते थे। बादशाह ने गुस्सा हो कर कहा कि तुम लोग मनुष्य नहीं हो बल्कि जानवर हो। पस उसने एक फ़ौज उस देश में भेजी जिसने उन लोगों को तितर बितर कर दिया।

३—स्त्री की कृतघ्नता

एक राजा अपनी लड़कियों को पैदा होते ही इसलिये मार डालता

था कि वे बड़ी होकर उसको कष्ट पहुंचायेंगी। एक दिन जब राजकुमार अन्य लड़कों के संग खेल रहा था एक जल्लाद उसकी बहिन को, जिसको सिर्फ एक ही दिन पैदा हुए हुआ था, ले जाता हुआ दिखलाई पड़ा। इस पर एक ढीठ लड़के ने उसके पिता को धिक्कारना शुरू किया। राजकुमार शेरा तुरन्त ही अपने पिता के पास गया और अपनी बहिन की जान बख़्शने की प्रार्थना की। बादशाह ने गुस्सा होकर कहा कि मैं उसकी जान बख़्शता हूँ लेकिन याद रहे इसके लिये तुम्हें जन्म भर पछताना पड़ेगा। बादशाह ने भाई व बहिन को एक दायी के सुपुर्द करके अपने राज्य से निकाल दिया। दायी उन दोनों को लेकर जंगल में झोपड़ी बनाकर रहने लगी। कुछ साल बाद दायी मर गई। राजकुमार शेरा शिकार से अपना दिल बहलाने लगा लेकिन बिचारी मोती अकेली झोपड़ी में ऊबा करती। मोती के कहने पर राजकुमार शेरा उसके लिये एक हिरन का बच्चा पकड़ लाया, जिसको पाकर मोती बहुत खुश हुई।

एक दिन हिरन का पीछा करते करते एक राजकुमार मोती के झोपड़े तक आया और देखादखी होते ही दोनों एक दूसरे पर आसक्त हो गये। यह लोग राजकुमार शेरा की ग़ैरहाज़िरी में मिला करते थे। मोती ने भाई से छुटकारा पाने के लिये एक चाल चली। जब कि उसका भाई कमरे में खाना खा रहा था उसने उसे चारों ओर से बन्द कर दिया और अपने प्रेमी राजकुमार के पास चली गई और दूसरे दिन शादी भी कर डाली।

दैवयोग से एक सौदागर उस झोपड़ी के अन्दर पहुँचा और राजकुमार शेरा को मरने से बचाया। इस नीच कर्म से राजकुमार शेरा का मन मोती की तरफ़ से फिर गया और वह उसके मारने की फ़िक्र में पड़ा।

राजकुमार शेरा फ़कीर का भेष बदल कर मोती के पति के देश में

पहुँचा और अपने को पशुचिकित्सक मशहूर किया। एक दिन फ़कीर राजा का घोड़ा देखने के लिये बुलाया गया। यह घोड़ा राजकुमार शेरा का ही था जिस पर उसकी बहिन चढ़ कर अपने प्रेमी के पास आई थी। इस घोड़े ने शेरा के वियोग में दाना पानी छोड़ दिया था और मरने के क़रीब हो गया था। जब घोड़े ने अपने मालिक को देखा बड़ा खुश हुआ और उसका सारा दुःख दूर हो गया। अब वह अच्छी तरह से खाने पीने लगा और हृष्ट पुष्ट हो गया। इससे फ़कीर का बहुत नाम हुआ।

घोड़े की तरह बन्दूक भी शेरा के वियोग में व्याकुल थी और बिगड़ी हुई थी। मोती के पति ने कई कारीगरों को दिखलाया मगर बन्दूक ठीक न हुई आख़िरकार उसने फ़कीर को दिखलाया। फ़कीर को दिखलाते ही बन्दूक के पुर्ज़े दुरुस्त हो गये। जब फ़कीर बन्दूक ठीक कर रहा था उसकी बहिन मोती झरोखे से उसकी तरफ़ झाँक रही थी। ज्योंही फ़कीर ने मोती को देखा उसने बन्दूक का निशाना ठीक करके चला दिया, जिससे मोती मर गई।

जब बादशाह ने सब हाल सुना तो उसने कहा कि शेरा ने अपना फ़र्ज़ अदा किया है। इस तरह से बिचारी मोती का अन्त हुआ।

४—ग़रीब लकड़हारा

एक दिन बाज़ार में एक ठग ने एक लकड़हारे से पूछा कि लकड़ी के बोझ का क्या दाम है। लकड़हारे ने कहा चार आना। इस पर ठग ने चार आना उसको दिया और बैल सहित लकड़ी का बोझ लेकर चलता बना। जब लकड़हारा हल्ला मचाने लगा कि उसको धोका दिया गया है तो लोगों ने ठग की तरफ़दारी की और उसकी बात ठीक मानी।

दूसरे दिन लकड़हारा भेष बदल कर लकड़ी लाया और जब ठग ने दाम पूछा तो बोला कि एक मुट्ठी भर तांबे का सिक्का।

सौदा पट जाने पर ठग लकड़हारे को मुट्ठी भर तांबे का सिक्का देने लगा। लकड़हारे ने तांबे का सिक्का रख लिया और ठग का हाथ काटने के लिये चक्कू निकाला। इस पर दोनों में झगड़ा होने लगा और आखिरकार दोनों काज़ी के पास पहुँचे। काज़ी ने लकड़हारे के पक्ष में फ़ैसला दिया और हाथ काटने की आज्ञा दी।

निदान उन दोनों ने आपस में निपटारा कर लिया और ठग ने लकड़हारे का बैल लौटा दिया।

५—अतिथि सत्कार का फल

एक काबुली सौदागर जब दिल्ली आया तो एक हिन्दुस्तानी ने उसका बड़ा सत्कार किया। कई हफ्ते के बाद जब वह जाने लगा तो कहने लगा कि तुम मेरे यहाँ आवोगे तो मैं तुम्हारे लिये आग जलाऊँगा।

हिन्दुस्तानी चुप रहा और समझा कि यह कृतघ्न मेरे अतिथि सत्कार का क्या बदला देगा।

कुछ समय बाद दिल्ली का सौदागर काबुल को गया और अपने दोस्त के यहाँ उस समय पहुँचा जब कि बर्फ़ गिर रही थी। काबुली ने सौदागर को ऊपर के एक कमरे में ठहराया और उसको उम्दा खाना खाने के लिये भेजा। लेकिन बेचारे के हाथ और पैर जाड़े से इतने सुन्न हो गये थे कि उसने खाने को बग़ैर चीखे ही लौटा दिया और अपने दोस्त के पैर पड़कर कहने लगा कि ख़ुदा के वास्ते मुझे आग के समीप ले चलो। जब वह आग के समीप बैठने से स्वस्थ और गर्म हो गया तो विचार किया कि उसने अपने दोस्त को कृतघ्न समझने में बड़ी भूल की थी।

६—एक विद्वान् गधा

एक दिन एक जुलाहे ने मुल्ला के मुख से अपने एक शिष्य के लिये यह कहते हुये सुना कि वह उससे जल्दी एक गधे को पढ़ा सकता है। दूसरे ही दिन जुलाहा अपना गधा मुल्ला के पास लाया और कहने लगा कि इसको विद्वान् बनाइये क्योंकि मेरे कोई भी लड़का नहीं है। मुल्ला ने कहा मैं गधा नहीं पढ़ाता।

जुलाहे ने कहा कि क्यों झूठ बोलते हैं, कल ही आपने एक लड़के से कहा था कि मैं तुम से जल्दी एक गधे को पढ़ा सकता हूँ। मुल्ला पढ़ाने पर राज़ी हो गया और किताब के पन्नों के बीच बीच में अनाज रख दिया करता था जिससे कि गधा नीचे को मुख किये रहता और पन्ने उलटता रहता था। जब कि गधा पन्ना उलटने में होशियार हो गया तो मुल्ला ने जुलाहे को भेजा। जुलाहा बड़ी फुर्ती से मुल्ला के पास पहुँचा। जुलाहे ने मुल्ला से पूछा कि मेरा गधा पढ़ सकता है? मुल्ला ने उत्तर दिया हाँ पढ़ सकता है क्योंकि इसने आधी किताब गुलिश्तां की खतम कर दी है। मुल्ला ने पुरानी किताब गधे के सामने रख दी और जुलाहे को गधे से दूर बैठाया जिसमें उसको पढ़ने में बाधा न पड़े।

जुलाहा अपने गधे को पन्ने उलटते और मुंह खोलते मूँदते देखकर खुश हुआ और उसने घर का रास्ता लिया। दूसरे दिन मुल्ला ने गधे को बेच दिया। दो महीने बाद जब जुलाहे ने पूछा कि मेरे गधे की पढ़ाई समाप्त हुई कि नहीं? मुल्ला ने उत्तर दिया कि अब वह अलून्द हो गया है और इस शहर का काज़ी बन गया है। मुल्ला ने काज़ी का नाम उस से इस लिये बतलाया कि मुल्ला में और काज़ी में पुरानी दुश्मनी थी।

इसको सुनकर जुलाहा बड़ा प्रसन्न हुआ और स्कूल की सारी फीस चुका दी। दूसरे दिन जुलाहा सज धज कर और अनाज का थैला एक

हाथ में लेकर कचहरी की तरफ़ गया जहाँ कि काज़ी न्याय करता था। उसने थैले को ताउस में पड़े हुये काज़ी के सामने हिलाया और काज़ी को उसी प्रकार बुलाया जिस तरह कि वह अपने गधे को बुलाया करता था। काज़ी ने जुलाहे को पागल समझा और बहुत लोगों के मौजूद होने से डर कर जुलाहे को अकेले में बुलाकर पूछा कि वह क्या चाहता है। जुलाहे ने कहा तुम मुझे नहीं पहचानते मैं तुम्हारा स्वामी हूँ और सारा किस्सा कह सुनाया। काज़ी ने छुटकारा पाने की ग़रज़ से उससे कहा कि सचमुच मैं तुम्हारा गधा था लेकिन अब मेरी हालत बिलकुल बदल गई है और अब हम दोनों ऐसा करें जिस से लोग शक न करें ऐसा कह कर काज़ी ने जुलाहे को एक थैली भेंट की और उसे ख़ुश कर के बिदा किया।

७—एक अभागा पति

दो आदमी कहीं जाते थे उन्हें रास्ते में एक बुड्ढा मिला जिसने इन्हें सलाम किया। उनमें से हर एक ने समझा कि दूसरे को सलाम किया है, इस लिये दोनों ही सलाम का प्रत्युत्तर न दे सके। एक ने दूसरे से कहा कि तुम कैसे उजड्ड हो जो सलाम का जवाब नहीं देते। इस पर दूसरे ने कहा तू कैसा कृतघ्न कुत्ता है। झगड़ा इतना बढ़ा कि दोनों बुड्ढे से पूछने के लिये लौटे। उसने जवाब दिया कि उसने सब से ज्यादा स्त्री गुलाम को सलाम किया है। उन दोनों ने कहा कि उनमें से दोनों ही ऐसे हो सकते हैं। मसख़रे बुड्ढे ने उन लोगों से कहा कि आप अपने घरेलू तजरुबे बयान करें। पहले ने कहा कि मेरे एक ही स्त्री है और वह रोज़ खाना बनाने के लिये आग अपने पड़ोसियों के यहाँ से लाती है। एक दिन उसने बहाना किया कि उसके पैर में दर्द है और चलने में असमर्थ है। जिस पर मैंने कहा कि मैंने शपथ खाई है कि तुम्हीं आग लाया करो। इस पर उसने कहा कि तुम अपनी शपथ रख

सकते हो और मैं भी पैर की पीड़ा से बच सकती हूँ। तुम मुझे अपने ऊपर लाद कर ले चलो। अतः मैं उसको अपनी पीठ पर लाद कर पड़ोसी के यहाँ आग ले आने के लिये ले गया। जब वह आग पा चुकी तो मैं उसको लाद कर घर पर ले आया।

दूसरे ने कहा कि मेरी स्त्री गुस्सेवर है। तीन रात बीते मेरा मुंह शोरवा से जल गया, लेकिन जब मैंने अपनी स्त्री से कहा कि शोरवा बहुत गर्म था और मेरा मुंह जल गया तो उसने बेत उठाया और मुझ से कहा कि बतलाओ शोरवा गर्म था ? मैं डर कर भागा और अभी तक घर नहीं गया ? बुड्ढे ने हँस कर कहा "मैं अपना सलाम आप लोगों के बीच में आधा आधा बाँटता हूँ"।

पहिले आदमी की ओर मुंह कर के बुड्ढे ने कहा कि तुमने अपनी स्त्री को पीठ पर ले जाकर और ले आ कर पड़ोसियों की नज़र में अपने को सब से बड़ा स्त्री-दास सिद्ध कर दिया है। फिर दूसरे साथी की ओर मुंह कर के बुड्ढे ने कहा कि जब से तुमने अपना मुंह जला लिया है तब से तुम मार के डर से न घर गये हो न स्त्री को मारने की ही हिम्मत की।

संक्षिप्त इतिहास

अति प्राचीन समय में अफ़ग़ानिस्तान भारतवर्ष का ही अंग था। आज कल का अफ़ग़ानिस्तान उस समय गान्धार और कम्बोज के नाम से पुकारा जाता था। काबुल नदी के आस पास सिन्धु और कुआँर नदियों के बीच में गान्धार देश स्थित था। गान्धार देश में आज के पेशावर और होती मरदान ज़िले शामिल थे। बौद्ध काल और राजा कनिष्क के समय के विचित्र भग्नावशेष यूसुफ़ज़ई प्रदेश के रानी घाट, सघाओ और नत्तू स्थानों में मिले हैं। रामायण काल का गन्धर्व देश ही महाभारत के समय में गान्धार कहलाने लगा। इस देश की राजधानी पुष्कलवती थी। पेशावर का पचतीर्थ स्थान अब भी पुरानी याद दिलाता है। तक्षशिला में प्राचीन भवन और विहार गिरी हुई दशा में भी पुरानी महिमा का परिचय देते हैं। इसी गान्धार प्रदेश में व्याकरण भास्कर पाणिनी का जन्म हुआ था। पर उनकी जन्म भूमि में आज पश्तो का प्रचार है, दैव की लीला सचमुच विचित्र है।

कम्बोज प्रदेश गान्धार के उत्तर पश्चिम में था। यह देश घोड़ों के लिये प्राचीन समय से प्रसिद्ध रहा है। हिन्दू कुश के सियाह पोश लोग कम्बोज लोगों की ही सन्तान है। संस्कृत के कई पुराने ग्रन्थों में इन नामों का उल्लेख है। मुसलमानी काल में कुछ कम्बोज (या कम्बोह) लोग संयुक्त प्रान्त में आकर बस गये और अब तक उनकी सन्तान कम्बो कहलाती है। मेरठ शहर का एक दरवाज़ा ही कम्बो दरवाज़ा कहलाता है।

वेदों में सप्त सिन्धु का ज़िकर है। इस प्रकार पंजाब की पाँच नदियों के साथ साथ कुभ (काबुल) और क्रमु (कुर्रम) का भी उल्लेख

है। यदि इस समय के बदले हुये नामों के स्थान पर पुराने नाम* ही बरते जावें तो अफ़ग़ानिस्तान भारत की प्राचीन सभ्यता की साक्षी देगा। अरब ग्रन्थकारों ने भी हरिमन्द (हलमन्द) नदी को भारत की सीमा बतलाया है। इसलिये भारत के प्राचीन इतिहास में ही अफ़ग़ा-

---

*अभिसारि आज कल हज़ारा प्रदेश है। इसे अर्जुन ने विजय किया था।

अफ़ग़ानिस्तान = कम्बोज, कम्बु (ह्वान्सां) लोह (महाभारत) रोहि।

बलख़ = वाह्लीक (यूनानियों का बैक्ट्रियाना)।

हाला पहाड़ (सोमगिरि)।

हिन्दू कुश = निषाध पर्वत

जलालाबाद = सुवास्तु और काबुल नदियों के संगम पर बसा है। इसका पुराना नाम नगरहर था। वर्तमान जलालाबाद से २ मील की दूरी पर पश्चिम की ओर नगरका गाँव अब तक बसा है। एक जातक में इसे अमरावती नाम से भी पुकारा गया है।

काबुल = कुभ (वैदिक) उर्द्ध स्थान।

काफ़िरिस्तान = उज्जानक (काश्मीर के पश्चिम सिन्ध घाटी में)।

कुशान = कपिस हिन्दू कुश में।

लहोर = सालतुर अटक से १६ मील उत्तर-पूर्व की ओर पाणिनिकी जन्मभूमि।

लमग़ान = लम्बा का (मुरांडा) काबुल नदी के उत्तरी तट पर।

न्यसत्त = काबुल नदी के उत्तरी तट पर हस्तनगर से ८ मील नीचे।

आक्सस = (Oxus) वक्ष, सुचक्षु, चक्षु।

पंजशीर = प्राचीन कपिषा प्रान्त।

सारि कुल = कबन्ध।

निस्तान का इतिहास शामिल है। कल्हन की राज तरंगिणी के ७वें अध्याय में काबुल के पतन और शाही वंश का विशद वर्णन है। लल्लिय जयपाल आदि राजाओं की उपाधि शाही थी, लेकिन वैसे राजा ब्राह्मण थे, इनका राज काबुल में था। पर कन्धार में क्षत्री राजाओं का शासन था।

मुसलमानी समय में यहाँ विशेष परिवर्तन हुए। मुहम्मद साहब के मरने के बाद अरब लोगों ने फ़ारिस को विजय किया। इसके बाद मध्य एशिया के बलख़, बुख़ारा आदि राज्य उनके अधिकार में आगये। पर ये उनसे इतने दूर थे कि यहाँ उनके ख़लीफा का स्थायी राज्य न रह सका। समानी लोगों ने यहाँ अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया। समानी अमीरों का राज्य प्रायः १२० वर्ष रहा। पाँचवें बादशाह ने अलतगीन नाम का एक तुर्की ग़ुलाम मोल लिया। विश्वास हो जाने पर इस ग़ुलाम को ऊँचे ऊँचे पद मिले। पर अन्त को उसके स्वामी से बिगड़ गई। इसलिये वह बलख़, हिरात और सीस्तान के मैदानों को छोड़ कर ऐसे पहाड़ प्रदेश में जान बचाकर भागा जहाँ उस पर सहज में शत्रु हमला न कर सके। अलप्तगीन के मरने पर उसका बेटा भी कुछ ही समय में चल बसा। इस लिये उसका ग़ुलाम सुबक्तगीन उसकी छोटी पहाड़ी रियासत ग़ज़नी का मालिक हुआ। सुबक्तगीन ने अपने

सारिकुलभी = नागह्रद (पामीरकी झील)।

स्वात = शुभवस्तु या सुवस्तु, स्वेत पुष्कलवती नगरी इसी नदी और काबुल के संगम पर बसी थी।

स्वाप्तघाटी = उद्यान दारद देश चितराल से सिन्ध तक।

यारकन्द नदी = सीता नदी।

मंगल = उद्यान की राजधानी (वर्तमान अंगोरा या मंगलोरा)।

अधिकार पाते ही अपने आस पास के प्रदेश पर हमला करना शुरू कर दिया। इस समय काबुल की घाटी जयपाल के अधिकार में थी। जयपाल अपनी सेना को लेकर लोग़ान की ओर बढ़ा। वहीं सुबक्तगीन अपनी फौज को पहाड़ियों में छिपाये पड़ा था। इस ब्राह्मण राजा की फ़ौज के मुक़ाबिले में उसकी फ़ौज कुछ भी नहीं थी। पर इस प्रदेश में पीने को पानी का एक ही अच्छा चश्मा था। उसमें सुबक्तगीन ने शराब छुड़वा दी। जयपाल की फ़ौज को पानी का बड़ा कष्ट हुआ। दुर्भाग्य से बर्फीली आँधी भी बड़े ज़ोर से आई। इसलिये काफ़ी फौज होते हुए भी जयपाल को सन्धि करनी पड़। जयपाल ने पचास हाथी तुरन्त दे दिये और कुछ क़िले और एक भारी हरजाना देने का वादा किया। लेकिन जब सुबक्तगीन के दूत क़िलों पर अधिकार करने गये तो जयपाल के आदमियों ने इनकार कर दिया। फिर लड़ाई हुई। इस बार जयपाल की भारी हार हुई और उसने लज्जा के कारण चिता जलाकर अपने को भस्म कर लिया।

जयपाल का लड़का अनङ्गपाल पंजाब की गद्दी पर बैठा। सुबक्तगीन के मरने पर ग़ज़नी का राज्य सुल्तान महमूद को मिल चुका था। अनंगपाल ने मुसलमानों की बढ़ती हुई लहर को रोकने के लिये उत्तरी हिन्दुस्तान के प्रायः सभी हिन्दू राजाओं को धर्म युद्ध में सम्मिलित होने के लिये निमन्त्रण दिया। उज्जैन, कलिंजर, ग्वालियर, कन्नौज, अजमेर और दिल्ली के सभी राजा लोग अपनी सेना लेकर पेशावर के मैदान में पहुँचे। इस युद्ध में सहायता देने के लिये हिन्दू स्त्रियों ने अपने गहने तक भेज दिये थे। इस विशाल संयुक्त सेना को देख कर महमूद डर गया। हिन्दू सेना प्रति दिन बढ़ती जा रही थी। मुसलमानों ने अपनी फ़ौज को बचाने के लिये खाई खुदवा ली। फिर भी महमूद ने हिम्मत नहीं हारी। एक दिन उसने कुछ धनुषबाण धारी सिपाही अपने विरोधियों का अन्दाज़ा करने के लिये भेजे। गक्खड़ लोगों ने

इनका बुरी तरह से पीछा किया, गकड़ लोग नंगे सिर और नंगे पैर थे। उनके पास हथियार भी एक तरह के नहीं थे। पर वे महमूद के सिपाहियों का पीछा करते करते सेना के बीच में घुस पड़े। कुछ ही पल में उन्होंने तलवार और छुरों से तीन चार हज़ार घुड़सवारों और उनके घोड़ों को मार डाला। हिन्दू फौज इस तेज़ी से आगे बढ़ रही थी कि महमूद भागने की सोच रहा था। लेकिन इसी समय अनङ्गपाल का हाथी बिगड़ गया और उल्टी ओर भागा। जीत के समय अनङ्गपाल के हाथी को उल्टी ओर फिरते देख दूसरे राजाओं के मन में सन्देह होने लगा। फिर क्या था अधिकतर सिपाही स्थिति को न समझ कर पीछे लौटने लगे। इस प्रकार इस दैवी दुर्घटना से विजय लक्ष्मी हिन्दुओं के हाथ में आकर चली गई। पहले पहल तो मुसलमानी सेना इस भगदड़ का अर्थ न समझ सकी। लेकिन फिर उन्होंने भागती हुई सेना को जी भर के क़त्ल किया। इस लड़ाई के बाद महमूद ने प्रायः हरसाल हिन्दुस्तान पर हमला किया और मन्दिरों को तोड़ कर तीर्थों से वह असख्य धन ले गया। पाठकगण इस इतिहास से भली भांति परिचित हैं, इस लिये इसको दुहराने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

महमूद ने ग़ज़नवी वंश को एक दम बलवान बना दिया। ग़ज़नी शहर एशिया के बड़े नगरों में गिना जाने लगा। इसी समय सारे अफ़ग़ानिस्तान पर मुसलमानी राज्य हुआ। महमूद ने बुख़ारा ख़ुरासान और सीस्ताना को भी अपने राज्य में मिला लिया। इसी समय अफ़-ग़ानिस्तान में इस्लाम धर्म फैला। वर्तमान अफ़ग़ानी लोग अपने को बनी इसरायल बतलाते हैं और मुहम्मद साहब के समय ये ही इस्लाम धर्म ग्रहण करने का दावा करते हैं। पर बहुत से इतिहासज्ञों को यह कथन सत्य प्रतीत नहीं होता।

अफ़ग़ान शब्द की उत्पत्ति बड़ी रोचक है कुछ लोग इसे अपगान (बुरा गाना) का अपभ्रंश बतलाते हैं क्योंकि अफ़ग़ानी गाना अपनी

कर्ण कटुता के लिये सब कहीं प्रसिद्ध है। अरबी में फेग़ां शब्द का अर्थ शोर, चिल्लाहट है इसी का बहुवचन अफ़ग़ान हुआ।

मुसलमान हो जाने पर अफ़ग़ानिस्तान के लोग असली उत्पत्ति को मानने में ही शरमाने लगे। वे अपनी उत्पत्ति इस प्रकार बतलाते हैं— यहूदियों के राजा मालिक तलूत (साल) के दो लड़के थे। एक का नाम अफ़ग़ान और दूसरे का जलूत था। दाऊद और सुलेमान के राज्य के बाद यहूदियों में फूट फैल गई। अन्त में नबूक्त नज़र ने यरूसलीम छीन लिया और ७० हज़ार यहूदियों को क़त्ल कर डाला। बचे हुए लोगों को वह दास बना कर अपने साथ बेबिलोनिया को ले गया। इस घटना से अफ़ग़ान फिरका इतना डर गया कि वह जुडिया को छोड़ कर अरब में बस गये। यहां वे बहुत दिनों तक बसते रहे पर अन्त में पानी और चारागाह के अभाव से वे हिन्दुस्तान की ओर चल पड़े और अफ़ग़ानिस्तान में बस गये। सुलेमान पहाड़ पर बसने के समय इनके २४ वंश थे—

अब्दाली	गिलज़ई
यूसुफ़ज़ई	कौकेरी
बबूरी	जुमोरियानी
वज़ीरी	स्तोरियानी
लोहानी	पेनी
बेरिची	कासी
ख़ागियानी	तकानी
चिरानी	नसारी
खटकी	ज़ाज़ी
सूरी	बाबी
अफ़रीदी	बंगशी
तुरी	लन्देह पुरी

ग़ज़नी वंश के लोग अफ़ग़ान न थे। वे वास्तव में तुर्क थे। इस लिये अफ़ग़ान लोगों और तुर्कों में धार्मिक एकता होने पर जातीय भेद बहुत भारी था। तुर्क लोग यहां विदेशी समझे जाते थे। महमूद के उत्तराधिकारी उतने योग्य भी न थे। हिन्दू कुश की सर्वोच्च श्रेणी पर ग़ोर नाम का एक पहाड़ी ज़िला था। यह ज़िला तिब्बत और तुर्किस्तान की सीमा पर था। यहां के निवासी सब से गज़नी की सरकार से अलग हो गये। ये लोग खुरासान और तारतारी की ओर भी बढ़ने लगे। ग़ज़नी वंश के सुल्तान बहराम ने ग़ोरी सरदार की घड़ी ही पीड़ाजनक हत्या की। उसके वज़ीर की भी खाल निकलवा ली। ग़ोरी सरदार के भाई ने बदला लेने की प्रतिज्ञा कर ली। उसने ग़ज़नी पर चढ़ाई की। बहराम भाग गया। सात दिन तक ग़ज़नी में क़तल आम और जलाने का काम होता रहा। भारत की लूट से ग़ज़नी में जो विशाल भवन बने थे उनकी एक ईंट भी न छोड़ी गई। इस प्रकार अफ़ग़ानिस्तान में ग़ज़नी वंश का अन्त और ग़ोरी वंश की स्थापना हुई। ग़ोरी वंश के राजा सचमुच अफ़ग़ान थे।

शहाबुद्दीन ग़ोरी ने ग़ज़नी वंश के अन्तिम राजा को पञ्जाब में भी चैन न लेने दिया। इस प्रकार ग़ज़नी शहर को समूल नष्ट करने के बाद उसने पृथिवीराज पर चढ़ाई की। राजपूतों और अफ़ग़ानों की पहिली लड़ाई कर्नाल और थानेश्वर के बीच में तिरौरी के मैदान में हुई। इस लड़ाई में मुसलमान सेना का ऐसा विध्वंश हुआ कि ग़ोरी को जान बचाना मुश्किल हो गया। वह अपने देश को लौटा लेकिन इस हार को न भूला। दूसरी बार और भी अधिक सेना लेकर हिन्दुस्तान की ओर बढ़ा। इस बार ग़ोरी को पूरी सफलता हुई। राजपूत लोग इस समय शारीरिक बल, बहादुरी, निर्भयता और अस्त्र शस्त्र में मुसलमानों

अब्दाली लोग यों तो अफ़ग़ानिस्तान के सभी भागों में मिलते हैं पर हिरात और क़न्धार के आस पास इन की प्रधान बस्तियां हैं।

से किसी तरह कम न थे। रण में पीठ दिखलाना उन्होंने सीखा ही न था। धर्म और देश के लिये हँस हँस कर प्राण देने में वे अचमुच अनुकरणीय रहे। उनकी हार का मूल कारण आपस की फूट थी। दूसरा कारण यह था कि वे युद्ध में भी धार्मिक सिद्धान्तों पर ही चलते थे और समझते थे कि उनका शत्रु भी इन्हीं सिद्धान्तों पर चलेगा। इस में उन्होंने बार बार धोखा खाया। इस दूसरी लड़ाई में एक तो उन पर अचानक धोखे में छापा मारा गया। दूसरे उन्होंने ज़रूरत के लिये रक्षित या रिज़र्व सेना नहीं रक्खी थी। इस लड़ाई के बाद अफ़ग़ानों का राज्य हिन्दुस्तान में बढ़ता ही गया। बीच में चिंगेज़ ख़ाँ, तैमूर लङ्ग आदि विजेताओं के हमलों ने अफ़ग़ान के राज्य को छिन्न भिन्न अवश्य कर दिया लेकिन फिर भी बाबर के समय तक उत्तरी भारत के अधिकतर प्रदेश में अफ़ग़ान वंशों का राज रहा। बाबर का जन्म तैमूर के ही वंश में हुआ था। उसको फ़रग़ना का राज्य मिला था। यह प्रदेश समर कंद और काशगर के बीच में पहाड़ियों से घिरा हुआ है। पिता के मर जाने पर बाबर को छोटी उमर से ही राज्यभार अपने हाथ में लेना पड़ा। यहां उसके शत्रु बहुत थे। इसलिये उसे अपना पैत्रिक राज्य छोड़ना पड़ा। पर क़ाबुल में अराजकता फैल रही थी। इसलिये उसने यहाँ आकर अधिकार जमा लिया। धीरे धीरे कन्धार भी जीत लिया। इसके बाद उसने समरकन्द और बुख़ारा पर चढ़ाई की। इसमें वह सफल न हो सका। उसे काबुल लौटना पड़ा। पर उसके सौभाग्य से हिन्दुस्तान में लोदी वंश मरणासन्न था। हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने का उसे निमन्त्रण मिला। इब्राहीम लोदी की गहरी हार हुई और बाबर उत्तरी भारत का स्वामी बन गया। इसके आगे अफ़ग़ानिस्तान मुग़लों का एक सूबा बना रहा। अफ़ग़ानों ने मुग़लों को भगाने में यथा शक्ति प्रयत्न किया। पर उन्हें सफलता न हुई।

१५३० में बाबर के मरने पर हुमायूं हिन्दुस्तान का बादशाह

हुआ। लेकिन उसके भाई कामरान और शेरख़ाँ की बग़ावत के कारण हुमायूं को हिन्दुस्तान से भागना पड़ा। इससे कुछ पहले क़न्धार फ़ारसवालों के हाथ आ चुका था। विद्रोह होने पर भी हुमायूं ने फारिस के बादशाह की ही शरण ली। हुमायूं के आने का हाल सुन कर फारिस के बादशाह तमस्प ने अपने हिरात के गवर्नर को आज्ञा दी कि हुमायूं का उचित आदरसत्कार करे और कास्विन (जो उस समय फारिस की राजधानी था) तक ले आवे। शाह तमस्प ने अपने अतिथि को सभी तरह से खुश रखने की कोशिश की जैसा कि नीचे एक घटना से प्रगट है—

"कास्विन की गलियों में टहलता हुमायूं एक दिन एक नहर के पास जा पहुँचा। नहर का पानी बड़ा निर्मल था। धारा भी तेज़ थी। दोनों किनारे हरियाली और फूलों से ढके थे। यह स्थान हुमायूं को बहुत अच्छा लगा। उसने अपने एक अफसर से कहा कि यदि मैं समर्थ होता तो यहाँ एक शानदार मस्जिद बनवाता। यह बात एक पास खड़े हुए फारसी अमीर ने भी सुनी और आपने शाह को जा सुनाई। शाह तमस्प ने हुमायूं की इच्छा पूरी करने के लिये कारीगरों को बुलवाया और उसी जगह पर मस्जिद का बनवाना शुरू करवा दिया। उसने इस बात को गुप्त रक्खा और हुमायूं को उस ओर जाने से मना करवा दिया। छः महीने में मस्जिद तय्यार हो गई। उसके ऊपर हुमायूं का नाम खुदा हुआ था। अब हुमायूं को उधर जाने का अवसर मिल गया। उसी स्थान पर मनचाही मस्जिद देख कर हुमायूं के आश्चर्य और आनन्द का ठिकाना न रहा।

जब हुमायूं ने हिन्दुस्तान लौटने की इच्छा प्रगट की तो बादशाह ने १२,००० सिपाही बैराम खाँ की मातहती में हुमायूं को सौंप दिये। सौभाग्य से पठान लोदियों के विरुद्ध हिन्दुस्तान में सब कहीं विद्रोह मच रहा था। इसलिये लोदियों को हराने में हुमायूं को अधिक कठिनाई

न हुई। लोदियों को क़तल करने का भी फरमान जारी कर दिया गया। पर जो पठान बचे वे उसके पुत्र अकबर को समय समय पर कष्ट देते रहे। जहांगीर ने क़न्धार ले लिया। लेकिन शाहजहां ने फिर अफ़ग़ान लोदियों को सताना शुरू कर दिया। इस प्रकार औरङ्गज़ेब के समय तक पठान और मुग़लों का विद्रोह किसी न किसी रूप में चलता ही रहा।

क़न्धार की स्थिति व्यापार और सेना के लिये इतनी अच्छी है कि फारस के बादशाह ने १६४२ में इसे ले ही लिया। फारसियों की अपेक्षा अफ़ग़ान लोग मुग़लों के राज्य को पसन्द करते थे, मुग़ल बादशाहों ने भी कन्धार और हिरात के लेने में कोई कसर न छोड़ी तौभी ये दोनों प्रान्त फारस के ही अधीन बने रहे। पर क़न्धार के आस पास गिलज़ई लोगों ने बग़ावत का झंडा खड़ा कर दिया। इस विद्रोह को दबाने में कन्धार के गवर्नर ने बड़ी सख़्ती की। उसने पुरुषों को क़तल करना और स्त्रियों को ग़ुलाम बनाना शुरू कर दिया। इससे तंग आकर १७०८ ई० में अफ़ग़ान लोगों ने अपने कुछ आदमी इस्पहान के दरबार में प्रार्थना करने के लिये भेजे।

इन अफ़ग़ान प्रतिनिधियों में मीर वैस बड़ा चतुर था। इसलिये क़न्धार के गवर्नर के ख़िलाफ बादशाह के कान भरने में वह पूरी तरह से सफल हुआ। फारिस से वह हज करने मक्का चला गया। वहाँ से वह सुन्नी मुल्लाओं से फतवा ले आया कि अफ़ग़ान लोग फारिस के शिया काफिरों को अपने देश से निकाल दें। इस्पहान से लौटने वाले अपने साथियों को विद्रोह करने की शिक्षा उसने पहले ही दे दी थी। दरबारी लोगों ने बिचारे गवर्नर के ख़िलाफ यह अफवाह फैलादी कि वह रूस की मदद से स्वतन्त्र बनना चाहता है। फिर क्या था, हज से लौटने वाले मीर वैस साहब गवर्नर बना दिये गये। इन्होंने पुराने गवर्नर को दावत देने के बहाने बुलाकर मार डाला और बाक़ी

फिरकों की सहायता से फारिस की फौज को नष्ट कर दिया। फारिस से दो बार फौजें भेजी गईं। पर इन्हें कोई सफलता न हुई। लेकिन १७१५ ई० में मीर वैस का देहान्त हो गया। इस प्रकार फारिस और अफगानिस्तान का झगड़ा चलता ही रहा।

पर फ़ारिस के दुर्दिन आ रहे थे। इराक़ की ओर तुर्क लोग बढ़ रहे थे। कस्पियन सागर की ओर के प्रदेश पर रूसी लोग अपना अधिकार जमा रहे थे। खुरासान में उज़बेक लोग विद्रोह मचा रहे थे। इधर फ़ारिस का बादशाह सुल्तान हुसेन भी बहुत ही कमज़ोर था। फिर भी १७१९ ई० में अफ़ग़ानिस्तान को दबाने के लिये ३५००० फौज भेजी गई। इस फौज को बुरी तरह हार खानी पड़ी। इसके बाद मीर महमूद की अध्यक्षता में अफ़ग़ान लोग उल्टे फ़ारस पर धावा बोलने लगे। कुछ ही समय में मीर महमूद ने फ़ारस के प्रायः सभी बड़े शहरों पर अधिकार कर लिया। इन दिनों फ़ारिस पर जो तबाही आई उसका वर्णन करना कठिन है। जो उपजाऊ प्रदेश थे उनमें उजाड़ गाँवों और आदमियों और घोड़ों के ढाँचों के सिवा कुछ भी न बचा। अफ़ग़ानियों ने जी भर के गांवों को लूटा और जलाया और फारसियों को क़तल किया। जो बचे उनको ऐसे भीषण अकाल का सामना करना पड़ा कि भाई भाई को और पिता पुत्र को मार कर खाने लगा। खाल और चमड़े की कौन कहे भूखे लोग पेड़ों की छाल और पत्तियां भी चट कर गये। गोबर और विष्ठा भी नहीं बचता था। चमड़े के पुराने टुकड़ों को भिगो कर और उबाल कर लोग खाने लगे। दीवारों के पलास्तर में लकड़ी का बुरादा मिला कर भी भोजन तय्यार किया जाता था। लेकिन ऐसे भोजन के लिये भी क्षुधातुर फ़ारसी लोग आपस में इतनी छीन छान करते थे कि मरने की भी नौबत आ जाती थी। जो इस्पहान शहर कुछ ही पहले धन-जन से हरा भरा था वहां लाखों अधमरे लोगों और अफ़ग़ान सिपाहियों के सिवा और कुछ न बचा। बहुत से लोग दुःखों से छुटकारा

पाने के लिये आत्म-हत्या करने लगे। अन्त में २३ अक्टूबर सन् १७२२ ई० को शाह सुल्तान हुसेन ने भी महमूद के पक्ष में फ़ारिस का राज सिंहासन त्याग दिया और शाही ताज और तलवार उसे अर्पण कर दी। इतने पर भी इस्पहान के बचे बचाये फ़ारसी सिपाही मार डाले गये।

पिता के सिंहासन छोड़ने पर युवराज तमस्प ने कास्विन नगर में अपने को फ़ारिस का बादशाह घोषित कर दिया। लेकिन जब मीर महमूद ने उसके विरुद्ध एक फ़ौज भेजी तब उसे अजरबैजान भागना पड़ा। कास्विन के निवासियों ने अफ़गानों के प्रति अतिथि-सत्कार प्रगट किया फिर भी कास्विन में भरपूर खूरेज़ी हुई। इस्पहान में एक नया हत्या-कांड रचा गया। एक दिन भारी जलसा हुआ। बड़े बड़े फ़ारसी अमीर बुलाये गये। जब ११४ अमीर अफ़ग़ान दरबार में पहुँचे तो वहां उन्हें दावत का कोई निशान दिखाई नहीं दिया। शाही बग़ीचे में हथियारबन्द सिपाही तैयार थे जिन्होंने इन निहत्थे अमीरों को एक एक करके मार डाला। इसके बाद ये सिपाही शहर पर टूट पड़े और उन्होंने कई हज़ार निवासियों को क़त्ल कर डाला। ५०० फ़ारसी नौ जवान विद्यार्थी क़तल के दिन देहात में भाग गये थे। दो दिन बाद उनकी तलाश में फ़ौजें भेजी गईं और हिरणों की तरह उनका शिकार किया गया। कुछ ही समय बाद तीन हज़ार फ़ारसी सिपाहियों का भी यही हाल हुआ। अन्त में मीर महमूद की मानसिक दशा इतनी बिगड़ी कि उसने हर एक ऐसे फ़ारसी को क़त्ल करने की आज्ञा निकाली जो शाह का नौकर रह चुका था। अन्त में मीर महमूद का भी अन्त हुआ। उसका स्थान मीर इकराफ़ को मिला।

मीर इकराफ़ ने फ़ारिस में अपना राज्य क़ायम रखने की भरसक कोशिश की लेकिन अत्याचार का प्याला भर चुका था। फ़ारस के लोग त्राहि त्राहि कर रहे थे। लेकिन वे असहाय थे। ऐसे ही समय में डाकुओं के सरदार नादिर (जो बाद को नादिरशाह हुआ) ने अपनी सेनाएं

शाहज़ादे तमस्प को समर्पित करदीं। शाहज़ादे ने बड़ी खुशी से उसे अपना सेनापति बनाया। १७२६ और १७२७ के वर्ष नादिर ने खुरासान और हिरात को जीतने में बिताये। इसके बाद वह मज़न्दरान की ओर बढ़ा। रास्ते में उसने निशपुर को ले लिया और ३००० अफ़ग़ानों को मार डाला। पर मीर इकराफ़ सुस्त न था। उसने नये सिपाही भरती किये और वह ३०००० सिपाही लेकर नादिर का मुक़ाबिला करने के लिये बढ़ा। अफ़ग़ान अपने घमंड में चूर थे। वे समझते थे कि फ़ारसी लोग लड़ना ही नहीं जानते हैं, लेकिन इस बार १७२८ में दमग़ान की लड़ाई में उनके १२००० अफ़ग़ानी साथी खेत रहे और शेष जीव बचा कर भागे। ३००० फ़ारसी भी मरे। लेकिन इसके बाद नादिर की अफ़ग़ानों पर धाक बैठ गई। बशीराज़ की लड़ाई में हारने के बाद अफ़ग़ान लोग अपने देश को लौटने लगे।

१७३० ई० में हिरात में बलवा हुआ। नादिर ने इस शहर पर दुबारा क़ब्ज़ा कर लिया। १४० मील दक्षिण की ओर बढ़ कर नादिर ने फरा के मज़बूत क़िले को भी ले लिया। इसके बाद नादिर ने तुर्कों को फ़ारिस से मार भगाया। और शाह तमस्प को क़ैद करके खुद बादशाह बन गया। १७३७ ई० में एक लाख फ़ौज लेकर उसने कन्धार पर चढ़ाई की। ग़िलज़ई लोगों ने कन्धार को बचाने में किसी तरह की कमी न की, लेकिन अन्त में नादिरशाह विजयी हुआ। कन्धार के बाद नादिरशाह ने काबुल को जीता। इस प्रकार वह सारे अफ़ग़ानिस्तान का मालिक बन बैठा। यहाँ उसने ग़िलज़ई और अब्दाली सिपाही अपनी सेना में भरती किये। इन सिपाहियों ने सभी आगामी लड़ाइयों में नादिरशाह का पूरा पूरा साथ दिया। लेकिन अफ़ग़ानी और फ़ारसी सिपाहियों में सदा अनबन रहा करती थी। १७४७ ई० में जब नादिरशाह मार डाला गया तब दोनों फ़ौजों में खुल्लम खुल्ला लड़ाई हो गई।

इस प्रकार नादिरशाह की मृत्यु के बाद अफ़ग़ानिस्तान में अराजकता छागई। अफ़ग़ानिस्तान में १० फ़िरके ऐसे थे जिनके सरदार नादिरशाह की नौकरी कर चुके थे। इनमें से हर एक अफ़ग़ानिस्तान का बादशाह बनना चाहता था। राजा चुनने के लिये जो सभा हुई उसमें खूब गरम बहस हुई पर तय कुछ न हो सका। इस बीच में सूदोज़ई वंश का अहमद ख़ाँ बिल्कुल चुपचाप बैठा रहा। अन्त में एक दरवेश ने आगे बढ़कर कहा कि ईश्वर ने अहमद ख़ाँ को राजा चुना है। आप उसके काम में दख़ल न दें। यह कह कर उसने मुट्ठी भर जौ के पौदों का एक हार बनाया और अहमद ख़ाँ के गले में डाल कर कहा "यही आप का राज-दण्ड होगा।" सब लोगों ने दरवेश की बात मान ली और सबसे बड़े मुल्ला ने अहमद ख़ाँ के सिरपर गेहूँ उडेल कर उसे अफ़ग़ानिस्तान का राजा बनाया। * राज्याभिषेक का उत्सव हो ही रहा था कि इतने में नादिरशाह का एक सरदार शाल दुशाले सोना चाँदी और जवाहिरात की २ करोड़ की लूट हिन्दुस्तान से लेकर आ पहुँचा। अहमद शाह ने इस लूट को छीन कर उपस्थित सरदारों और फ़िरक़ों में बाँट दिया। इससे अहमद शाह बहुत प्यारा बन गया। सभी लोग दूर दूर से अहमदशाह की फ़ौज में भरती होने के लिए आ गये। इस फ़ौज को लेकर अहमदशाह ने काबुल पर चढ़ाई की। काबुल का लेना आसान न था क्यों कि नादिरशाह ने १२००० फ़ारसी सिपाहियों को बालाहिसार में बसा दिया था। अन्त में दोनों में समझौता हो गया और बिना लड़े ही अहमदशाह ने काबुल पर अधिकार जमा लिया। काबुल एक सरदार के हाथ में सौंप कर अहमद शाह पेशावर की ओर बढ़ा और इस शहर को भी ले

* अफ़ग़ानिस्तान के कई फ़िरकों में राज्याभिषेक के समय में राजा या सरदार के सिर पर अन्न छोड़ने की चाल अब तक चली आती है। वे इसे बरकत की निशानी समझते हैं।

लिया। कुछ ही समय में अहमद शाह सारे अफ़ग़ानिस्तान का राजा बन गया। अहमदशाह ने देखा कि लड़ाके फ़िरकों को लड़ाने से ही देश में शान्ति रह सकती है। इस लिये उसने सिन्ध नदी को पार करके लाहौर पर चढ़ाई की। चनाब नदी चढ़ी हुई थी इस लिये अहमदशाह ने नदी के दाहिने किनारे पर पड़ाव डाल दिया। लाहौरी फ़ौज बायें किनारे पर थी। और दिल्लीसे आने वाली फ़ौजकी राह देख रही थी। "यदि दिल्ली की फ़ौज आजावेगी तो स्थिति भयानक हो जावेगी" यह सोच कर अहमदशाह ने एक चाल चली। उसने अपनी पैदल फ़ौज को तो वहीं छोड़ दिया और आधी रात को घुड़सवारों को लेकर लाहौर पर अचानक क़ब्ज़ा कर लिया। दिल्ली की फ़ौज देरी से आई। अन्त में यह तय हुआ कि जिन-प्रदेशों पर नादिरशाह का अधिकार था वे अफ़ग़ानों के ही अधिकार में रहें।

कन्धार में विद्रोह फैल रहा था इसलिये मुग़ल सम्राट से सन्धि करने में ही अहमदशाह की भलाई थी। सन्धि हो जाने पर अहमदशाह कन्धार को लौटे, वहाँ बागी सरदारों ने उनको मार डालने की साजिश की लेकिन षड्यन्त्र का समय से पता लग गया और १० सरदारों को फांसी हुई। इसके बाद अहमदशाह खुरासान की ओर बढ़ा और उसने हिरात का घेरा डाल दिया। घेरा १४ महीने पड़ा रहा। अन्त में हैरान होकर हिरातियों ने शहर के फाटक खोल दिये। हिरात में गवर्नर नियुक्त कर के अहमद शाह ने मशद पर चढ़ाई की। पर इसमें उसे सफलता न हुई। वह हिरात लौट आया और वहां से बलख़ की ओर उज़बेक लोगों पर चढ़ाई करने के लिये चला। इसी बीच में बलोच लोग कंधार की ओर और मरहठे लोग पंजाब में बढ़ रहे थे। कलात के ख़ान से सन्धि करके अहमदशाह ने अपनी सारी शक्ति हिन्दुस्तान की ओर लगा दी। सौभाग्य से उसे अवध के नवाब से रसद वग़ैरह की पूरी पूरी मदद मिली। बागपत में यमुना पार करके वह पानीपत के मैदान

में मरहठों के मुक़ाबिले में आडटा। प्रत्येक ओर लगभग दो लाख फ़ौज थी। पर मरहठों की फ़ौज में रसद की बड़ी तङ्गी हो रही थी। फल यह हुआ कि विजय अफ़ग़ानों के हाथ आई। लेकिन इस विजय से अफ़ग़ानों को कोई विशेष लाभ न हुआ। कन्धार में विद्रोह की आग बराबरा फैलती ही रही। पानीपत से लौट कर अहमदशाह पंजाब और पेशावर के रास्ते घर लौटा। कुछ दिनों में अपने छोटे बेटे तैमूर मिरज़ा को राज्य का भार सौंप कर अहमदशाह सुलेमान पर्वत पर रहने लगा। १७७३ में वह इस लोक से चल बसा। इस राजा ने अफ़ग़ानिस्तान को बहुत ही गिरा हुआ पाया था। लेकिन मरते समय उसने अपने देश को बहुत ऊँचा कर दिया।

अभी तक कन्धार अफ़ग़ानिस्तान की राजधानी गिनी जाती थी। अहमदशाह बसन्त और ग्रीष्म में काबुल में रहता था, और शेष दिनों में कन्धार में आ जाता था। पर कन्धारी लोगों ने तैमूर मिरज़ा के ख़िलाफ़ आरम्भ में विद्रोह किया इसलिये उसने काबुल को ही राजधानी बनाया। अहमदशाह के आठ लड़के थे। यद्यपि अहमदशाह तैमूर मिरज़ा को ही राजा बना गया था। तथापि उसके मरने के बाद राज्य के लिये आपस में काफी मार काट हुई। तैमूर शाह का प्रायः सारा समय बग़ावतों को दबाने में ही बीता। कभी सिन्ध में कभी कन्धार में और कभी बलख़ में उसे जाना पड़ा। वह ३६ बच्चे छोड़ कर मरा। इनमें २३ लड़के थे और १३ लड़कियां थीं। ये लड़के भिन्न भिन्न ११ माताओं से उत्पन्न हुए थे। ये माताएं भिन्न भिन्न फिरकों की थीं। इस लिये राज सिंहासन के लिये फिर वही पुरानी बातें दुहराई गईं। पर ज़मान मिरज़ा के पक्षपाती लोग सफल हुए। तैमूर के मरते समय सब से बड़ा लड़का हुमायूं मिरज़ा कन्धार में था। महमूद मिरज़ा हिरात में था। अब्बास मिरज़ा पेशावर में और ज़मान मिरज़ा काबुल में था।

शुजाउलमुल्क ग़ज़नी में और कोहदिल काश्मीर में था। अधिकांश लड़के काबुल की ओर बढ़े। पयन्दा ख़ाँ ने प्रस्ताव किया कि शस्त्र हीन राजकुमार अपने सरदारों के साथ एक जगह सभा कर लें और वहीं सर्व सम्मति से राजा का चुनाव हो। यह बात सब को अच्छी लगी। पयन्दा ख़ां का ही एक घर सभा-स्थान नियत हुआ। यह स्थान पहले से मज़बूत बना लिया गया था। सब राजकुमार अपने सहायकों के साथ इस सभा में आये। लेकिन ज़मानशाह के साथी यहां नहीं आये। ज़मान मिरज़ा भी किसी बहाने से सभा के बाहर निकल आया। पयन्दा ख़ां ने बाहर आकर मकान में ताला डाल दिया और बाहर सिपाहियों का पहरा लगवा दिया। फिर क्या था ज़मान मिरज़ा ने अपने भाइयों और उनके सहायकों को पांच दिन तक उसी मकान में बन्द रक्खा और सिर्फ़ १ छंटाक रोटी खाने को दी। पांच दिन के बाद जब ये भूखे प्यासे लोग निकाले गये तो वे सूख कर ठठरी रह गये थे। अपने भाइयों को उसने बाला हिसार में फिर बन्द करवा दिया।

ज़मान शाह का शासन बड़ी निर्दयता से आरम्भ हुआ। लोग विश्वास दिला कर राज महल में बुलवा लिये जाते थे। वहाँ उन्हें कारागार या फांसी की सज़ा मिलती थी। किसी की जायदाद भी सुरक्षित न थी इन अत्याचारों से मित्र भी शत्रु हो गये। ऐसे ही समय में फ़ारस के बादशाह ने बलख़ और बुख़ारा पर अधिकार जमा लिया। पंजाब भी स्वतन्त्र होने का प्रयत्न कर रहा था। शाहज़मान पंजाब की ओर बढ़ा। इतने में ही उसे ख़बर मिली कि उसका भाई बलोचियों की सहायता से कन्धार पर चढ़ाई कर रहा है। इसलिये वह पहले सीधे कन्धार की ओर लौटा। ज़मान ने धोखा देकर शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया और अपने भाई की आँखें निकलवा लीं। इसके बाद उसे विद्रोह दबाने के लिये हिरात जाना पड़ा। इतने ही में वीर सिक्खों ने फिर स्वाधीनता का झंडा खड़ा कर दिया, इस लिए वह लाहौर की ओर

लौटा। बाग़ी लोग पहाड़ोंमें जा छिपे। शहर के लोगोंने शाह से प्रार्थना की कि आगे से शहर में सिक्ख गवर्नर नियत हो। शाह ने यह प्रार्थना स्वीकार करली और रणजीत सिंह को गवर्नर नियत करके वह अफ़ग़ानिस्तान लौट आया। जगह जगह विद्रोह फैलता गया। इसके साथ ही जमान शाह की भी निर्दयता बढ़ने लगी। अन्त में ज़मानशाह को भी अपने दुष्ट कर्मों का बदला मिला। वह पकड़ लिया गया और उसकी आंखें निकलवा ली गईं। इधर उधर भटकनेके बाद वह लुधियाना चला आया यहाँ उसे ईष्ट इन्डिया की ओर से पेन्सन मिलने लगी।

सन् १८०० ई० में महमूद मिरजा अफ़ग़ानिस्तान की गद्दीपर बैठा। आरम्भ में शाह महमूद ने सिपाहियों और सरदारों को खुश रखने के लिये जी-जान से कोशिश की। उन्हें खूब इनाम दिये। पर अन्त में उसकी सख्तियों से लोग तंग आगये, जगह जगह बलवा होने लगा। अन्त में लोगों ने शुजाउलमुल्क को क़ाबुल की गद्दी पर बिठाया। शाह शुजा ने गद्दी पर बेठते ही शाह महमूद की आँखें निकलवाने की आज्ञा दे दी। पर फिर उसे बालाहिसार की एक कोठरी में कैद कर लिया।

शाह शुजा ने अहमद शाह की नक़ल करने की सोची। पर घरेलू लड़ाइयों ने उसे बहुत इधर उधर नहीं जाने दिया। इसी समय फारिस वालों ने हिरात पर हमला किया पर किसी तरह उनसे शान्ति पूर्वक समझौता हो गया। कन्धार में उसने अपने एक विस्वासपात्र भतीजे को गवर्नर बना दिया। इसके बाद उसने सिन्ध पर चढ़ाई करने की तैयारी की पर सिन्ध के अमीर ने उसे साढ़े चार करोड़ रुपये (कर के) दे दिये इसलिए सिंध का हमला रुक गया। पर जब उसने रणजीत सिंह को वश में करने और काश्मीर जीतने की ठानी तो उसे हार खानी पड़ी और घर की राह देखनी पड़ी। इस समय में यह ख़बर फैल रही थी कि नैपोलियन और रूस के ज़ार दोनों मिल कर हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करेंगे। इसलिये ईस्टइंडिया कम्पनी ने अफ-

ग़ानिस्तान से महाशय इल्फिस्टन की मारफत सन्धि करली। जिसके अनुसार दोनों एक दूसरे के सहायता करने और शत्रुओं से युद्ध करने को राज़ी होगये। बाद को फ्रांस और रूस में ही खटपट हो गई इसलिए इस सन्धि का कोई मूल्य न रहा।

इधर शाह शुजा के कड़े बर्ताव से अफ़ग़ान सरदार बिगड़ रहे थे। अन्त में फतेह ख़ाँ ने काज़िल† बाशों की सहायता से बाला हिसार में सुरङ्ग लगवा कर महमूदशाह को छुड़ा लिया। काफिलों को लूट कर फतेहख़ाँ और महमूदशाह ने कुछ फौज़ इकट्ठी की। पहले कन्धार पर हमला हुआ। अन्त में ये लोग काबुल की ओर बढ़े। शुजा की हार हुई। तीन करोड़ नक़द रुपये, अनन्त हीरा जवाहिरात और दूसरा सामान छोड़ कर शुजा खैबर की ओर भागा। पहाड़ी रास्ते से वह कन्धार की ओर बढ़ा। जब कन्धार जीतने की कोई आशा न रही तो इधर उधर भटकने के बाद वह लुधियाना चला आया और अपने अन्धे भाई ज़मानशाह की तरह ईस्टइंडिया कम्पनी की पेन्शन पर गुज़ारा करने लगा।

शाह महमूद भोग बिलास में फंस गया। राज्य का सारा काम उसके वज़ीर फतेह ख़ाँ को करना पड़ा। वज़ीर ने बड़ी योग्यता और स्वामिभक्ति से काम किया। उसने न केवल अफ़ग़ानिस्तान में राज्य को मज़बूत किया वरन काश्मीर पर भी हमला किया। लेकिन रणजीत सिंह से जिन शर्तों पर सिक्ख सेना काश्मीर की चढ़ाई के लिये मिली थी उसको उसने पूरा नहीं किया। इसलिये रणजीत सिंह ने अटक का क़िला छीन लिया और धीरे धीरे काश्मीर पर भी अधिकार जमा लिया।

---

† काज़िलबाश का अर्थ है लाल टोपी वाला। नादिर शाह ने १२,००० शिया ख़ान्दानों को क़ाबुल में बसाया था। ये उन्हीं की सन्तान हैं।

शाह महमूद के लड़के और दूसरे दरबारी वज़ीर के ख़िलाफ़ थे। इस लिये हिरात में उसकी आंखें निकलवा ली गईं। उसके भाई मुश्किल से जान बचा कर भागे। पर उसके १७ भाइयों ने इसका उचित बदला लिया। इनमें दोस्त मुहम्मद का प्रयत्न विशेष रूप से सराहनीय था। १८२६ में शाह महमूद एक कमरे में मरा मिला। उसका लड़का कामरान बादशाह बना। यार मुहम्मद ख़ाँ वज़ीर हुआ। १८६२ ई० में फारिस के राजकुमार अब्बासमिरज़ा ने हिरात पर चढ़ाई करने की तय्यारी की। शान्ति पूर्वक समझौता करने के लिये यार मुहम्मद उससे मिलने गया, लेकिन वह नज़र बन्द कर लिया गया। १८३३ ई० में अब्बास की मृत्यु होजाने पर उसे फारिस से छुटकारा मिला। पर १८३७ ई० में फारिस के बादशाह मुहम्मदशाह ने हिरात पर फिर चढ़ाई की।

इस समय अफ़ग़ानिस्तान की स्थिति बड़ी नाज़ुक थी। १८२६ ई० में काबुल में दोस्त मुहम्मद का शासन था। उसका भाई कोहदिल कन्धार का गवर्नर था। सिन्ध और तुर्किस्तान बहुत पहले स्वाधीन हो गये थे। दक्षिण में लेह, काश्मीर, अटक, डेराग़ाज़ीख़ाँ और मुलतान पर रणजीतसिंह ने अपना अधिकार जमा लिया था। इस पंजाब केसरी ने पठानों के छक्के छुड़ा दिये। उमन्डे हुये सिन्धनद में घोड़ा तैरा कर शत्रु पर हमला करना इसी वीर का काम था। ८०००सिक्ख सिपाहियों के साथ सेनापति बुद्धि सिंह ने ५०००० पठानों का वीरता के साथ मुकाबिला किया। १८२२ ई० में नौशेहरा की हार से पठानों का बिल्कुल दिल टूट गया और पेशावर सिक्खों के हाथ आया। आगे भी सिक्खों का अधिकार अफ़ग़ानिस्तान की ओर बढ़ता ही रहा।

इस प्रकार उत्तर में फ़ारसी और दक्षिण में सिक्ख लोग अफ़ग़ानिस्तान के दो प्रबल विरोधी थे। इनसे बचने के लिये दोस्त मुहम्मद

सब कुछ करने को तय्यार था। पर फ़ारिस और पंजाब के पीछे रूस और इङ्गलैंड की दो और भी प्रबल शक्तियाँ थीं। इसलिये इस बार हिरात का घेरा पुरानी लड़ाइयों से भिन्न था। अंग्रेज़ लोग चाहते थे कि हिरात अफ़ग़ानिस्तान के अधिकार में रहे और अफ़ग़ानिस्तान का अमीर बाहरी मामलोंमें उनकी इच्छानुसार काम करे। पर रूसी लोग फ़ारिसवालों को हिरात लेने के लिये उकसा रहे थे क्योंकि मध्य एशिया से हिन्दुस्तान के लिये हिरात का रास्ता सर्वोत्तम है। फ़ारिस के लोग भी अंग्रेज़ों से खुश न थे। १८०९ ई० में नेपोलियन का रास्ता रोकने के लिये अंग्रेज़ों ने फ़ारिस के साथ तेहरान में सन्धि की थी कि यदि कोई योरूपीय जाति फ़ारिस पर हमला करेगी तो ग्रेट ब्रिटेन फ़ौज और धन से फ़ारिस की मदद करेगा। १८१४ ई० में फिर यह शर्तें दुहराई गईं। पर जब १८२६ ई० में रूस और फ़ारिस से युद्ध छिड़ा तो अंग्रेज़ों ने फ़ारिस की सहायता करने से इनकार कर दिया। फ़ारिस बुरी तरह हारा। लड़ाई के बाद अंग्रेज़ों ने फ़ारिस को हरजाना देकर पुरानी सन्धि से मदद करने की शर्त कराली। इस प्रकार ग्रेट ब्रिटेन फ़ारिस की नज़रों में गिर गया और फ़ारसी लोग रूसियों का सहारा करने लगे।

अफ़ग़ानिस्तान की पहली लड़ाई

जब तक उत्तरी भारत में सिक्खों का प्रबल राज्य था तब तक ब्रिटिश राज्य को उत्तरी हमलों से डरने का कोई कारण न था। फिर भी अंग्रेज़ लोग अफ़ग़ानिस्तान में अपने मन का अमीर रखना चाहते थे। हिरात के हमले के साथ ही बर्न्स महाशय अफ़ग़ानिस्तान भेजे गये। दोस्त मुहम्मद ने इनका अच्छा स्वागत किया। आरम्भ में इनके मुक़ाबले में रूसी दूत की कुछ भी पूछ न हुई। पर सन्धि की शर्तों पर मामला अटक गया। दोस्त मुहम्मद दो शर्तों पर ईस्टइण्डिया कम्पनी की सभी बातें मानने को तय्यार था। उसकी एक शर्त यह थी कि कम्पनी अपने दोस्त महाराजा रणजीत सिंह से पेशावर अमीर को दिला दे। दूसरी शर्त यह थी कि बाहरी हमला होने पर कम्पनी फ़ौज और धन से अफ़ग़ानिस्तान की मदद करे। बर्न्स साहब ने इन शर्तों के मानने से साफ इन्कार कर दिया। अंग्रेज़ लोग अपने विश्वास पात्र और प्रबल पड़ोसी महाराजा रणजीतसिंह से किसी तरह की छेड़ख़ानी नहीं करना चाहते थे। साथ ही अफ़ग़ानिस्तान को बाहरी हमलों से बचाने की भारी ज़िम्मेवारी भी नहीं लेना चाहते थे। लेकिन वे यह अवश्य चाहते थे कि अमीर रूसियों से सम्बन्ध न रक्खे। पर अमीर को इस प्रकार की दोस्ती न जची। रूसी लोगों से उसे अधिक आशा मालूम हुई। बस इसी दिन से रूसी दूत की क़दर होने लगी। बर्न्स साहब निराश होकर हिन्दुस्तान लौट आये। दोस्त मुहम्मद को उतारने और उसकी जगह शाहशुजा को अमीर बनाने की तय्यारी होने लगी। इस विचित्र लड़ाई में कूदने के पहले लार्ड आकलैंड शाहशुजा और रणजीत सिंह के बीच में एक सन्धि हुई। सन्धि की १४ शर्तों में से कुछ ये थीं :—

१ शाहशुजा और उसके उत्तराधिकारी सिन्ध के दोनों किनारे वाले उस प्रदेश पर किसी तरह का अधिकार न रक्खेंगे जो महाराजा के अधिकार में होगा। केाहाट, बन्नू, पेशावर, काश्मीर इत्यादि पर महाराजा का ही अधिकार रहेगा।

२. खैबर की दूसरी तरफ़ के लेाग इस ओर डाका न डाल सकेंगे।

३. जब शाह का शासन कन्धार और काबुल में स्थापित हेा जावेगा तेा वह हरसाल महाराजा साहब को निम्न चीज़ें भेजेगा:—
उम्दा रंग और चाल वाले बढ़िया नसल के ५५ घोड़े। ७ फारसी टट्टू। ११ फारसी तलवार; २५ अच्छे खच्चर। सभी तरह के ताज़े और सूखे फल। मीठे और ज़ायकेदार सरदा (साल भर पहुँचाये जायँगे), अंगूर, अनार, सेव, बादाम, किसमिस आदि हर एक मेवा कसरत से भेजी जायगी। सभी रंग की साटन के थान, नमदे के चोग़े। सेाने चाँदी के काम-दार किमखाब। १०१ फारिस की क़ालीनें। ये सब चीज़ें शाह हरसाल महाराजा साहब को भेजता रहेगा।

४. हर एक तरफ़ से बराबरी का बरताव रहेगा।

५. सौदागरों के ब्यापार करने में सभी तरह का सुभीता रहेगा।

६. जब दोनों राज्यों की फ़ौजें एक जगह पर जमा हों तो किसी हालत में गौकुशी न होने पावेगी।

७. जब जब महाराजा साहब पेशावर को जावेंगे तब तब शाह उनके स्वागत के लिये अपने शाहज़ादे को भेजेगा जिससे सम्मान पूर्वक भेंट की जावेगी।

८. हर एक के दोस्त और दुश्मन सभी के दोस्त और दुश्मन समझे जावेंगे।

९—शाह सिन्ध पर किसी तरह का अधिकार न रक्खेगा।

१०. जिस वक़्त से सिक्ख सेना उसे काबुल में सिंहासन पर बिठाने जायगी उस वक़्त से शाह हरसाल दो लाख नानक शाही या कलदार रुपये महाराजा साहब को देता रहेगा। महाराजा साहब कम से कम ५ हज़ार फौज पेशावर के आस पास शाह की मदद के लिये रक्खा करेंगे।

११. शाह शुजा और उसके उत्तराधिकारी इस बात की प्रतिज्ञा करते हैं कि ब्रिटिश और सिक्ख सरकार की आज्ञा लिये बिना वे कभी किसी बाहरी ताक़त से सन्धि न करेंगे और उनके राज्य में होकर सिक्खों के प्रदेश पर हमला करने वालों का यथा शक्ति विरोध करेंगे।

२६ जून १८३८ ईसवी को सन्धि हो जाने पर अंग्रेज़ी फ़ौज सिन्ध के रास्ते से चली। फ़ौज भेजने के पहले १५ मिनट का नोटिस देकर कराची और गक्कर के क़िले पर अंग्रेज़ों ने अपना अधिकार जमा लिया। इस सम्बन्ध में इतनी बात और ध्यान में रखने के योग्य है कि लन्दन से सेन्ट पिटर्स वर्ग पर राजनैतिक प्रभाव डाला गया और रूसियों ने अपने लोगों को अफ़ग़ानिस्तान से वापिस बुला लिया था। उनसे सम्बन्ध तोड़ लिया। फारिस की खाड़ी में खरक पर अंग्रेज़ी हमला हुआ इस से डर कर ९ सितम्बर सन् १८३८ ई० को फ़ारिस वाले हिरात को छोड़ कर चले आये। इस प्रकार अफ़ग़ानिस्तान पर चढ़ाई करने का कोई बहाना न रहा। फिर भी 'न्याय' और "आवश्यकता" की शरण लेकर अक्तूबर सन् १८३८ ई० को आकलैंड साहब ने लड़ाई की घोषणा की। ब्रिटिश सेना शाहशुजा को ले कर शिकारपुर और बोलन दर्रे के रास्ते से कन्धार की ओर बढ़ी। सिक्ख सेना ने शाह शुजा के लड़के को साथ लेकर ख़ैबर दर्रे का रास्ता पकड़ा। अंग्रेज़ी सेना को रास्ते में पानी, चारे और रसद की ज़रूर कठिनाई उठानी पड़ी पर शत्रु ने कोई घोर

विरोध न किया। कन्धार का गवर्नर (दोस्त मुहम्मद का भाई) फ़ारिस को भाग गया और अप्रैल (१८३९ ई०) मास में कन्धार पर अंग्रेज़ों का क़ब्ज़ा हो गया। मुसलमानों को ख़ुश करने के लिये मस्जिद में शाहशुजा का राज्याभिषेक हुआ। पर रसद की तंगी के कारण फ़सल पकने (जून) तक फ़ौज यहीं ठहरी रही। २७ जून को फ़ौज ने काबुल के लिये कूच किया। दुर्भाग्य से इसी दिन महाराज रणजीत सिंह का स्वर्गवास हो गया। २१ जुलाई को फ़ौज ग़ज़नी पहुँची। यह नगर काफ़ी मज़बूत था। यहाँ दोस्त मुहम्मद ख़ाँ का पुत्र हैदरख़ाँ क़िले की रक्षा के लिये डटा हुआ था। ऊँटों और घोड़ों की कमी के कारण मुहासरे की तोपें भी कन्धार में ही छोड़ दी गई थीं। क़िले के तीन दरवाजे बहुत ही मज़बूत थे पर चौथा काबुल दरवाज़ा कमज़ोर था और इसके पास लकड़ी का ढेर था। २३ जुलाई की आधी रात को यह बात ठहरी कि इसी दरवाज़े से भीतर प्रवेश किया जावे। पर दुश्मन को धोखे में डालने के लिये कुछ लोग दक्षिणी दरवाज़े पर भेज दिये गये। इस प्रकार उत्तरी दरवाज़े से कुछ लोग भीतर पहुँचे। अफ़ग़ान लोग इस अचानक हमले के लिये तय्यार न थे। इसलिये बहुत सा सामान और गोला बारूद अंग्रेज़ों के हाथ आया। ५०० सिपाहियों के साथ अकबर ख़ाँ क़ैद कर लिया गया। ६ अगस्त को यह फ़ौज काबुल के पास पहुँच गई। दोस्त मुहम्मद लड़ने को तय्यार हो जाता लेकिन उसके लोगों ने उसे छोड़ दिया। इसलिये वह हिन्दू कुश पर्वत की ओर भागा और बुख़ारा के अमीर का महमान बना। शाहशुजा ने बड़ी शान के साथ ७ अगस्त को काबुल में प्रवेश किया। काबुल के सिंहासन पर बैठते ही बहुत से लोग उससे आमिले पर शाहशुजा अंग्रेज़ी कमाण्डर के हाथ में कठपुतली बना हुआ था। जो सबक़ उसे शाम को पढ़ाया जाता वही सबक़ वह सवेरे को शाही फ़रमान के रूपमें लोगों को सुना देता। कुछ सरदार इस स्थिति को ताड़ गये। अन्त में शाहशुजा भी इस पराधीनता से

उकता गया और लोगों को विद्रोह करने के लिये भड़काने लगा। उधर ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने घाटे से घबड़ा कर गवर्नर जनरल को आज्ञा भेजी कि सरदारों का भरता कम करके और कुछ फौज वापिस करके किफायत की जावे। दोस्त मुहम्मद आत्म समर्पण कर चुका था और कलकत्ते में नज़र बन्द था। अफ़ग़ानिस्तान में इस समय ऊपर से तो शान्ति मालूम होती थी लेकिन भीतर से विद्रोह की पूरी तयारी हो चुकी थी। सब से पहला हमला बर्न्स साहब के मकान पर हुआ। बर्न्स साहब और उनके २३ साथियों के टुकड़े टुकड़े करके उनकी लाशें बग़ीचे में फेक दी गईं। इस ख़बर से अंग्रेज़ी कमांडर के होश फाख़्ता हो गये। यदि वह हिम्मत से काम लेता और बालाहिसार पर कब्ज़ा कर लेता तो शहर के बाग़ियों में गिरोहबन्दी न होने पाती। अंग्रेज़ों की डांवा डोल नीति से बाग़ियों के हौसले बढ़ गये, उन्होंने फौज की रसद लूट ली। ११ दिसम्बर को लजा जनक सन्धि की गई। पर अकबरख़ां और दूसरे फिरकों में मत भेद था। इस लिये एक विचित्र विश्वासघात का कांड रचा गया। सन्धि की शर्तों पर दुबारा बात चीत करने के लिये अंग्रेज़ी कमांडर एक पुल के पास बुला लिया गया। वहीं कुछ हथियार बन्द अफ़ग़ान सिपाही छिपे थे। गरम बहस होने के बाद अकबर ख़ां ने मेकनाटन साहब को कैद करना चाहा। इनकार करने पर वह बिचारा बुड्ढा कमाँडर गोली से उड़ा दिया गया। काबुल ख़ाली करने के सिवा फ़ौज को और कोई बात न सूझी। अकबर ख़ां ने फ़ौज को पेशावर तक कुशल पूर्वक पहुँचाने का वचन भी दिया था। इस लिये ६ जनवरी को अंग्रेज़ी फ़ौज शहर से चल दी। लेकिन पीछे से हमला हुआ और बची बचाई सारी रसद छिन गई। रात को भूखे प्यासे सिपाहियों को बरफ़ पर रात बितानी पड़ी। दूसरे दिन फिर यही हत्या कांड दुहराया गया। दिन में खून के प्यासे अफ़ग़ान ग़ाज़ी पद पद पर फ़ौज पर हमला करते, रात को भूख और ठंड से सामना करना

पड़ता। फल यह हुआ कि १६००० सेना में केवल अधमरे डाक्टर ब्रिडन ख़बर सुनाने भर को जलालाबाद पहुँच सके। शेष सब रास्तेमें ही नष्ट हो गये। इस ख़बर से सभी जगह हाहाकार मच गया कुछ लोग इस विचार के थे कि अफ़ग़ानिस्तान को एक दम ख़ाली करा लिया जावे लेकिन कन्धार के वीर जनरल नाट और जलालाबाद के जनरल सेल ने अंग्रेज़ों की अस्थायी बदनामी बचाली। पंजाब के सीधे रास्ते से पोलक महाशय भी उनकी मदद करने को आ पहुंचे। इस सुसंगठित सेना ने पूरा पूरा बदला लिया। काबुल का बाज़ार उड़ा दिया गया। काज़िल बाशों के मुहल्ले को छोड़ कर सारा काबुल शहर जला दिया गया। इसी तरह और कई नगरों में मार काट और आग लगाने का भीषण काम होता रहा।

शाहशुजा को विद्रोहियों ने पहले ही मार डाला था। इसलिये अफ़ग़ानिस्तान में शान्ति स्थापित करने की समस्या फिर भी ज्यों की त्यों बनी रही। फ़ौजी शासन से हिन्दुस्तानी ख़ज़ाना तबाह हो रहा था। इसलिए वहाँ फ़ौजी शासन सदा बनाये रखना असम्भव था। शाहशुजा के लड़के अमीर बनना नहीं चाहते थे। इसलिये जिस दोस्त-मुहम्मद को गद्दी से उतारने के लिये इतना ख़ून और धन बहाया गया उसे ही फिर अफ़ग़ानिस्तान की गद्दी पर बिठा कर अंग्रेज़ी फ़ौज हिन्दुस्तान लौट आई।

अफ़ग़ानिस्तान की दूसरी लड़ाई

सन् १८४२ ई० में अंग्रेज़ी फ़ौज अफ़ग़ानिस्तान से वापिस चली आई थी। लेकिन अफ़ग़ान लोग अंगरेजों की चढ़ाई को नहीं भूले थे। वे उनसे बदला लेने का अवसर ढूंढ़ रहे थे इसलिये १८४८ ई० में उन्होंने अपने पुराने दुश्मन सिक्खों की सहायता के लिये गुजरात की लड़ाई में चुने हुये चार सिपाही भेजे। पर १८५५ में हालत

बदल गई। अफ़ग़ानिस्तान को रूस और फ़ारिस के हमले का डर होने लगा इसलिये दोस्त मुहम्मद ने ईस्टइंडिया कम्पिनी से मित्रता करने के लिये राजदूत भेजे। १८५७ ई० में वह स्वयं अङ्गरेजी प्रतिनिधियों से जमरूद में मिला। इस बार अफ़ग़ान और अङ्गरेजी सरकार दोनों ही फ़ारिस से लड़ रहे थे। इस समय जो सन्धि हुई उसके अनुसार अंगरेजों ने अफ़ग़ानिस्तान को रुपये से मदद दी। इसके बदले में फौज की देख भाल करने के लिये अंगरेज सैनिक अफसर काबुल, कंधार और बलख़ में पहुंच गये। इसी सन्धि के अनुसार अंगरेजी सरकार को काबुल में अपना वकील रखने का भी अधिकार मिल गया। अमीर भी अपना प्रतिनिधि पेशावर में रख सकता था। पर यह शर्त्त साफ कर दी गई थी कि वकील कोई योरोपीय न होगा। यह लड़ाई कुछ ही समय चली। फ़ारिस ने सुलह कर ली। सुलह होते ही अंगरेजी अफ़सर भी अफ़गानिस्तान से चले आये। सन् १८६३ ई० के मई मास में दोस्त मुहम्मद ने हिरात शहर फारिसी लोगों से छीन लिया पर वह ९ जून को मर गया। मरने के पहले उसने अपने प्यारे छोटे बेटे शेरअली को अपना उत्तराधिकारी बना दिया था। पर शेरअली को अपने भाइयों और रिश्तेदारों से लड़ना पड़ा। उसके दिन बुरे थे। उसकी हार हुई। ब्रिटिश सरकार की ओर से गद्दी पर बैठते समय बधाई दी गई थी और उसके प्रति मित्रता प्रगट की गई थी। जब उसका विरोधी अमीर बना तो लार्ड लारेन्स ने उसे भी बधाई दी। अन्त में शेर अली के अच्छे दिन फिरे और वह १८६८ ई० में अफ़ग़ानिस्तान का अमीर दुबारा बन गया। लार्ड लारेन्स ने शेरअली को इस बार केवल कोरी बधाई ही न दी वरन पंजाब के लफ़्टन्ट के ज़रिये से अमीर को ६ लाख रुपये भी भेट किये। इस भेट ने शेर अली को अंग्रेज़ों का मित्र बना दिया। उसने अपने पिता के ही समान अंग्रेज़ों से मित्रता क़ायम रखने की इच्छा प्रगट की। १८६९ ई० के

जनवरी मास में जो उसने लारेन्स साहब को पत्र लिखा वह इसी का प्रमाण था। लारेन्स साहब ने अपनी ओर मित्रता प्रगट करने के लिये बिना किसी शर्त के ६ लाख रुपये और भेज दिये। लार्ड मेयो ने हिन्दुस्तान में आकर सब से पहले शेर अली से भेंट करने की ठानी। १८७३ ई० को शेर अली को निमन्त्रण भेजा गया। निमन्त्रण पाते ही १० फ़रवरी को वह काबुल से चल दिया और २५ मार्च को अम्बाला आ गया। २७ मार्च को वायसराय साहब भी वहां पहुँच गये। २९ मार्च को शानदार स्वागत हुआ। इस स्वागत में सार हीन शब्दों में अनेक वादे किये गये पर मतलब की बात कोई न थी।

इसी बीच में मध्य एशिया के सम्बन्ध में अंगरेज़ी सरकार ने रूस की सरकार से पत्र व्यवहार शुरू किया। सरकार ने बुख़ारा के अमीर को ताकीद की कि वह अफ़ग़ानिस्तान के किसी भाग पर चढ़ाई न करे। इसी प्रकार अंग्रेज़ी सरकार ने अफ़ग़ानिस्तान के अमीर (शेर अली) से कहा कि वह उनकी सलाह लिये बिना अपने पड़ोसियों से सन्धि विग्रह न करे। यह पत्र व्यवहार तीन वर्ष तक चला। इसी बीच में अंग्रेज़ों के फ़ैसले के अनुसार अफ़ग़ानिस्तान और फ़ारिस में सीस्तान का बटवारा हुआ। यह बटवारा अफ़ग़ानिस्तान को बहुत अच्छा नहीं लगा। पर वह अंग्रेजों से बिगाड़ नहीं करना चाहता था।

लार्ड नार्थब्रुक ने अफ़ग़ानिस्तान में पहली बार एक सैनिक मिशन भेजने की बात चलाई। पर अमीर ने लिख भेजा कि अफ़ग़ानी लोग गोरों का आना पसन्द न करेंगे। इस लिये मिशन की बात टाल दी गई, केवल एक हिन्दुस्तानी वकील भेजा गया। लेकिन २२ जनवरी सन् १८७६ ई० को लार्ड सेलिसबरी ने (जो उस समय भारत-सचिव थे) मार्थब्रुक को इस आशय की एक गुप्त चिट्ठी लिखीः—

"इस समय की योरूपीय स्थिति से इङ्गलैंड को रूस से कोई भारी खटका नहीं है। फिर भी सावधानी इसी में है कि हिरात, कन्धार और हो

सके तो काबुल में भी अंग्रेज़ी एजेन्ट नियत कर दिये जावें ।" पर इसके उत्तर में लार्ड नार्थब्रुक ने इस बात पर ज़ोर दिया कि इस समय अफ़ग़ानिस्तान में गोरे एजेन्ट का रखना उचित न होगा। इसके बाद लार्ड नार्थब्रुक ने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया और लार्ड लिटन वायसराय नियुक्त हुये ।

५ अप्रैल सन् १८७६ को लार्ड लिटन कलकत्ते में उतरे। ५ को पेशावर के कमीशनर ने अमीर को वायसराय के आने की सूचना दी और महारानी की नई पदवी और वायसराय के आगमन का शुभ सन्देश देने के लिये मिशन के भेजने की बात फिर उठाई गई। निम्न कारणों से शेर अली पहले ही से असन्तुष्ट था:—

१ सीस्तान की सीमा का फ़ैसला।

२ भारतीय सरकार की किलात में छेड़ख़ानी।

३ याकूब ख़ां की ओर से लार्ड नार्थब्रुक का पक्ष लेना।

४ बिना अमीर को सूचना दिये उसके मातहत वख़ान के मीर को भेंट का भेजा जाना।

५ शिमला की सभा में उसके प्रतिनिधि की अवहेलना।

६ पेशावर के कमीशनर का कड़ा पत्र।

७ अमीर की नज़र में भारत सरकार की स्वार्थ सिद्धि।

८ पिछली बार गोरे मिशन को अफ़ग़ानिस्तान में भेजने की बात। पर लार्ड लिटन साहब चाहते थे अंग्रेज़ों को जाने आने की पूरी आज़ादी हो। अतः उन्होंने अमीर को एक घड़ी, एक चेन और १० हज़ार रुपये की भेंट भेज कर कहला भेजा कि जब तक काबुल में रूस का एक भी सिपाही न पहुँच सकेगा उसी बीच में अंग्रेज़ी सरकार वहां अपनी फौजें भरसकती है। अगर अमीर हमारा दोस्त रहा तो हमारी फ़ौज फौलादीतार

की तरह उसके चारों ओर फैल कर अफ़ग़ानिस्तान की रक्षा करेगी। अगर अमीर हमारा दुश्मन होगया तो एक सरकंडे की तरह उसकी ताक़त तोड़ दी जावेगी। अगर वह अंग्रेजी सरकार से सन्धि कर लेगा तो वह बड़ा बलवान् राजा हो जावेगा। अगर कोई उसके राज पर अकारण हमला करेगा तो ब्रिटिश सरकार अमीर की धन, सेना और गोला बारूद से मदद देगी। अगर अमीर पसन्द करे तो अंगरेजी सरकार हिरात और दूसरे सीमा प्रान्तीय नगरों में क़िले बन्दी कर देगी और उसकी सेना का संगठन करने के लिये अफ़सर भेज देगी। उसकी सहायता के लिये सालाना धन की एक रक़म भी दी जाया करेगी। पर अंगरेज़ी सरकार उस सीमा को सुरक्षित रखने की ज़िम्मेवारी नहीं ले सकती जहां वह अपने अफ़सरों के ज़रिये से निगरानी करने में असमर्थ हो।

इसी वातावरण में काबुल के राजदूत और अंगरेज़ी प्रतिनिधि की पेशावर में सभा हुई। एक दूसरे से गरम बहस हुई। दुर्भाग्य से पेशावर में ही अफ़ग़ान राजदूत का देहान्त हो गया। इधर सभा के विफल होने और उधर अपने अत्यन्त विश्वास पात्र मन्त्री की मृत्यु का समाचार मिलने से शेर अली को बेहद क्रोध और शोक हुआ। लार्ड लिटन ने अंगरेजी मिशन को काबुल भेजने का निश्चय कर ही लिया था।

इसी समय रूस और ब्रिटेन में भी खट पट हो गई। बाल्कन प्राय-द्वीप में तुर्की के अत्याचार का अन्त करने के लिये योरुप की बड़ी २ शक्तियां एक हो गईं। कुछ संकोच के बाद ब्रिटेन भी इस ईसाई मंडली में शामिल हो गया। रूस की विजयी फौजें कुस्तुन्तुनियां की ओर बढ़ने लगीं। तब तो ब्रिटेन तुर्की की तरफ़ होगया और अपना बेड़ा और हिन्दु-स्तानी फ़ौज लार्ड नेल्स की ओर भेजने लगा। रूस ने ब्रिटेन को नीचा दिखाने के लिये हिन्दुस्तान की ओर बढ़ना शुरू कर दिया। ताशकन्द से चल कर रूसी फौज ने अफ़ग़ान सीमा के पास आमू दरिया के ऊपरी

भाग को अपने अधिकार में ले लिया। एक रूसी मिशन अमीर से मिलने के लिये काबुल की ओर चला। अंगरेज़ों से बचने के लिये अमीर के बहुत से रिश्तदार रूस से मेल करना चाहते थे। कुछ लोग रूस से भी कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहते थे, पर अमीर किसी निश्चय पर न पहुँच सका था। सौभाग्य से योरूपीय कलह का अन्त करने के लिये बर्लिन में एक सन्धि हो गई। इसके अनुसार रूसी फौज फिर मध्य एशिया और अफ़ग़ान सीमा से लौटने लगीं। इसलिये रूस और अफ़ग़ानिस्तान में कोई मतलब को सन्धि न हो सकी।

लेकिन अंग्रज़ी मिशन पेशावर से काबुल के लिये चल ही दिया। अमीर को यह बात अच्छी न लगी। उसने कहा "जब तक अफसरों को मेरी आज्ञा न हो तब तक मिशन कैसे आ सकता है? रूसी मिशन आया ज़रूर लेकिन वह मेरी इज़ाजत से आया था।" फलतः अली मस्जिद में अफ़ग़ान गवर्नर ने अंग्रेजी मिशन को आगे बढ़ने से रोक दिया।

फिर क्या था लड़ाई खुल्लम खुल्ला छिड़ गई। पहला काम यह था कि किसी तरह अली मस्जिद के क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया जावे। यह क़िला एक अलग पहाड़ी पर बना हुआ है और ख़ैबर दर्रे की रखवाली करता है। लेकिन पेशावर में पठान लोग भरे हुये थे जो चुपचाप अफ़ग़ानों को मुफ़्त ख़बर देते थे। इस लिये रात में फौज भेज कर अचानक छापा नहीं मारा जा सकता था। अफ़ग़ान सेनापति ने पास की शाह गई पहाड़ी और ख़ैबर नदी की रक्षा का भी इन्तजाम कर रक्खा था। अली मस्जिद का १६० फुट लम्बा और ६० फुट चौड़ा क़िला पहाड़ी में अपना रंग ऐसा मिला देता है कि दूर से अलग नहीं मालूम होता है। जब अंग्रजी फौज ख़ैबर नदी की चौड़ी घाटी में पहुँची तो गोलियां आने लगीं। अन्त में अली मस्जिद पर अंग्रेज़ों का क़ब्ज़ा हो गया। कुछ फौज वहीं छोड़ दी गई पर एक टोली डक्का की ओर

आगे बढ़ी। कटा कुश्तिया में दूसरे लोग भी आकर मिल गये। यहीं पर ख़ैबर दर्रे की चौड़ाई पचास गज़ से फैल कर एक दम ६८० गज़ हो जाती है। यहीं पर ख़ैबर नदी एक चश्मे से निकलती है। इसका पानी उपर से तो साफ दिखाई देता है पर इसमें गन्धक और सुरमें का मिलाव है। इसी से अली मस्जिद के कुछ सिपाही इस पानी को पीते ही बीमार पड़ गये और मर गये। कटा कुश्तिया से पौन मील आगे एक बार दर्रा फिर चौड़ा हो जाता है। यहां बढ़ती हुई फौज को कुछ क़िलेनुमा गाँव भी दिखाई दिये। पर ये गांव गरमी के दिनों में बिल्कुल निर्जन हो जाते हैं। इस घाटी में इतना कम पानी बरसता है कि कोई फसल तयार नहीं हो पाती है। गांव वाले पीने का पानी बड़ी सावधानी से तालाबों में सुरक्षित रखते हैं। कुछ आगे बढ़ने पर एक मोड़ पर तोप गाड़ी के घोड़ों के पैर फिसल गये। तोप को बचाने के लिये घोड़ों की रस्सी काट दी गई। वे ८० फुट नीचे एक खुश्क पथरीली घाटी में धड़ाम से जा गिरे और तुरन्त मर गये। कुछ कुली सड़क की मरम्मत के लिये छोड़ दिये। फौज लंडीकोतल की ओर चली। यह दर्रा समुद्र तल से साढ़े तीन हज़ार और पेशावर से दो हजार फुट ऊँचा है। दर्रे की चोटी से १ हज़ार फुट नीचे पहाड़ी की बग़ल में ढालू सड़क परलंडीख़ाना गाँव बसा हुआ है। यहाँ पता लगा कि अफ़ग़ान फौज डक्का को ख़ाली कर गई है। डक्का के सामने चौड़ी और तेज़ काबुल नदी के दूसरे किनारे पर लालपुरा गाँव है। कहीं मोहमन्द लोग डक्का को उजाड़ न दें इसलिये फौज की एक टोली रात में ही चल कर वहाँ पहुँच गई। फिर भी मोहमन्द डाकुओं ने सब सफ़ाई कर दी। दूसरे दिन फौज ने आकर क़िले पर अधिकार कर लिया। यह क़िला एक ऊँची दीवार का घेरा है इसमें १६ बुर्ज हैं। इसके भीतर सिपाहियों के रहने के लिये बारकें बनी हैं। वहीं पर एक अच्छा घर और बाग़ीचा है जहाँ सैर करने के समय अमीर रहा करता था।

अलीमस्जिद से डक्का तक अंगरेज़ी फ़ौज को कहीं रुकावट न मिली। फिर भी रास्ते की देख भाल का पूरा पूरा इन्तज़ाम कर दिया गया और काबुल नदी में दो नावें भी तयार कर ली गईं। जगह जगह पर चौकसी के बुर्ज बना दिये गये और लंडीखाना और डक्का के रास्ते की बड़ी बड़ी घास जला दी गई। लुटेरों को एक दम गोली से उड़ा देने की आज्ञा दी गई। फिर भी ख़च्चर, घोड़े और रसद के सामान की अकसर चोरी हो जाती थी। अफ़रीदी चोरों को डराने के लिये उनके घर जलाने पड़ते थे।

कुल फौज डक्का और रास्ते के लिये छोड़ दी गई पर एक भारी टोली जलालाबाद की ओर बढ़ी जो पेशावर से ८१ मील है। अफ़ग़ान फौज इस नगर को पहले ही से ख़ाली कर गई थी। चारदह तक सड़क अच्छी थी पर चारदह से अलीबग़ान तक सड़क बहुत ख़राब थी। इसके ऊपर कंकर पत्थर बिखरे हुए थे। पानी कम था और प्रातः और मध्याह्न के ताप क्रम में ६० अंश फारेन हाइट का भेद था। अलीबग़ान से तीन मील जलालाबाद का रास्ता आसान था। आख़िरी तीन मील तो खेतों के बीच में होकर तय करने पड़े।

यद्यपि जलालाबाद एक ज़िले की राजधानी था फिर भी यहाँ के छोटे छोटे घर बहुत ही भद्दे थे और कच्ची ईंट से बनाये गये थे। तंग गलियां बड़ी गन्दी थीं। जिस क़िले बन्दी को जनरल पोलक ने १८४२ में तोड़ दिया था वह अब तक वीरान पड़ी थी। व्यापार और दस्तकारी का नाम न था। इसकी आबादी सिर्फ़ तीन हज़ार थी। कुछ गड़रिये अपने गरमी के दिनों के पहाड़ी घरों से यहां चले आये थे, इसलिये थोड़ी आबादी और बढ़ गई थी। यहां का दृश्य बड़ा अच्छा था। बरफ़ीली चोटियां देवदारू के पेड़ से ढके हुए पहाड़ी ढाल और काबुल नदी के दोनों ओर चपटे मैदान बड़े सुहावने थे। पर खाने पीने की कमी थी। जलवायु भी कड़ी थी। कभी बरफ़ीली आँधी खुले रास्ते में

कुली और जानवरों को तंग करती, कभी घाटी के पूर्वी सिरेसे धूली भरी हुई आन्धी सारे पड़ाव को अन्धेरे में डालकर हैरान करती। जलालाबाद पर अधिकार जमाने के बाद फौज रास्ते को साफ रखने और पेशावर से रसद मंगाने में लग गई। ८१ मील से इतनी बड़ी फौज़ के लिये रोज़ रोज़ रसद लाना और कुछ आगे बढ़ने के लिए जमा करना आसान न था। बाज़ार की चढ़ाई में गाँव जलाये गये और विद्रोहियों से हरजाना वसूल किया गया।

कुर्रम घाटी को दुर्गम सफेद कोह उत्तर में ख़ैबर दर्रे और जलालाबाद की घाटी से अलग करता है। इसके दक्षिण में खोस्ट की छोटी घाटी है। पश्चिम में सफेद कोह की सर्वोच्च चोटी सीताराम है। यहीं से पैवार पहाड़ शुरू होता है। इसके बीच बीच में भयानक कन्दरायें हैं। यह पहाड़ तले से लेकर चोटी तक देवदारू आदि पेड़ों से ढका है।

कुर्रम घाटी ६० मील लम्बी और ३ मील से लेकर १२ मील तक चौड़ी है। इसके निकास के कुछ ही नीचे कुर्रम किले बने हुए हैं। जहाँ पर नदी की चौडाई १५० गज़ है। किले से बीस मील नीचे की ओर नदी की चौड़ाई २५० गज़ हो जाती है। इस स्थान से लेकर थल तक यह नदी धीरे धीरे चौड़ी होती जाती है। इसके किनारों पर फलों के बाग़ीचों से घिरे हुये गांव हैं। कहीं कहीं कुछ ढालों और कछारी धरती पर सिंचाई का प्रबन्ध है। वैसे कुर्रम घाटी एक पथरीला उजाड़ प्रदेश है। इसके ऊपरी भाग में तूरी लोग और निचले भाग में बङ्गश लोग बसे हुये हैं। ऊपरी भाग में पहुंचने के लिये पगडन्डी बनी हुई हैं। रास्ते में कापियाँग में क़िलेनुमा अफ़ग़ान चुंगी घर हैं। लार्ड राबट के सिपायों ने पहले इसी पर क़ब्ज़ा कर लिया। अफ़ग़ानी सिपाहियों ने इसे हाल ही में खाली किया था इसलिए उनका पीछा करने के लिये अहमदे शमा नगर की ओर फौज भेजी गई। यह नगर

घाटी के ऊपर भाग में कापियांग से ठीक ८ मील दूर था। पर यह क़िला भी सूनसान मिला। इसके बाद घोड़ों और ऊंटों पर रसद लाद कर फौज़ हाज़िर पीर ज़ियारत की ओर बढ़ी। यह स्थान १६ मील आगे था। इस मंज़िल के पहले पत्थरों का बिछौना बिछा हुआ था। इसके बाद सूनसान उजाड़ और नाटे खजूरों का बन मिला। बनके बाहर निकलने पर आध मील चौड़ी और १२ मील लम्बी खेतों की पेटी दिखाई दी। यहाँ बहुत से गाँव थे। रसद के सामान की भी कमी न थी। लार्ड राबर्ट ने एक दरबार किया और फ़िरकों के सरदारों को विश्वास दिलाया कि अंगरेज़ी फौज उनकी भलाई के लिये ही आगे बढ़ रही है। कूच करने के बाद दरबाज़ा दर्रे के पास पड़ाव डाला गया। यहाँ बड़ा कड़ा जाड़ा पड़ा, रात को थर्मामीटर का पारा ताप क्रम सहनांश (०) से भी कई अंश नीचे गिर गया।

२५ नवम्बर को ख़बर मिली कि अमीर की फौज़ें कुर्रम-क़िलों को ख़ाली कर गई हैं। इस लिये दरबाज़ा दर्रे में होकर फौज़ आगे बढ़ी। कुर्रम नदी को पार करके सेनापति ने क़िलों पर नज़र डाली। फिर उसने १२ मील आगे पैवार गांव की तरफ घोड़ा दौड़ाया। यहां दुरबीन लगाने पर अफ़ग़ान सिपाही केतल दर्रे की ओर बढ़ते हुए दिखाई दिये। यहां दर्रा समुद्रतल से ८६०० फुट और किलों से ३८२० फुट ऊंचा है। इसी दर्रे के ऊपर होकर जाने वाली सड़क कुर्रम घाटी को काबुल से मिलाती है। तुर्राई में एक साधारण चढ़ाई हुई।

सपीन-गवाइ-दर्रा या सफेद गाय का दर्रा इससे कुछ कुछ अधिक (१४०० फुट) ऊँचा है। यह दर्रा पैवार केतल से जुड़ा है। जहां अफ़ग़ान फौज अर्द्ध चन्द्राकार रेखा में सजी हुईथी। गुरखा और पंजाबी फौज़ों ने रात में कूंच कर के इस स्थान में सबेरे ही दुश्मन पर छापा मारा। गोलियों की बौछार पड़ने पर भी गुरखा लोग ऐसे झपटे कि

अफ़ग़ान लोगों के पैर उखड़ गये और ज़बरदस्त किले पर अंगरेज़ों का अधिकार हो गया।

यहां सुप्रबन्ध हो जाने पर जनरल राबर्टस कुछ फ़ौज लेकर शुतुर-गर्दन दर्रे की ओर बढ़े। पहले दिन १२ मील की मंजिल थी। अली खेल गांव में रात बिताई गई। दूसरे दिन अली खेल से ३½ मील पश्चिम रोकियान * में पड़ाव डाला गया। इसके बाद हज़ार दरख्त नाम की कन्दरा में होकर जाजी तन्ना की ओर जाना पड़ा। यहीं से गिलज़ई प्रदेश शुरू होता है। कुछ अफसरों के साथ लार्ड राबर्टस शुतुर गरर्दन दर्रे की चोटी पर चढ़े। यहाँ से लोगार और काबुल नदियों की घाटियाँ साफ साफ दिखाई देती हैं। इस मार्ग में कभी अगाध कन्दराओं, कभी पथरीली घाटियों, कभी देवदार से ढके हुए ढालों और कभी बर्फीली घाटियों से होकर जाना पड़ता था।

हर रोज़ ठंड बढ़ती ही जाती थी। सबेरे को बर्फीली † आंधियाँ चला करती थीं। गांव वाले इतने ग़रीब थे कि वे जानवरों को चारा और सिपाहियों को भोजन देने में असमर्थ थे। रास्ता हरियाब नदी के किनारे होकर उस स्थान तक गया था जहाँ पर यह नदी कुर्रम नदी से मिलती है। आगे सपारी दर्रे को पार करने में बड़ी कठिनाई पड़ी।

एक दूसरी अंगरेजी फौज ने खोजक दर्रे और पिशीन पर अधिकार कर लिया। इससे कंधार का मार्ग सुरक्षित हो गया।

---

* इस नाम के पड़ने का कारण यह है कि इसके पास देवदारु का बन है।

† ठंड से स्याही जम जाती थी चिट्ठी लिखना असम्भव हो जाता था।

बोलन दर्रे से आगे बढ़ने पर एक साधारण लड़ाई हुई। इसमें अङ्गरेजों की जीत हुई। बड़ी धूम धाम से फौज ने दक्षिण की ओर शिकारपुर दरवाज़े से कन्धार शहर में प्रवेश किया। यह जलूस पूर्व की ओर काबुल दरवाज़े में होकर निकला। पर शहर की सभी दुकानें बन्द थीं। शहर के लोग गोरे और काले काफिरों को हैरानी की नज़र से देख रहे थे। कन्धार शहर पर अङ्गरेजों का अधिकार अवश्य हो गया लेकिन शहर में मौक़ा पाने पर ग़ाज़ी लोग (धर्म के नाम पर काफिरों को क़त्ल करने वाले अन्ध विश्वासी मुसलमान) बाजार और गलियों में सिपाहियों और अफसरों के ज़ैल (छुरी) भोंक देते या उनके गोली मार देते थे। बड़ी फौज के लिये रसद की दूसरी कठिनाई थी। फिर भी एक टोली क़िलाते ग़िलज़ई पर और दूसरी टोली गिरिश्क * पर अधिकार जमाने के लिये आगे बढ़ी। दोनों ही पर अङ्गरेजी अधिकार हो गया। पर कुछ ही दिनों में गिरिश्क के आस पास हलमन्द घाटी का भी दाना और भूसा समाप्त हो गया। इस तरह क़िलाते ग़िलज़ई और गिरिश्क की फौजों को कन्धार से रसद पहुँचानी पड़ती थी। रसद और ऊँटों की रास्ते में दुश्मनों से बड़ी चौकसी करनी पड़ती थी। इसी बीच में प्रधान सेनापति कलकत्ते से जलालाबाद को आये। जलालाबाद के पूर्व और पश्चिम के स्थानों पर तेज़ी के साथ क़ब्जा किया गया। इस प्रकार गंडमक अङ्गरेजों के हाथ आया।

अभागे शेर अली का सगा पुत्र याकूब ख़ां ही उसका कट्टर दुश्मन हो रहा था। पिता को मरणासन्न देख कर उसने अपने पिता और अङ्गरेजों के बीच सन्धि कराने और मध्यस्थ बनने के लिये ८ फरवरी को एक पत्र जलालाबाद के अफसर के पास भेजा। २१ तारीख़ को शेर अली का देहान्त हो गया। इसकी ख़बर २८ तारीख़ को जलाला-

* यह नगर हलमन्द नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है।

बाद पहुँची। वाइसराय ने एक पत्र में नये अमीर के दुःख में समवेदना प्रगट की। दूसरे पत्र में चार शर्तों पर सन्धि करने की इच्छा प्रगट की। चार शर्तें ये थीं :—

१—खैबर और मिचनी दर्रों पर अमीर अपना अधिकार छोड़ दे और उनके पास रहने वाले स्वतन्त्र फ़िरक़ों से कोई सम्बन्ध न रक्खे।

२—कुर्रम ज़िले में (थाल से शुतुर्गर्दन की चोटी तक) और पिशीन और सिबी ज़िलों में अङ्गरेजों का अधिकार बना रहे।

३—बाहरी मामलों में काबुल की सरकार अङ्गरेजों की सम्मति से काम करे।

४—अङ्गरेज़ी अफ़सरों को उचित संरक्षकों के साथ अफ़ग़ानिस्तान में उन शहरों में रहने की आज्ञा मिले जहां आगे निश्चित किया जावे।

इस सम्बन्ध में याकूब ख़ां ने गंडमक में ब्रिटिश से मई मास में भेंट की। उसका उचित स्वागत किया गया। बहुत बहस के बाद प्रायः सब शर्तें मंजूर कर ली गईं। केवल शुतुरगर्दन के स्थान पर कुर्रम ज़िले में अली खेल नगर की हद्द मानी गई। साथ ही कुर्रम और काबुल के बीच में तार निकालने की बात भी तय हो गई। पर सितम्बर मास में काबुल शहर में अङ्गरेज़ी राजदूत की हत्या हुई। इस लिये दुबारा चढ़ाई की ज़रूरत पड़ी। लार्ड राबर्ट ने शुतुर्गर्दन दर्रे के रास्ते से बढ़ कर काबुल के पास चरासिया में अफ़ग़ान सेना को तितर-बितर कर दिया और अक्टूबर मास में विजयी होकर काबुल में प्रवेश किया। याकूब ख़ां ने आत्म समर्पण किया और वह हिन्दुस्तान को भेज दिया गया। दूसरी फ़ौज कन्धार से चल कर ग़ज़नी होती हुई काबुल में आ पहुँची। फिर भी देश में पूरी शान्ति नहीं हुई। पर कठिनाई यह थी कि किसके साथ सन्धि करके फ़ौजों को लौटा लिया जावे।

अन्त में शेर अली के बड़े भाई का लड़का अब्दुलरहमान रूस में दस वर्ष बिता कर उत्तरी प्रान्त में आया। उसी से सन्धि की गई। इसबार सन्धि में ख़ास बात यह थी कि अमीर विदेशियों से कोई सम्बन्ध न रक्खेगा और ब्रिटिश सरकार अफ़ग़ानिस्तान को बाहरी हमलों से बचावेगी।

कन्वार का प्रान्त अफ़ग़ानिस्तान से अलग कर लिया गया। वहां एक दूसरा अमीर बिठाया गया। पर शेर अली के छोटे लड़के अयूब ख़ां ने कन्धार पर चढ़ाई की। उसे रोकने के लिये जो ब्रिटिश सेना गई उस सेना को उसने मैवन्द में हरा दिया और कन्धार को घेर लिया। सरराबर्ट्स की मातहती में १० हजार फौज काबुल से कन्धार को चली। इस नई सेना ने अयूब ख़ां की फौज को छिन्न भिन्न कर दिया। ब्रिटिश सेना के हिन्दुस्तान चले आने पर अयूब ख़ां ने फिर कन्धार पर हमला किया। इस बार अब्दुर रहमान ने उसे फारिस की ओर भगा दिया।

अब्दुर रहमान ने लगभग बीस वर्ष राज्य किया। उसका बहुत सा समय घरेलू झगड़ों को दबाने में चला गया पर उसने अफ़ग़ानिस्तान में शान्ति स्थापित कर दी। अफ़ग़ानिस्तान की सीमा भी निर्धारित हो गई। पर १८८६ ई० में पंजदेह में रूसी सीमा पर रूस, अफ़ग़ानिस्तान और ब्रिटिश में लड़ाई होते होते बच गई। रूसी सिपाहियों ने अफ़ग़ान सेना पर गोलियां चला दीं पर यह मामला शान्ति पूर्वक तय हो गया। पहली अक्तूबर सन् १९०१ ई० में अब्दुर रहमान का देहान्त हो गया। दो दिन बाद उसका बड़ा लड़का हबीबुल्ला अफ़ग़ानिस्तान का अमीर बना। उसने अफ़ग़ान फ़िरका में अनिवार्य सैनिक सेवा का सिद्धान्त चलाया उसने अपने पिता की तरह अंग्रेज़ी सरकार के साथ दोस्ती का बर्ताव रक्खा और सब बाहरी मामलों में ब्रिटिश सरकार की राय ली। १९०७ ई० में रूस और ब्रिटेन में एक सन्धि हुई। जिसके अनुसार अफ़ग़ानिस्तान एक तटस्थ राज्य निश्चित माना गया। १९०७ ई० में अमीर

अफ़ग़ानिस्तान के भूत-पूर्व शाह अमानुल्ला इँगलैंड के सम्राट् पंचम जार्ज के साथ विक्टोरिया-स्टेशन (लन्दन) में चुने हुए सैनिकों का निरीक्षण कर रहे थे।

हबीबुल्ला हिन्दुस्तान में आये। इससे अंग्रेज़ी सरकार और अमीर के सम्बन्ध और भी अधिक अच्छे हो गये। हिन्दुस्तान से लौटने पर अमीर ने अपने देश के शिक्षा आदि कई विभागों में बहुत से सुधार किये। १९१४ से १९१८ तक महायुद्ध चला। श्रीमान् राजा महेन्द्र प्रताप सिंह के साथ जर्मन और तुर्की अफ़सरों का एक मिशन अमीर को अपनी ओर मिलाने के लिये आया। पर अमीर ने तटस्थ रहना ही पसन्द किया।

सन् १९१९ ई० की २० फर्वरी को तीन बजे सवेरे अमीर को किसी ने बिस्तर पर ही गोली से मार दिया। अमीर अपने देश के विविध भागों की सैर करने निकला और इस समय लमग़न में था, यहीं यह दुर्घटना हुई।

इस समय उसका भाई नसरुल्ला जलालाबाद में था और उसका तीसरा बेटा अमानुल्लाख़ां काबुल में गवर्नर था। दोनों ही अफ़ग़ानिस्तान के अमीर घोषित किये गये। पर सभी वर्ग के लोगों ने युवराज अमानुल्ला को पसन्द किया इसलिये नसरुल्ला को एक दम त्याग पत्र देना पड़ा।

अमानउल्ला के हाथ में ख़ज़ाना तोपख़ाना और फौज थी इस लिये दूसरे भाई भी चूं न कर सके।

वर्तमान अवस्था।

यहां शाह अमानुल्ला की कठिनाइयों का केवल आरम्भ था। कट्टर लोग नसरुल्ला के क़ैद करने से बिगड़ रहे थे। साधारण लोगों में भी हबीबुल्ला की हत्या करने वालों के सम्बन्ध में असन्तोष था। फौज को इतना उभाड़ दिया गया कि फौज को काबुल से दूर भेजना पड़ा। इसी समय रौलट बिल के कारण हिन्दुस्तान में भी बड़ी खलबली मच

रही थी। इन सब बातों का फल यह हुआ कि अमानुल्ला ने अपनी कठिनाइयों से बचने के लिये हिन्दुस्तान से युद्ध छेड़ दिया।

ब्रिटिश सरकार इस तरह के हमले के लिये बिल्कुल तयार न थी। प्रायः साढ़े तीन लाख फौज भिन्न भिन्न स्थानों पर भेज दी गई। जलालाबाद और काबुल में भी हवाई जहाज़ों से गोले बरसाये गये। अगर रेल या मोटर लारियों के साधन उपलब्ध होते तो १० ही दिन में जलालाबाद भी छिन जाता। फिर भी इन १० दिनों में अफ़गानों की सारी हार हुई और उन्होंने सन्धि के लिये प्रार्थना की। ८ अगस्त को सन्धि हुई। पर सन्धि में अफ़गानिस्तान को ऐसी अच्छी शर्तें मिलीं जिन की कभी आशा भी नहीं की जा सकती थी।

अंग्रेज़ों से सन्धि हो जाने के बाद शाह अमानुल्ला ने फारिस, तुर्की और रूस से मित्रता की सन्धि की। बाहरी पड़ोसियों से समझौता कर लेने पर शाह अमानुल्ला ने देश को सुधारने के लिये व्यवस्था की। फिर उन्होंने योरूप की ठानी। योरुप की यात्रा केवल इसी उद्देश्य से की गई कि वहां की संस्थाओं से अफ़गानिस्तान को यथोचित लाभ पहुँचाया जावे। इस यात्रा में आपको लगातार परिश्रम और अध्ययन करना पड़ा। इस यात्रा में भिन्न भिन्न देशों ने आपका जो स्वागत किया वह सचमुच आश्चर्यजनक चित्र था। इस स्वागत के पीछे कुछ न कुछ स्वार्थ अवश्य था। किसी देश ने व्यापार के लोभ से किसी ने राजनैतिक कारणों से आपका उच्च से उच्च सन्मान किया पर अपने अपने सब भाषणों में अपने देश के हितों को सर्वोपरि रक्खा। इस यात्रा में आप ने इङ्गलैंड, फ्रांस, जर्मनी, रूस, तुर्की आदि देशों की फौज, शिक्षा, व्यापार आदि बातों को समझने और सीखने की जी तोड़ कोशिश की।

योरुप से लौटने पर अफ़गानिस्तान के लोगों ने आप पर वैसा ही प्रेम प्रगट किया जैसा पुत्र पिता के लिये प्रगट करता है। इस प्रेम का बदला

शाह अमानुल्ला ने कोरे शब्दों ही में न दिया। वरन् वे अपने देश को उठाने के लिये जी जान से लग गये।

अफ़ग़ानिस्तानके योग्य लड़के और लड़कियां विदेशोंमें शिक्षा ग्रहण करने के लिये भेजे गये। देश में भी स्कूलों की संख्या बहुत बढ़ा दी गई। शिक्षा का ढंग भी बहुत ही उन्नत कर दिया गया। स्त्रियों का पर्दा दूर कर दिया गया। अफ़ग़ानी जिरगाह के सदस्यों का पहनावा एक दम विलायती ढंग का कर दिया गया। क़ाबुल के बाहर नवीन राजधानी पग़मान की बनावट और सजावट दुनिया के किसी भी देश की बनावट सजावट से टक्कर ले सकती थी। पर यहां बैंड सुनने के लिये और शाही बग़ीचे में सैर करने के लिये केवल उन्हीं लोगों को आज्ञा थी जो विलायती भेष में हों।

मुल्लाओं की शक्ति भी कम करने का प्रयत्न किया गया। उन्हें व्याख्यान देने के लिये सरकारी सार्टीफ़िकेट लेने की आवश्यकता पड़ने लगी। इन तथा और अनेक सुधारों से पुरानी लकीर के फकीर अफ़ग़ानी लोग बिगड़ खड़े हुये। मुल्लाओं ने बाहर तो लोगों को भड़काने का फतवा दिया। लेकिन शाह अमानुल्ला से क़ुरान की सौगन्ध खाकर यह प्रार्थना की कि ख़ून ख़राबी बचाने के लिये शाह अमानुल्ला अपने बड़े भाई को राज दे दें। अमानुल्ला इन विश्वासघाती मुल्लों के धोखे में फंस गये। पर एक हफ़्ते के भीतर डाकुओं का सरदार बच्चा-सक्का या भिश्ती बेटा अफ़ग़ानिस्तान का अमीर बन बैठा। इसके हाथ में शाही ख़ज़ाना और तोपखाना आ जाने पर इसके दिमाग़ बहुत ऊँचे हो गये। इसने सभी सुधारों को चौपट कर दिया और मज़हब के नाम पर पुरानी कुरीतियों को उच्च स्थान दे दिया। उसकी डींग है कि मैं सभी तरह के विद्रोह को दबाने के लिये काफ़ी मज़बूत हूँ। अभी तक अमानुल्ला की फौजों और हबीबुल्ला (डाकू अमीर) की फौजों से जो मुठ भेड़ हुई उसमें उसकी डींग सच निकली। पर पुराने लोग भी इस

नये अमीर के अत्याचारोंसे तंग आ रहे हैं। सारा कारबार और व्यापार रुका हुआ है। इसलिये उसके राज्य का क़ायम बना रहना भी असम्भव है। २५ मई की खबर है कि शाह अमानुल्ला अपनी स्त्री के साथ अचानक चमन में आ गये। और बम्बई हो कर इटली चले गये। इस से अफ़ग़ानिस्तान के सम्बन्ध में किसी तरह की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती पर यदि अफ़ग़ानिस्तानकी गड़बड़ी ने रूस और ब्रिटेन को अपनी ओर शामिल कर लिया तो यह युद्ध गत योरूपीय युद्ध से कम भयानक न होगा। सभी लोगों का भला इसी में है कि अफ़ग़ानिस्तान में शीघ्राति-शीघ्र शान्ति स्थापित हो जावे।

———

लन्दन की सड़कों पर शाह अमानुल्ला का शानदार स्वागत। पंचम जार्ज के साथ अमानुल्ला की सवारी देखने के लिए अपार भीड़ हो रही थी।

काफ़िरिस्तान

काफ़िरिस्तान का देश अफ़ग़ानिस्तान और चित्राल के बीच में स्थित है। साढ़े चौंतीस और छत्तीस अक्षांश तथा ७० और७१ ३०- देशान्तर के बीच का सारा प्रदेश काफ़िरिस्तान है। इसका क्षेत्रफल प्रायः ५००० वर्ग मील है। इस प्रदेश के उत्तर में बदख़शां, पूर्व में चित्राल, दक्षिण-पश्चिम में ख़ास अफ़ग़ानिस्तान है।

काफ़िरिस्तान की सभी नदियों का पानी काबुल नदी में पहुँचता है। बाशगुल नदी अधिक प्रसिद्ध है। जो अरांदू के पास नदी में मिल जाती है। ऊँचे ऊँचे पहाड़ इन नदियों की घाटियों को अलग करते हैं। जितने दर्रे काफ़िरिस्तान को बदख़शां से मिलाते हैं वे सब तीन मील से अधिक ही ऊंचे हैं। चित्राल की ओर जाने वाली सड़कों को कुछ कम ऊंचे दर्रे से हो कर गुजरना पड़ता है। ये दर्रे भी सरदी में बरफ़ से ऐसे घिर जाते हैं कि सरदी के दिनोंमें काफ़िरिस्तान प्रायः चारों ओर से बड़ा ही मनोहर रहता है।

कुछ कम ऊँचे ढाल जंगली जैतून और सिन्दुर के पेड़ों से ढके रहते हैं। अखरोट, शहतूत, अंगूर, सेव आदि फलों के पेड़ बहुत हैं। ये पेड़ गांवों और सड़कों पर सब कहीं मिलते हैं। ५००० से ६००० फ़ुट की ऊंचाई तक देवदार के पेड़ पाये जाते हैं। अधिक ऊंचाई (१७००० फ़ुट) पर जंगली झाड़ फूलदार पौदे और घास अधिकता है।

काफ़िर लोग आर्य हैं। चारों तरफ से इस्लामी दुनियां से घिरे होने पर भी वे मुसलमान नहीं बने। काफ़िर लोग प्रायः सिर मुड़ाये रखते हैं पर उनकी चोटी बड़ी चौड़ी होतीहै। अगर कोई उनका आदमी मुसलमान हो जाने के बाद फिर अपने पुराने धर्म में आना चाहे

तो उसे तब तक चोटी (कारूंच) रखने का अधिकार नहीं होता है जब तक वह युद्ध में एक मुसलमान को मार न डाले। उनकी स्त्रियां भी बड़ी मज़बूत होती हैं। वे अपने सिर के लम्बे बालों को बांधे रहती हैं। काफ़िर लोग अपने कुटुम्ब के लोगों को बहुत प्यार करते हैं और जीवों पर दया रखते हैं। उनकी बकरियां और गायें उनके इशारे से चलती हैं। पर ये लोग बड़े वीर होते हैं। इनकी वाण चातुरी देखकर दंग रह जाना पड़ता है। दो तीन की टोलियाँ शत्रु के गावों में निडर होकर घुस जाती हैं और शत्रु को मार कर अपनी पहाड़ियों पर लौट आती हैं।

ये लोग देव, पितर, मूर्त्ति और मुनियों को मानते हैं। ये लोग लकड़ी की मूर्तियाँ बनाते हैं। इनके मन्दिर बड़े विशाल होते हैं। मन्दिर हर गांव में होते हैं। काफिर लोगों का सामाजिक संगठन बड़ा पक्का है। अपने समाज का प्रबन्ध करने के लिये वे हर साल एक उर या उरीर सरपन्च) को चुनते हैं। उसको सहायता देने के लिये १२ सदस्यों की जास्त या पंचायत होती है। जो आदमी सर-पंच चुना जाता है उसी की आज्ञा से सिंचाई का जल किसानों को मिलता है। अक्सर काफी पानी रहता है और सिंचाई में मुश्किल नहीं पड़ती है। पर जिस साल कम बरफ पड़ती है और ग्रीष्म ऋतु खुश्क और गरम होती है, उस साल झगड़ा हो जानेका डर रहता है पर उरीर सब इन्तजाम ठीक ठीक कर देता है। उरीर ही नहरों की मर-म्मत भी कराता है। उरीर का दूसरा काम यह है कि समय से पहले कोई अखरोट और अंगूर आदि फलों को न तोड़ने पावे। इस नियम को भङ्ग करने वालों को वह कड़ा दण्ड देता है। केवल अतिथि और दर्शक लोग इस दन्ड से बरी किये जा सकते हैं। चोर पर चोरी के माल से ७ गुना अधिक जुरमाना करता है। हत्यारे को देश निकाले की सज़ा दी जाती है और उसकी सारी जायदाद ज़प्त कर

ली जाती है। अगर दोनों तरफके लोगों ने एक एक क़त्ल किया हो तो वे एक पशु की बलि चढ़ाते हैं और दोनों अपराधी अपने अपने अंगूठे को खून में डूबोते हैं। इस प्रकार उनमें सुलह करा दी जाती है। इस प्रथा से काफिरवंश में व्यर्थ की हत्या नहीं होने पाती है। अगर पठानों की तरह खून का बदला खून से ही लिया जाता तो काफ़िरों का वंश कभी का नष्ट हो गया होता ऐसे। उत्तरदायी सरपंच के चुने जाने पर लोग बड़ी खुशी मनाते हैं और दावत उड़ाते हैं। उसीर पुरोहित का भी काम करता है।

काफ़िर लोग खद्दर के कपड़े पसन्द करते हैं। उनका पाजामा छोटा और ढीला होता है। यदि कुरता न भी हुआ तो वे उसके उपर बकरी की खाल का कोट ही पहन लेते हैं। अक्सर वे सिर खुला रखते हैं और किसी उत्सव में बाहर जाने पर ही पूरे कपड़े पहनते हैं। वे लोग सरदी का वीरता से मुक़ाबला करते हैं। बरफ पर नंगे पाँव ही चलते हैं। उनकी स्त्रियाँ भी सीधे सादे कपड़े पहनती हैं। वे बहुत दिनों तक एक ही कपड़ा पहने रहती हैं इस लिये उनके कपड़े अक्सर फटे और मैले होते हैं।

यहाँ के लोगों का मुख्य भोजन चना है वैसे वे जौ गेहूँ और मकई भी उगाते हैं। भिन्न भिन्न ऊँचाई पर भिन्न भिन्न ऋतु में खेती होती है। उनके हल हलके होते हैं। स्त्रियाँ उन्हें अपने कंधों पर आसानी से ले जाती है। यहाँ की गायें और बकरियाँ बड़ी सुन्दर होती हैं पर भेड़ें इतनी अच्छी नहीं होतीं।

ये लोग अपने देश से फल दिसावर को भेजा करते हैं। यहाँ के सभी लोग धनुष-बाण, भाला और बन्दूक़ चलाने में चतुर होते हैं। यही कारण है कि सब ओर से दुश्मनों से घिरे होने पर भी स्वाधीन रह सके हैं।

सीमा प्रान्त

अगर हम डेरा ग़ाज़ीख़ाँ के सामने सुलेमान पहाड़ के पश्चिम सिरे से ठीक पश्चिम की ओर एक लकीर क्वेटा तक खींचें तो उस लकीर के दक्षिण में बलोच और उत्तर में पठान जातियाँ मिलेंगी। इस प्रकार सफेद कोह और सुलेमान का प्रदेश पठानों का देश है। इस प्रदेश की पूर्वी सीमा सिन्ध नदी और पश्चिम सीमा अफ़ग़ानिस्तान है। इसके उत्तर में काशमीर और कुँआर नदी है।

वह लम्बा प्रदेश बहुत ही ऊँचा नीचा है। यहाँ उजाड़, पथरीली पहाड़ियाँ और गहरी गहरी घाटियाँ हैं। कहीं कहीं पहाड़ी नदियाँ हैं। किसी किसी पहाड़ी के सपाट ढाल या नदी के मोड़ पर कछारी धरती में एक आध खेत है। यहाँ के रास्ते बड़े भयानक हैं। इस प्रदेश में कुर्रम, जोब, काबुल तथा उसकी सहायक चित्राल, बरा, स्वात और कल्यानी नदियाँ हैं।

पश्तो या पख़्तो पठानों की भाषा है। कोमल कन्धारी बोली पश्तो नाम से पुकारी जाती है। पेशावर घाटी की कर्णकटु भाषा को पख़्तो कहते हैं। खटक प्रदेश की उत्तरी रेखा ही पश्तो को पख्तो से जुदा करती है। यह भाषा संस्कृत, प्राकृत और अरबी फ़ारसी के मिश्रण से बनी है।

पठान लोग विषयासक्त और अत्यन्त निर्दय होते हैं। इनके लोभ का भी ठिकाना नहीं है। रुपये के लोभ से ये सभी कुछ कर सकते हैं। आस पास के लोगों में "अफ़ग़ान बेईमान" कहावत मशहूर है। पर ये लोग "पुख्तन वाली" के नियमों को मानते हैं। इसके अनुसार ये शरणागत शत्रु को भी आश्रय देते हैं। बदला लेना इनका दूसरा धर्म

है। इस प्रकार अतिथि सत्कार करना इनका तीसरा धर्म है। ये लोग बदला लेना कभी नहीं भूलते हैं। अंग्रेज़ी फ़ौज में जहाँ दूसरे सिपाही शादी विवाह के लिये छुट्टी लेते हैं वहाँ पठान सिपाही अपने शत्रु से बदला लेने के लिये छुट्टी लेते हैं।

पठान लोग अधिकतर खेतिहर या चरवाहे होते हैं। कुछ पौबिन्दा लोग तिजारत भी करते हैं। इनके घर क़िलेनुमा होते हैं। इनके गांव कई भागों या कंडियों में बटे होते हैं। प्रत्येक कंडी में किसी ख़ास खेल या ख़ान्दान के लोग रहते हैं। हर एक कंडी का प्रबन्ध करने के लिये एक मालिक होता है। हर एक कंडी में एक जुमात या मस्जिद भी होती है। इसकी देख भाल मुल्ला के हाथ में रहती है। मस्जिद के पास ही हुजरा या सभा भवन होता है। दर्शक या यात्री लोग यहीं ठहरते हैं। गाँव की सभा भी यहाँ होती है। महत्व की बातें इसी सभा या जीरगाह में तै होती हैं। ख़ान या फ़िरके का मालिक सभापति बनता है। अधिकतर पठान कट्टर सुन्नी हैं। केवल तुरी, कुछ बंगश और ओरकज़ई लोग शिया हैं जो मोहम्मद साहब के चचेरे भाई अली और अरी की सन्तान को भी मानते हैं।

उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रान्त भारतवर्ष का प्रायः सब से छोटा प्रान्त है। इसकी लम्बाई प्रायः ४०० मील और औसत चौड़ाई सौ डेढ़ सौ मील है। इसका क्षेत्र फल ३८००० वर्ग मील है। इस प्रान्त का केवल १३००० वर्ग मील प्रदेश सीधे ब्रिटिश शासन में है। शेष २५००० वर्ग मील पर भिन्न भिन्न अर्द्ध स्वतन्त्र फिरकों का अधिकार है। भीतरी प्रबन्ध में ये लोग स्वतन्त्र हैं। बाहरी मामलों में ये भारत सरकार के अधीन हैं। ब्रिटिश प्रदेश पांच (हज़ारा, पेशावर, कोहाट, बन्नू और डेराइस्माइलख़ां) ज़िलों में बटा हुआ है। इन ज़िलों की पश्चिमी सीमा प्रायः ६०० मील लम्बी है। इसी सीमा के बाद सीमा प्रान्तीय जातियों का प्रदेश है। इन फिरकों पर चीफ़ कमिशनर का

अधिकार सीधा नहीं है इन लोगों पर वह स्वात दीर, चित्राल, ख़ैबर, कुर्रम और उत्तर दक्षिणी वज़ीरिस्तान की पोलिटिकल एजन्सियों के द्वारा शासन करता है। इस प्रकार इस प्रान्त की बाहरी सीमा या डयूरेड लाइन ८०० मील से कम नहीं है। यही लाइन ब्रिटिश और अफ़ग़ान प्रदेश को अलग करने वाली सीमा है।

पांच ब्रिटिश जिलों की आबादी २२ लाख है। सीमा प्रान्त के बाहरी भाग की आबादी प्रायः १५ लाख है। संख्या में कम होने पर भी ये लोग बड़े लड़ाका हैं। इसलिये पेशावर कोहाट, बन्नू और डेरा स्मायलखाँ में क्रमशः ख़ैबर और मलाकन्द, कुर्रम, टोची और वज़ीरिस्तान की रक्षा के लिये फौज रक्खी गई हैं। ये फौजें ख़तरे की ख़बर पाते ही चढ़ाई के लिये तैयार रहती हैं। इनको सहायता पहुँचाने के लिये रेल और सड़कों का भी प्रबन्ध किया गया है। एक रेलवे लाइन नौशेरा से मलाकन्द को जाती है। दूसरी रेलवे लाइन कुशल गढ़ में सिन्ध नदी को पार करके कोहाट और हांगू होती हुई थाल को गई है। थाल नगर कुर्रम घाटी के दक्षिणी सिरे पर स्थित है। एक तीसरी लाइन कालाबाग में सिन्ध नदी को पार करके पहाड़ के ढाल पर बन्नू शहर को गई है। इनके सिवा और भी कई सड़कों का विचार हो रहा है।

यूसुफ़ज़ई लोग पेशावर जिले और पासवाले स्वाधीन प्रदेश में रहते हैं। ये लोग प्राचीन गान्धारियों की सन्तान हैं। पहले ये पेशावर घाटी में ही रहते थे। पांचवीं सदी में कुछ लोग यहाँ से चलकर हल्मन्द की घाटी में जा बसे और ग़ोर के अफ़ग़ानों में हिलमिल गये। पन्द्रहवीं सदी में कुछ लोग उत्तर की ओर काबुल को चले गये। धीरे धीरे इन लोगों ने काबुल नदी के उत्तर में उस सारे प्रदेश को घेर लिया जो सिन्ध नदी से लेकर बाजौर और स्वात तक फैला हुआ है। यूसुफ़ज़ई लोग सुडौल किसान होते हैं। वे हँसमुख और स्वाभिमानी होते हैं। उनका अतिथि

सत्कार बहुत प्रसिद्ध है। उनका प्रदेश काफी समतल है और सिंचाई होने पर बड़ा उपजाऊ हो जाता है। पर इनका प्रदेश अनेक प्राचीन हिन्दू और बौद्ध शहरों और मन्दिरों के भग्नावशेषों के लिये इससे भी अधिक मशहूर है। यहीं अर्जुन ने देव से युद्ध कर दैवी अस्त्र प्राप्त किया था ह्वान सांग ने महावन के असंख्य विहारों का जिकर किया है। जादून लोग यदु की सन्तान हैं। ये लोग अब से तीन हजार वर्ष पहिले गुजरात से चलकर यहां (काबुल और कन्धार में) आ बसे। कुछ लोग महावन पहाड़ के ढालों पर बस गये। कुछ लोग हज़ारा जिले में चले गये। सुल्तानपुर, मानसेहरा और एबटाबाद में उनके वंशज लोग अब भी मिलते हैं। जिस तरह से ये लोग संस्कृत भूलकर पख्तो बोलने लगे उसी तरह ये लोग पख्तो भी भूल गये। आजकल ये लोग पंजाबी बोलते हैं।

हिन्दुस्तानी फ़ाकेमस्त—सन् १८२३ ई० में सय्यद अहमदशाह नामी बरेली का एक मौलवी भरतपुर से भागकर इस ओर आगया। यह पिंडारियों का दोस्त था, इसने दिल्ली में अरबी पढ़ी थी। इसने कलकत्ते मार्ग से मक्के की भी यात्रा की थी। इसी समय बंगाली मुसलमानों पर इसका ऐसा सिक्का जम गया कि वे लोग इसे उपनिवेश बसाने के लिये रंगरूट देने लगे। १८२३ ई० में वह कन्धार और काबुल होकर यूसुफ़ज़ई लोगों में ४० चेलों के साथ आ पहुंचा। नौशेहरा की लड़ाई में रणजीत सिंह ने सीमा प्रान्त के पठानों को ऐसा हराया था कि उनमें अब तक मुर्दापन छाया हुआ था। जब इन्हीं सैयद महाशय ने जहाद के नारे बुलन्द किये तो उनके चेले बढ़ते बढ़ते ६०० हो गये। पेशावर के सरदारों ने भी उनका साथ दिया। १८२७ ई० में। सैय्यद साहब अटक को घेरने के लिये सिन्ध की ओर बढ़े। पर रणजीत सिंह पहले से ही तैय्यार थे। सुप्रसिद्ध सेनापति हरिसिंह सिन्ध के किनारे पर डटे हुये

थे। बुद्ध सिंह ने नदी को पार कर सैदू गांव में मोर्चा बन्दी करा ली थी। यहीं सैय्यद अहमद ने सिक्ख सेना को घेर लिया। सिक्खों को रसद की कमी पड़ने लगी। बुद्ध सिंह ने पेशावरी सरदारों को चेतावनी दी कि दूसरी फ़ौज महाराज रणजीत सिंह के साथ आ रही है। इसके बाद सिक्ख लोग समर नाद करते हुये मुसलमानी फौज पर टूट पड़े। मुसलमानों को भागना मुशकिल हो गया। सैय्यद साहब कुछ चेलों के साथ स्वात घाटी में जा छिपे। यहाँ कुछ लोग फिर उनके फुसलाने में आगये। १८२९ में उन्होंने पेशावर ले लिया। पर सैय्यद साहब के इने गिने दिन बाक़ी रह गये थे। सिक्खों ने उन पर चढ़ाई करने की ठान ली। इस बार सैय्यद साहब की पहले से भी अधिक गहरी हार हुई। गांव वाले भी उनसे तंग आ गये थे। उन्होंने भी सैय्यद साहब के चेलों पर धावा बोल दिया। इन बनावटी चेलों से चिढ़ कर सिक्खों ने उनको समूल नष्ट करने की सोची। कुछ गांव की ज़मीन हिन्दू ज़मीदारों को इसी शर्त पर मिली थी कि वे लगान के बदले हसन खेल के सौ सिर दिया करें। उधर पठान लोग चेलों से बिगड़ बैठे। एक दिन नमाज़ के वक्त सैय्यद साहब के चेलों को एक एक करके मार डाला। १६०० चेलों को लेकर उन्होंने सिन्ध नदी को पार किया और शेरसिंह पर छापा मारा इस लड़ाई में सैयद साहब भी मारे गये और १६०० में से केवल ३०० चेले बचे। उन्होंने भागकर सिताना में अपनी जान बचाई। यहीं इन फ़ाकेमस्त दिन्दुस्तानियों ने अपनी बस्ती बसाई और मन्डी नाम का क़िला बनाया।

आकोड़ा—स्वात और पंचकोरा नदियों के संगम से लेकर उत्तर की ओर ऐन नगर तक का प्रदेश स्वात का हिस्सा कहलाता है। स्वात घाटी ७० मील चौड़ी है। हिम नदियों और बरफ के पिघलने से अप्रैल में नदी उमंड आती है। उसको पार करना कठिन हो जाता है। पर सितम्बर से नदी फिर घटने लगती है। सरदी के दिनों में तो नदी में सब कहीं पांज हो

जाती है। पहाड़ की चोटियों पर सुन्दर घने बन मिलते हैं। सजल घाटियों में मेवा के पेड़ और खेत हैं। गरमी में भी यहां की जलवायु मध्यम रहती है। स्वात और बाजौर में प्राचीन हिन्दू और बौद्ध भग्नावशेष गड़े पड़े हैं। कई स्थानों पर पाली के शिला लेख मिले हैं।

उतमन खेल—इन का देश रूद, तंजकोरा, स्वात और अम्बहर नदियों के बीच में स्थित है। सीमा प्रान्त में स्वात नदी के दोनों ओर इनकी बस्तियां हैं। इनका देश सब कहीं अत्यन्त दुर्गम है। पहाड़ियों पर पगडंडियों को छोड़कर अच्छे मार्ग का अभाव है। गहरी और तेज़ स्वात नदी को पार करने के लिये सिर्फ दो चार जगह पर रस्से के पुल हैं। इन लोगों का बदन गठीला है पर इनकी स्वाधीनता का कारण केवल इनका दुर्गम प्रदेश है। अधिक उत्तर की ओर बाजौर दीर में प्राचीन गूजरों के वंशज यूसुफ़ज़ई लोग रहते हैं।

पर सीमाप्रान्त के उत्तरी भाग में सब से बड़ी रियासत चित्राल है। यह गिलगिट के पश्चिम में है। हिन्दूकुश पहाड़ इसे अफ़ग़ानिस्तान के काफ़िरस्तान प्रान्त से अलग करता है। यह देश ख़ास तौर से पहाड़ी है। यहां बहुत सी ऊँची बर्फीली पहाड़ियां और उजाड़ पहाड़ हैं। खेती के योग्य ज़मीन यहां बहुत ही कम है। घाटियाँ बहुत ही तंग और समुद्र तल से मील डेढ़ मील ऊँची हैं। जलवायु ऊँचाई के अनुसार भिन्न है। एक मील की ऊँचाई पर शीतकाल का तापक्रम १२ डिग्री फ़ारन हाइट रहता है। पर गरमी में १०० अंश हो जाता है। यहाँ भोजन की इतनी कमी है कि एक भी मोटा आदमी नज़र नहीं आता है। पेट भर भोजन खिला देना ही यहां सब से बड़ी रिशवत गिनी जाती है। जिस नदी से इस प्रदेश की सिंचाई होती है वह हिन्दूकुश के एक हिमागार से निकलती है। उत्तरी मार्ग में इस नदी को यारखून, मस्तूज या चित्राल नाम से पुकारते हैं। दक्षिणी भाग में यही नदी कुँआर नदी कहलाती है और जलालाबाद के पास काबुल नदी में मिल जाती है।

इसे पार करने के लिये कई रस्सी के पुल हैं। चित्राल मस्तूज, दरोश आदि स्थानों पर झूले के भी पुल हैं। पत्थरों और तेज धारा के कारण उथले स्थानों पर भी चित्राल नदी को पार करना सुगम नहीं है। चित्राल से हिन्दुस्तान को दो मार्ग हैं। एक मार्ग चित्राल से लोवारी दर्रे को पार करके दीर और स्वात होता हुआ मलाकन्द पहुँचता है। वहां से आगे बढ़ कर वह दरगाई में रेल से मिल गया है। दूसरा मार्ग चित्राल से आगे चलकर शन्दूर दर्रे को पार करता है। फिर वहाँ गिल-गिट की सड़क से काशमीर और झेलम घाटी होता हुआ रावलपिंडी में रेल से मिल जाता है। यहाँ से उत्तर और पश्चिम की ओर पहुँचने वाले दर्रे बहुत ही दुर्गम हैं। बेरोगिल दर्रा (१२४६० फ़ुट) यार खून घाटी को वाखान से मिलाता है। साल में ८ महीने इस पर कुँआर घाटी हो कर लद्दू जानवर जा सकते हैं। दीर दर्रा कुँआर घाठी को बदख़शां से मिलाता है। यह दर्रा जुलाई से सितम्बर तक खुला रहता है। इस पर होकर बहुत सा सामान आता जाता है। बहुत से दर्रे चित्राल और काफ़िरिस्तान के बीच में हैं।

दक्षिणी मैदान और उत्तरी मैदान के बीच में ४०० मील चौड़ा पहाड़ी देश है। इसमें २०० मील चित्राल में स्थित है। इस पहाड़ी देश की आबादी ७०००० है। पर ये चित्राली लोग बड़े लड़ाका हैं। ये सब के सब सुन्नी हैं। जब एक मेहतर (यहां का राजा मेहतर कहलाता है) गद्दी पर बैठता है तो वह खून की नदी बहाने पर ही सफल हो पाता है। भाई भाई को और पिता पुत्र को मार डालने में कुछ भी नहीं झिझकता है।

मोहमन्द—ये लोग दो भागों में बटे हुए हैं। कुज़ (मदानी) मोहमन्द पेशावर के मैदान में रहते हैं। बार (पहाड़ी) मोहमन्द प्राचीन गान्धार की पहाड़ियों पर बस गये जहाँ वे अब भी पाये जाते हैं। ये लोग काबुल, ग़ज़नी और निंगरहर के रास्ते से पश्चिमी अफ़ग़ानिस्तान

से आये। ये लोग ग़ोरियाखेल अफ़ग़ानों की नस्ल हैं। इनका देश काबुल नदी के कुछ दक्षिण से शुरू होकर उत्तर में बाजौर तक चला गया है। इसकी पूर्वी सीमा पेशावर है। पश्चिम में स्वात नदी है। मोहमन्द प्रदेश प्रायः सब कहीं डरावना और उजाड़ है। गरमी की ऋतु में पानी की कमी से सख़्त तकलीफ़ होती है। जहाँ कहीं ज़मीन में पानी पास ही मिलता है वहीं क़िलेनुमा गांव हैं। कहीं कहीं दूर से पानी लाया जाता है। मोहमन्द पहाड़ियों में फ़सलें शीत काल की वर्षा पर निर्भर रहती हैं। इसमें कमी होने से लोगों को अकाल का सामना करना पड़ता है। अच्छे दिनों में भी यहां बहुत लोगों की गुज़र नहीं हो सकती है। यही कारण है कि मोहमन्द लोग अपने पड़ोसियों (अफरीदियों और शिनवारियों) के मुक़ाबिले में कमज़ोर होते हैं। कुछ लोग अपने घरों को छोड़ कर पेशावर ज़िले की तरफ़ बढ़ने लगे। मोहमन्द प्रदेश में कुछ अनाज, घास, लकड़ी ही मुख्य उपज है। यहां से रस्सी चटाई शहद, लकड़ी का कोयला और ढोर बाहर भेजा जाता है। पर मोहमन्द प्रदेश में होकर चित्राल, कुआंर और लगमान के लट्ठे, बाजौर का लोहा, दीर और स्वात का मोम, घी, चमड़ा और चावल हिन्दुस्तान पहुँचता है। नमक, शक्कर, तम्बाकू, कपड़ा, काग़ज़ साबुन, चाय, सुई और दूसरा पक्का माल इधर आता है। गरमी के दिनों में लट्ठों या मशकों की सहायता से काबुल नदी में बड़ी तेज़ी से व्यापार होता है।

मोहमन्द प्रदेश पहाड़ी अवश्य है पर यहां के पहाड़ दुर्गम नहीं हैं। इसी से यहां कई सड़कें हैं। पेशावर से डक्का को जाने वाली सड़क सब से अधिक प्रसिद्ध है। एक सड़क शाहगई से शिलमान घाटी को जाती है। दूसरी सड़क मिचनी क़िले से काबुल नदी को पार करके शिलमान घाटी को जाती है। शब कदार से गन्दाब घाटी को भी अच्छी सड़क गई है।

अफ़रीदी—अफ़रीदियों का फ़िरका बहुत बड़ा है। ये लोग पेशावर ज़िले के दक्षिण पश्चिम में सफेद कोह के पूर्वी ढालों पर बसे हुये हैं। बाज़ार और बारा घाटियां इन्हीं के प्रदेश में हैं। इस प्रकार इनका प्रदेश पूर्व में ब्रिटिश राज्य, उत्तर में मोहमन्द प्रदेश, पश्चिम में शिनवारी प्रदेश और दक्षिण में ओरकज़ई और बङ्गश प्रदेशों से घिरा हुआ है।

अफ़रीदी प्रदेश बहुत ही वीरान और ठंडा है। वर्षा कम होने से खेती भी बहुत कम होती है। बरा घाटी खेती का मुख्य केन्द्र है। कुछ लोग लकड़ी काट कर और ईंधन बेच कर गुज़ारा करते हैं। पर अधिकांश लोग गाय, बैल, भेड़, बकरी, गधे, खच्चर और घोड़े पालते हैं। ये लोग कपड़ा और चटाई बुनने में बड़े होशियार होते हैं। मैदान और इलम गुदार आदि स्थानों में बन्दूकें भी बनाई जाती हैं। ये लोग लम्बे मज़बूत और गोरे होते हैं। ये लोग लड़ाई में बहादुर होते हैं। पर ये घर छोड़ना पसन्द नहीं करते। फिर भी इस समय प्रायः ५००० अफ़रीदी सिपाही ब्रिटिश फौज में भर्ती हो गये हैं। ये लोग धन के बड़े लोभी होते हैं, धन का लोभ देकर इनसे सब कुछ करवाया जा सकता है। इन्हें बचपन से ही चोरी करना सिखाया जाता है। इसलिये बड़े होने पर ये पक्के डाकू बन जाते हैं। ये लोग प्रायः किसी का विश्वास नहीं करते हैं पर अगर एक बार मीठी बातों से इनको विश्वास में कर लिया जावे तो ये बड़ी स्वामिभक्ति दिखलाते हैं। ये लोग कूकी, कमारी आदि आठ फ़िरकों में बटे हुये हैं।

ओरकज़ई—अफ़रीदियों के दक्षिण में ओरकज़ई लोग बसे हैं। इनका प्रदेश ६० मील लम्बा और २० मील चौड़ा है। कुछ ओरकज़ई लोग कोहाट जिले में भी बसे हुए हैं। इनका प्रदेश प्रायः ओरकज़ई टिराह कहलाता है। इसमें खानकी, मस्तूरा, खरमाना और बारा चार बड़ी घाटियाँ हैं। इन्हीं के देश में होकर अफ़रीदियों के देश को

ख़ैबर दर्रे के लिये काफ़िले की तैयारी

पेशावर और काबुल के बीच में ऊन, चमड़ा और रेशम आदि बहुत सा सामान मज़बूत ऊँटों और घोड़ों की पीठ पर लद कर आता है।

सीधा रास्ता है। इनके देश का एक दरवाज़ा अफ़ग़ानिस्तान की ओर खुला हुआ है। दूसरा दरवाज़ा ख़ानकी और मस्तूरा घाटियों का हिन्दुस्तान की ओर है।

इनका देश ऊंचा, नीचा, उजाड़ है। इनके फटे कपड़ों और अध-भरे पेट से इनके देश की ग़रीबी का पता लग जाता है। ये लोग खूंख्वार ज़रूर होते हैं पर ताक़त और हिम्मत में अफ्रीदियों का मुक़ाबिला नहीं कर सकते हैं। इन लोगों की प्रधान सम्पत्ति इनके ग़ल्ले हैं। कुछ लोग अगस्त, सितम्बर में मजरई (एक तरह का ताड़) काट कर पेशावर भेजते हैं। इससे रस्सी और टोकरियां बनाई जाती हैं। इनके प्रदेश में मस्तूरा घाटी का दृश्य सर्वोत्तम है। यहाँ शहतूत और आड़ू आदि का फल खूब होते हैं। खरमाना घाटी में पानी की कमी नहीं है और खेती काफी होती है।

बंगश—ये लोग अधिकतर मीरनज़ई और कुर्रम घाटियों मे बसे हुये हैं। कोहाट ज़िले का सबसे अधिक मनोहर भाग मीरनजई की ही घाटी है। जिस सफ़ेद कोह की सफेद चोटियां हर एक चीज़ के ऊपर उठी हुई हैं, उसी की तलहटी में मीरनजई की घाटी है इस देश में छोटे बड़े सभी तरह के पहाड़ हैं। सपाट ढालों के नीचे बहने वाली नदियाँ एक समय में धारा की तेजी से बड़ी भयानक होजाती हैं। दूसरे समय में यही नदियां ऐसी सूख जाती हैं कि उनकी तली को खोदने पर ज़रा सा पानी मिलता है और बड़ी मुश्किल से अनाज और फलों के बग़ीचों की सिंचाई हो पाती है। ऊपरी पहाड़ियों के ढालों पर छोटी गायें और मोटी दुम वाली भेड़ें चरती हैं। मीरनजई घाटी प्रायः ४० मील लम्बी है। इसकी चौडाई २ मील से लेकर ७ मील तक है।

कुर्रम घाटी में सब कहीं अनाज के खेत और फलों के बगीचे मिलते हैं। अधिक ऊँचाई पर देवदारु के पेड़ हैं। कुर्रम घाटी ६० मील लम्बी और प्रायः १० मील चौड़ी है। मीरनज़ई और कुर्रम घाटियां

अपने मार्गों के लिये प्रसिद्ध हैं। कोहाट से थाल तक रेलवे लाइन है। थाल से पाराचिनार तक अच्छी सड़क है। पाराचिनार से पेवार कोतल केवल १५ मील पश्चिम में है। इसकी ऊँचाई ६२०० फुट है। इसके बाद शुतुर्गर्दन या ऊंट की गर्दन का दर्रा है जो ११६०० फुट ऊंचा है। इसको पार करने पर लोगर घाटी काबुल को चली गई है। यह रास्ता कुछ समय के लिये खुला रहता है।

बङ्गश लोगों में अधिकतर अरबी खून है। ये लोग शिया हैं। पश्चिमी बंगश बड़ी बड़ी दाढ़ी रखते हैं। पर पूर्वी बंगश अपनी दाढ़ी कटाये रखते हैं। दोनों ही खेती का काम करते हैं। कुछ लोग व्यापारी हैं। ये लोग अतिथि का बड़ा सत्कार करते हैं।

वज़ीरी—वज़ीरिस्तान का पहाड़ी प्रदेश उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रान्त के दक्षिणी भाग से मिला हुआ है और १४० मील तक सीमा बनाता है। डेरा इस्माईल ख़ां के पश्चिम में गोमल दर्रे से कोहाट ज़िले तक वज़ीरिस्तान का प्रदेश सीमा प्रान्त से मिला हुआ है। वज़ीरिस्तान के पश्चिम और उत्तर में अफ़ग़ानिस्तान है। इसके उत्तर पूर्व और पूर्व में सीमा प्रान्त के कुर्रम, कोहाट, बन्नू और डेरा इस्माईलख़ां के ज़िले हैं। इसके दक्षिण में बलोचिस्तान है।

वज़ीरिस्तान का क्षेत्रफल प्रायः ५००० वर्ग मील है। इसका आकार एक समानान्तर चतुर्भुज के समान है। प्रदेश में कई नदियों की घाटियां हैं जो पश्चिम से पूर्व को बहती हैं और अपने मार्ग में संकुचित मैदान बनाती हैं इसके बीच में छोटे बड़े सभी तरह के पहाड़ों की गांठ है जहां से नदियों को पानी मिलता है। इसके दक्षिण में एक बड़ा पठार है।

वज़ीरिस्तान की दो मुख्य नदियां टोची और गोमल हैं। टोची नदी बन्नू ज़िले से अफ़ग़ानिस्तान के बिरमल ज़िले के लिये रास्ता बनाती है। गोमल नदी हिन्दुस्तान के देराजात और ज़ोब ज़िलों को मिलाती है और हिन्दुस्तान और अफगानिस्तान के बीच में एक

प्रधान मार्ग बनाती है। पौविन्दा व्यापारी इसी रास्ते से आया जाया करते हैं।

वजीरिस्तान का एक बड़ा भाग उजाड़ है। तलहटी में औसत से साल भर में केवल १८ इञ्च पानी बरसता है। ऊंचे ढालों पर अवश्य ५० इञ्च पानी बरस जाता है। यहां वर्षा की दो ऋतु हैं। आधी वर्षा १५ दिसम्बर से १५ मई तक होती है। शेष आधी वर्षा १ जुलाई से १५ सितम्बर तक होती है। इसलिये खेती बहुत कम होती है। खेती के लिये कुछ कुछ अच्छी धरती कछ या कछार भागों में मिलती है। अधिकांश लोग मारे मारे फिरते हैं। उनके बसे हुये गांव बहुत ही कम हैं।

वजीरिस्तान के प्रधान लोग वजीरी और मसूद हैं। इन दोनों फिरकों में सदियों से लड़ाई रही है। मसूद लोगों की आबादी सारे प्रदेश की आबादी की $\frac{1}{3}$ है। मसूद लोग बीच के अत्यन्त पहाड़ी भाग में रहते हैं। उनके चारों ओर वज़ीरी लोग बसे हुये हैं। दोनों ही फिरके बड़े बलवान हैं। देश उजाड़ होने से ये लोग अक्सर अपने पड़ोसियों पर हमला करते आये हैं।

यही दशा सीमा प्रान्त के प्रायः सभी फ़िरकों की है। वीर सिक्खों का इन पर निस्संदेह काफ़ी रोब जम गया था। १८४७ ई० से सीमा प्रान्त की बागडोर अंग्रेज़ों के हाथ में आ गई। इस वर्ष से आज तक शायद ही कोई साल ऐसा बीता है जिसमें दो चार फ़िरक़ों ने निःशस्त्र निवासियों पर हमला न किया हो। उनको दबाने के लिये प्रायः हरसाल फ़ौजें भेजी गई हैं। इस काम में हरसाल सैकड़ों सिपाही घायल हुये और मरे हैं। इनके हमलों से स्थायी छुटकारा पाने के लिये दोही उपाय हैं। १—इनके बीच में कला कौशल और रोज़गार फैलाने का पूरा पूरा पयत्न किया जावे या २—इनके पड़ौस में बसने वाली ब्रिटिश प्रजा को भी शस्त्र देदिये जावें।

किन किन फ़िरक़ों पर कौन कौन अफसर शासन करता है। यह नीचे दखिलाया गया है :—

हज़ारा का डिप्टी कमीशनर।	सिन्ध के इस किनारे वाले स्वाती अलाई, टिकारी, देशी, नन्दिहार और थाकोट। **यूसुफ़-जई**—सिन्ध के उस पार बसने वाले उतमानज़ई, मद खेल, अमाज़ई, हसनज़ई अकाजई और इस पार वाले चगरजई।
दीर, स्वात, और चित्राल का पोलिटिकल एजेंट। पेशावर का डिप्टी कमीशनर।	**यूसुफ़जई—**सीमा प्रान्त के अकोजई समरानीज़ई। बाजौरी। चित्राली। **यूसुफ़जई**–सिन्ध के उस पार वाले चगरज़ई, खूदूखेल, चमला वाला। समबैज़ई सिन्ध के इस पार वाले उतमानज़ई। उतमान खेल। मोहमन्द। गादून बुनेखाल। **अफ़्रीदो**—जनकोर-और कन्दार के आदमखेल।
खैबर का पोलिटिकल एजेन्ट।	आदमखेल के सिवा समस्त अफ्रीदी। मुल्लागोरी। मोहमन्द-शिल्मानी। शिनवारी।
कोहाट का डिप्टी कमीशनर।	**मसूजई**, को छोड़ कर सारे ओरकजई अफ्रीदी-आदमखेल। बंगश।
कुर्रम का पोलिटिकल एजेन्ट।	**जैमुख्त**। तूरी **ओरकजई—** मसूजई चमकन्नी।

बन्नू का डिप्टी कमीशनर।
टोची का पोलिटिकल एजेन्ट।
बाना का पोलिटिकल एजेन्ट।
डेरा इस्माइल ख़ां का डिप्टी कमीशनर।

बन्नूची।
दवारी। वजीरी—दरवेशखेल
बजीरी—महमूद।
बातन्नी।

———

बलोचिस्तान

यह देश फारस, अफगानिस्तान, सिन्ध और अरब सागर से घिरा हुआ है। मध्यवर्ती बलोचिस्तान में पहाड़ियाँ उत्तर से दक्षिण को गई हैं। मुंज अन्तरीप के निकट समुद्र के पास वे बिल्कुल छिप गई हैं। यह पहाड़ियाँ सुलेमान पर्वत की ही शाखाएं हैं जो इस प्रदेश में रीढ़ के समान स्थित हैं। पश्चिम बलोचिस्तान में पहाड़ियाँ बहुत हैं। मध्य श्रेणी से निकलने के बाद वे समुद्र तट के सामानान्तर चलती हैं। अन्त में वे यातो समुद्र में लुप्त हो जाती हैं या दक्षिण फ़ारस के मैदान में नष्ट हो जाती हैं अथवा फारिस के पहाड़ों से मिल जाती हैं। पूर्वी बलोचिस्तान में (जो हरनाई घाटी के पूर्व में स्थित है) पहाड़ियों की गति पश्चिम पूर्व की है। अन्त में वे कुछ उत्तर की ओर मुड़कर सुलेमान की प्रधान श्रेणी से मिल गई हैं।

इस प्रदेश को हम चार भागों में बांट सकते हैं—

(१) उत्तर पूर्व में विशाल कच्छी या कछारी मैदान है। यहां वर्षा का प्रायः अभाव है और साल में ८ महीने खूब गरमी पड़ती है। पर जहां तहां पहाड़ी धाराओं के पास यह प्रदेश अत्यन्त उपजाऊ है। समीपवर्ती पहाड़ी फिरकों की बस्तियां भी यही हैं। कच्छ गन्दाव पुरानी राजधानी थी। सरदी के दिनों में अब भी ख़ान साहब यहीं रहते हैं। बाग़ यहां का दूसरा क़स्बा है।

(२) इस विशाल कच्छी मैदान के पश्चिम में पहाड़ी प्रदेश है। इसी पठार में बरूही फ़िरके रहते हैं। क्वेटा के उत्तर पूर्व में ज़रग़न नाम की सर्वोच्च चोटी समुद्र तल से १२००० फुट ऊँची है। तकतू,

मुरदार और चिहिलतान चोटियां भी १०००० फुट ऊँची हैं। मध्यवर्ती श्रेणी चार जिलों में बटी हुई है। (१) सरवान पठार में मस्तुंग (६००० फुट), शाल या क्वेटा†(५६०० फुट) शामिल है। (२) कलात की ऊँची घाटी (६८०० फुट) पर खान का अधिकार है। (३) झलवान या निचला पठार कम आबाद है। पर इसमें सोहराब (५५०० फुट) जहरी, बाग़वान (४४०० फुट), खोजदार आदि घाटियां बड़ी उपजाऊ हैं। (४) लूस या लूस बेला समुद्र तट पर निचला मैदान है।

बरूही पठार की पर्वत श्रेणियां जगह जगह पर टूटी हुई हैं। इन्हीं में होकर कुछ पहाड़ी धाराओं ने अपना मार्ग निकाला। इस प्रकार बरूही पठार इन दर्रों के जरिये से कछारी मैदान से जुड़ा हुआ है। उत्तर में बोलन दर्रा ६० मील लम्बा है और क्वेटा और पिशीन के लिये रास्ता बनाता है। दक्षिण में मूला दर्रा ८० मील लम्बा है और कलात और ख़ारान से लिये रास्ता खोलता है। दोनों रास्ते तंग पथरीली घाटियों में स्थित हैं पर अब उन में तोप गाड़ियों के चलने योग्य सड़क बना दी गई हैं।

(३) बरूही पठार के पश्चिम में बलोच पठार है। समुद्र तट से साठ सत्तर मील तक ज़मीन धीरे धीरे ऊँची होती जाती है। इसकी उँचाई प्रायः ५०० फुट है। पर अधिक आगे बढ़ने पर एक दम डेढ़ दो हज़ार फुट की चढ़ाई है। यही पहाड़ियां हलमन्द के प्रवाह-प्रदेश और अरब सागर के बीच में जल विभाजक बनाती हैं। बलोच पठार के पहाड़ बरूही पठार के पहाड़ों से कम ऊँचे हैं। बलोच पठार का सब से ऊँचा पहाड़ सिया नह कोह है जो केवल ७००० फुट ऊँचा है। इसी प्रदेश में समुद्र तट और प्रथम पर्वत श्रेणी के बीच में मकरान स्थित है। मकरान शब्द माहेखुरान शब्द से बना है जिसका अर्थ

†क्वेटा का पुराना नाम शाल कोटा है।

अच्छी ओर है। यहां ऐसे भग्नावशेष मिलते हैं जो इस के शानदार भूत काल की सूचना देते हैं। पर इस समय यह खुश्क उजाड़ और रोग ग्रस्त प्रदेश है। भीतर की ओर कई लम्बी और तंग पहाड़ियां हैं जिनके बीच बीच में विस्तृत घाटियां हैं। पर ये घाटियां अधिकतर रेतीली और उजाड़ हैं। केवल पहली घाटी कुछ हरी भरी है जहां छुहारों के बग़ीचे, गांव और क़िले हैं। सिन्ध और फ़ारिस के बीच में यह एक प्राकृतिक मार्ग है। केज यहां की राजधानी है। कुछ और आगे मशखेल और पंजगूर नदियों की घाटियां भी उपजाऊ हैं। अधिक पूर्व में कोलवा और मुश्क ज़िले हैं जो घरेलू झगड़ों के कारण उजाड़ पड़े हुए हैं।

(४) हल मन्द घाटी से २०० मील दक्षिण में दूसरी पर्वत श्रेणी तक बलोचिस्तान का रेगिस्तान फैला हुआ है। इस रेगिस्तान का ढाल उत्तर पश्चिम की ओर है। पर इसमें हामून नाम के कई विशाल आखात हैं जिसमें समीपवर्ती पहाड़ी धाराओं का पानी समा जाता है। उत्तर पश्चिम में हामूने जिरह में शेला नदी का पानी आता है। बीच में मशखेल नदी अपना पानी हामूने मशखेल में गिराती है। उत्तरी पूर्व में हामून लोरा में पिशीन का पानी आता है। इन आखातों के पास खेती के योग्य बहुत ज़मीन है। क्योंकि पानी धरातल से दूर नहीं है। अगर ख़ारानी नहरूई और सरहद्दी हमलों से इसकी रक्षा हो सके तो यह भाग बड़ी आसानी से बसाया जा सकता है। रेगिस्तान की दाहिनी ओर ख़ारान प्रदेश है जहां बेदो नदी से सिंचाई होती है। यहीं पर फ़ारिस, हिन्दुस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के व्यापार का मेल होता है। यह प्रदेश नौशेरवानी सरदार के अधीनथा जो कलात के ख़ान का कट्टर दुश्मन था। यह प्रदेश प्रायः १७० मील लम्बा और ५० मील चौड़ा है। इसका उत्तरी पूर्वी भाग खेती के योग्य है। शेष रेतीला उजाड़ है।

हामूने लोरा के उत्तर-पूर्व में चाग़ई प्रदेश है। यहाँ ऊँट, बक-

एक साधारण अफ़ग़ानी

रियों और गधों के लिए कटीली झाड़ियाँ और घास बहुत हैं। १८८८ ई० में इसे काबुल के अमीर ने अपने राज्य में मिला लिया था। फिर पीछे से यह भाग कलात के खान को लौटा दिया गया।

अधिक पूर्व में सखान पठार के सिरे पर नुश्की है। यहाँ चरवाहों की कुछ बस्तियाँ हैं।

इस प्रकार बलोचिस्तान खुश्क पहाड़ों और उजाड़ घाटियों का प्रदेश है। कुछ लोग कहते हैं कि ईश्वर ने जब दुनियां के अच्छे भाग बना दिये तो बची हुई रद्दी से बलोचिस्तान को बनाया। यहाँ पानी के बहाव के मार्ग में ही खेती होती है। ऊपरी भागों पर ऊँट, गधे और बकरे चरते हैं। अधिकांश प्रदेश बिल्कुल उजाड़ है। बलोचिस्तान में समुद्र तट ६०० मील लम्बा है पर बन्दर गाह एक भी अच्छा नहीं है। ग्वाडर, मार और पासनी नाम मात्र के बन्दर गाह हैं। इस तट में सदा पानी गिराने वाली कोई नदी भी नहीं है। ऊँचे पठार से निकलने वाली नदियां बोलन, नाड़ी और मूला हैं। मैदान में पहुंचते पहुँचते ये सब सिंचाई के नालों में समाप्त हो जाती हैं। पर ये नदियाँ वृक्ष रहित उजाड़ प्रदेश में नष्ट होने पर कुछ हरियाली पैदा कर देती हैं। पूर्वी मकरान की लोरा पिशीन और मुश्क नदियाँ तथा पश्चिमी मकरान की मशखेल नदी रेगिस्तान के दलदलों में लुप्त हो जाती हैं। दश्त, हिंगोल पुराली, और हब आदि नदियाँ समुद्र की ओर जाती है पर साल के अधिकांश महीनों में सूखी पड़ी रहती हैं। पहाड़ियों पर वर्षा होने पर दृश्य बदल जाता है। घाटियां उछलती हुई धाराओं से भर जाती हैं। अगर वर्षा कुछ दिनों तक और जारी रहे तो भयानक बाढ़ आती है। बाढ़ के बाद हैज़ा और बुखार फैलता है। पर वर्षा का प्रायः अभाव रहता है। जो कुछ वर्षा होती है उसके आने का समय भी निश्चित नहीं है। ग्रीष्म में विकराल गरमी पड़ती है। लोगों में इस तरह की कहावतें प्रचलित हैं:—"दादर (एक नगर का नाम

है) के होने पर ईश्वर ने नरक को क्यों बनाया। जो लोग गरमी के दिनों में सिबी से नरक को जावें उन्हें अपने साथ गरम कम्बल ले जाना चाहिये।" पर शीतकाल में ऊँचे पठार पर कड़ाके का जाड़ा पड़ता है।

यहाँ के जङ्गली पेड़ बहुत छोटे और मुरझाये हुये रहते हैं। जंगली जैतून, पिश्ता, रामबांस मुख्य पेड़ हैं। सिबी के पास कत्तन में मिट्टी के तेल के कुछ चश्मे मिले हैं। सेकान में सीसा और लूसबेला में ताम्बा मिलने के निशान पाये जाते हैं। हरनाई घाटी में घटिया गन्धक और सुरमा मिलता है। जहाँ कहीं पहाड़ी धाराओं या कारेज (पहाड़ी ढालों से जमीन के भीतर ही भीतर आने वाली नालियों) से सिंचाई सम्भव है वहां खेती होती है। कलात, क्वेठा, मस्तुङ्ग, पिशीन आदि स्थानों में स्वादिष्ट फल होते हैं। छोटी घाटियों में कच्चे घर और खेत अकसर मिलते हैं। दश्त और पंजगूर में अपनी बाढ़ के साथ नदियों ने इतनी उपजाऊ कांप बिछा दी है कि वहां अनाज कपास, अंगूर और छुहारे बहुतायत से उगते हैं। फारिस की सीमा पर केज, तुम्प और मान्द नगर छुहारों के बगीचों के बीच में बसे हुए हैं।

बलोचिस्तान का दृश्य दिन में बड़ा बुरा रहता है पर मकरान का सूर्योदय और सूर्यास्त बड़ा सुन्दर गिना जाता है। कुछ चोटियों पर जून तक बरफ रहती है। अधिकतर पहाड़ नंगे और उजाड़ हैं। कुछ ढालों पर हरियाली दिखाई देती है। क्वेटा और पिशीन में ऋतु ऋतु के साथ दृश्य बदलता है। शीत काल की वर्षा के बाद बसन्त में सुन्दर सुगन्धित फूल खिल जाते हैं। लहलहाती हुई फसल जून में कटती है। जुलाई अगस्त और सितम्बर में धूल भरी हुई गरम आंधियां चलती हैं। अक्टूबर में रात को पाला पड़ने लगता है। आकाश में धूल का नाम नहीं रहता। शीत काल में पत्तियां झड़ जाती हैं और जहां तहां बरफ पड़ने लगती है।

यहां की आबादी लगभग ५ लाख है। बलोच लोग बद्दू हैं और फारसी की ही एक उपभाषा बोलते हैं। इसमें पंजाबी और सिन्धी के शब्द मिले रहते हैं। लिपिबद्ध भाषा का अभाव है। इसी से दूर दूर रहने वाले फिरके एक दूसरे की बोली नहीं समझ पाते हैं। फिरके बहुत हैं। बोली दास लोग अपने को अरब लोगों की सन्तान बताते हैं। पंज गूर के गिचकी लोग एक सिक्ख उपनिवेश से उत्पन्न हुए हैं। लूस बेला के लुमरी लोग सोमर राजपूत हैं। खारान रेगिस्तान के नौशेरवानी लोग फारसी लोगों की सन्तान हैं।

मध्यवर्ती पठार के प्रधान निवासी बरूही हैं। ये लोग बलोचियों से भिन्न हैं। बरूही भाषा दक्षिण भारत की द्रावड़ी भाषा से मिलती जुलती है। यहाँ के अधिकतर निवासी मुसलमान हैं। हिन्दुओं की संख्या कम है। हिन्दू लोग प्रायः शहरों और बन्दरगाहों में बसे हैं लेन देन व्यापार के काम में लगे हुए हैं। यहां के लोग अतिथि सत्कार के लिये मशहूर हैं, उनमें अफगानिस्तान के पठानों का सा धार्मिक कट्टरपन भी नहीं है। बलोच लोग क़द में अफगानियों से कुछ छोटे होते हैं। वे लम्बे घूंगरदार बाल रखते हैं। वे अक्सर चाकू, ढाल और तलवार बांधते हैं। उनके सूती कपड़े बहुत ढीले होते हैं। साफा बहुत बड़ा होता है। चूंकि अधिकतर ये लोग चलते फिरते हैं इस लिये इनकी स्त्रियों में परदा नहीं होता है। यहां का व्यापार अधिक नहीं है। ऊन, चमड़ा, सूखे फल, छुहारे दिसावर बाहर भेजे जाते हैं। यहां की पहाड़ी ऊन बड़ी अच्छी होती है। इसका व्यापार बहुत कुछ बढ़ाया जा सकता है।

———